भारतेन्दुकालीन व्यंग-परम्परा

(व्यंग्य-परिहास युक्त निबंधों का संकलन)

सम्पादक—

ब्रजेन्द्र नाथ पाण्डेय, एम० ए०

प्राप्तिस्थान—

बम्बई बुक डिपो,

१६५।१, हरीसन रोड,

कलकत्ता—७

प्रकाशक—

कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स

ज्ञानवापी, वाराणसी

वितरक—

बिहार ग्रंथ कुटीर

खजांची रोड पटना—४

प्रथम संस्करण

बुद्ध जयन्ती

२०१३

मूल्य

ढाई रुपये

मुद्रक—

गौरीशंकर प्रेस,

वाराणसी

यह पुस्तक

श्री पाडेय हिन्दी साहित्य के एक उत्साही और सतर्क अध्येयता हैं। इनमें अच्छी सर्जनात्मक प्रतिभा भी है। प्रस्तुत संकलन मे इन्होंने बड़े मनोयोगं और विवेक से भारतेन्दु युग की कतिपय उच्च कोटि की व्यंग्य विनोदमयी प्रतिनिधि रचनाओ को इतने थोड़े स्थान मे एकत्र कर दिया है। पाठकों के हाथ में हम प्रसन्नता पूर्वक सुयोग्य सम्पादक द्वारा सग्रहीत और संपादित प्रस्तुत रचना दे रहे है। हमें पूर्ण आशा है कि उनका इनसे पर्याप्त मनोरंजन होगा। उच्च कोटि की हास्य विनोद-पूर्ण रचनाओं से परिचय होगा और भारतेन्दु युग के साहित्य की जिन्दादिली से उनका साक्षात सम्पर्क स्थापित होगा। उल्लेख्य है कि प्रस्तुत सकलन की सभी रचनाएं परिश्रम पूर्वक भारतेन्दु युगीन पत्र पत्रिकाओ से चुनी गई हैं और सकलन के रूप में पहले पहल हिन्दी जगत के सम्मुख रक्खी जा रही हैं।

क्रम-सूची

—+—

दो शब्द

जिस काल में भारतेंदु श्रीहरिश्चंद्र तथा उनके मंडल ने हिंदी साहित्य-क्षेत्र में पदार्पण किया था वह अनेक दृष्टि से विचित्रता लिए हुए था। हिंदी साहित्य का रीति काल समाप्त हो चुका था और कुछ कविगण पुरानी परिपाटी पर कविता करते हुए परंपरा का अवश्य निर्वाह कर रहे थे पर वास्तव मे कुछ काल तक यह परंपरा खंडित ही सी रही। पद्य का तो यह हाल था और गद्य का एक प्रकार श्री गणेश भी इसी काल में होना था। राजनैतिक क्षेत्र मे भी यह काल एक महान् विप्लव के अनंतर आरंभ होता था, जब कि एक विदेशी शक्ति उस विप्लव का कठोर दमन कर अपने प्रबल प्रताप से इस देश में तप रही थी। साथ ही देश मे नई विचारधाराओं के कारण सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्रों मे भी उथल-पुथल मच रही थी। अतः ऐसे काल तथा ऐसी परिस्थिति मे कठोर तथा अप्रिय सत्य को गंभीरता के साथ कह डालना कुछ भयावह था। कहा भी है—सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।

ऐसा होते हुए भी यह एक तथ्य है कि कुछ बाते जो सीधे-सादे कह देने से सुनने वालों को अप्रिय तथा कटु ज्ञात होती है वही बातें हँसी विनोद तथा व्यंग्य मे कह देने से उतनी नही कटु प्रतीत होती और सुननेवाला उसे

हँसकर उसकी छिपी कटुता को पचा जाता है। अवश्य ही इसका प्रभाव पड़ता है और अच्छा पड़ता है क्योंकि इसमें तर्क-वितर्क या तू-तू मैं-मैं को स्थान नहीं। यही कारण है कि उस काल के साहित्य में देशभक्ति तथा राजभक्ति, आस्तिकता तथा नास्तिकता, प्राचीनता तथा नवीनता सभी साथ-साथ मिले हुए चलते रहे और सभी पर अनेक प्रकार के हास परिहास व्यंग-विनोद आदि द्वारा आक्षेप किए गए हैं। वह समय बायकाट, विधान भंग आदि के लिए अनुपयुक्त था पर उनके लिए परिस्थिति बनाने का उसी समय से प्रयत्न होने लगा था।

मानव-प्रकृति में भी कुछ ऐसी विचित्रता है कि जिस दृश्य को देखकर या बात को सुनकर एक कोटि के मनुष्य खिलखिलाकर हँस पड़ते हैं उसी को देखकर या सुनकर दूसरी कोटि के मनुष्यों के दंतदर्शन भी दुर्लभ होते हैं। हिंदी साहित्य में इस काल के पहिले बहुत ही कम हास-परिहास, व्यंग-विनोद आदि का साहित्य प्राप्त है और जो है वह किसी विशेष कारण से बन पाया है। जैसे कविजी को पुरस्कार कम मिलने, आदर न होने या ऐसे ही कारण से रोष या क्षोभ हुआ तो उन्होंने दो एक कवित्त सवैये में भँड़ौआ बनाकर उसे प्रगट कर दिया तथा ऐसे ही किसी कारण से कुछ पद हास-परिहास के बना दिए। परन्तु भारतेंदु काल के प्रमुख साहित्यकारों में जिस आनंद, उल्लास, विनोद तथा परिहास से पूर्ण सजीवता (जिंदादिली) के दर्शन हुए थे, वह 'न भूतो न भविष्यति'। भारतेंदु युग के अनंतर अब तक कई युग आए पर किसी में वह सजीव उल्लासमयी वाणी नहीं सुनाई पड़ी प्रत्युत् उस के स्थान पर वेदना, कसक आदि ही की धूम रही।

एक बात और ध्यान रखने की है कि भारतेंदु युग के प्रायः सभी सुकवि तथा सुलेखक गण कुछ न कुछ उर्दू फारसी के ज्ञाता थे और उसकी जिंदादिली का प्रभाव भी सभी पर था। आनंद, उल्लास या मनहूसियत

ये सभी छूत के रोग के समान है और इसका तुरंत एक दूसरे पर प्रभाव पड़ जाता है। इस मंडल के प्रधान भारतेंदु श्रीहरिश्चंद्र स्वयं ही प्रकृत्या बड़े विनोद प्रिय थे, जैसा उनकी जीवनी से ज्ञात होता है। इनके दरबार में हर प्रकार के लोग आते जाते थे, राग-रंग मचता था और हँसी मजाक के फुहारे छूटते रहते थे। इनके मंडल के अन्य प्रमुख सज्जनो की भी प्रायः ऐसी ही प्रकृति थी और यही कारण है कि इस काल के प्रायः बहुत से लेखकों तथा कवियों ने शिष्ट परिहास की रचनाएँ की है, जिनमे लेख, निबंध, स्फुट कविता सभी हैं।

भारतेंदु-युग के पहिले सस्कृत साहित्य तक मे हास-परिहास के विदूषक-पेटू ब्राह्मण मथुरिया चौबे आलम्बन मिलते है पर इस काल के इन साहित्य-कारो के लिए यह आलंबन नहीं के समान था और इनके हृदयो के अनेक उल्लासपूर्ण भावों को व्यक्त करने के लिए नए नए अनेक आलंबनों की आवश्यकता पड़ी तथा वे आविर्भूत भी हो गए। इसे यों भी कह सकते है कि जिस बिषय को भी इन साहित्य-कारों ने अपने हार्दिक उल्लास से अनुप्राणित कर दिया वे ही हास्य रस के आलम्बन बन बैठे। नामधारी देशभक्त, पुरानी लकीर के फकीर, चापलूसी प्रिय मूर्ख रईस, अदालती सभी मनुष्य, नवीनता के दास आदि कितने ही ऐसे आलंबन स्वतः बनते चले गए।

उस काल की साहित्य शैली की नीति के संबंध में श्रीबालकृष्ण भट्ट इस प्रकार लिखते है कि—

'रसिक पढ़नेवाले हास्य रस पर अधिक टूटते हैं। सच पूछो तो हास्य ही लेख का जीवन है। लेख पढ़ कुंद की कली समान दाँत न खिल उठे तो वह लेख ही क्या— हमारे सस्कृतसाहित्य मे तो वक्रोक्ति ही काव्य का जीवन माना गया है 'वक्रोक्तिः काव्यजीवनम्'। हास्य में अवश्यमेव कुछ न कुछ वक्रोक्ति रहती है।'

इस प्रकार इस भारतेंदु-युग मे ऐसी रचनाएँ अधिक हुई जिन पर हास्य, व्यंग्य-विनोद का अच्छी प्रकार पुट दिया हुआ है पर ऐसी रचनाओं का अब तक कोई अच्छा संग्रह नही निकला है। श्री ब्रजेन्द्र नाथ पाण्डेय ने यह संग्रह संकलित कर एक अभाव की पूर्ति कर दी है और इसके पारायण से पाठकगण देखेंगे कि हास्य रस मे भी कितनी भावोन्मेष करने की शक्ति है।

ब्रजरत्न दास

प्राक्कथन

मानव मन दुःख में रो उठता है और सुख में प्रसन्न हो कर नाच उठता है। हृदय में गुदगुदी पैदा होने लगती है और वह हँसने लगता है कभी मन्द मन्द मुस्काने लगता है और कभी अट्टहास करता है। अतः वातावरण और परिस्थितियों से प्रभावित होकर वह हँसता और रोता है।

अन्य जीव रो सकते है प्रसन्नता प्रकट कर सकते हैं परन्तु मनुष्य भीषण अट्टहास करता है, हँसते हँसते लोट पोट हो जाता है और निराशा सन्ताप से क्षणभर के लिए छुटकारा पा जाता है! उसके शारीरिक और मानसिक क्रियाओं मे परिवर्तन हो जाता है!

देवजी ने "शब्द-रसायन" मे हर्ष का लक्षण इस प्रकार लिखा है।

> पिय दरसन स्रवन आदिते, होय जो हिये प्रसाद।
> वेग, स्वास, आँसू, प्रलय, हर्ष लखै निर्वाद॥

गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज दशरथ के हर्ष का वर्णन इस प्रकार करते हैं:—

> दशरथ पुत्र जन्म सुनि काना। मानहु ब्रह्मानन्द समाना॥
> परम प्रेम मन पुलक सरीरा। चाहत उठत करत मति धीरा॥

यह प्रत्येक व्यक्ति का अनुभव है कि अनुकूल मनःस्थिति में जो बात शोभनीय प्रतीत होती है वही प्रतिकूल मनःस्थिति में उतना महत्व नहीं

प्राप्त करती। महाराज दशरथ का हर्ष पुत्र रत्न प्राप्ति से ब्रह्मानन्द के सदृष्य हो गया और शरीर पुलकित हो उठा। नारद मोह और अयोध्या के नागरिको का हास्य तुलसी ने शिष्टता तथा मयार्दा पूर्ण दिखलाया है शिव जी से विष्णु हँसी करते है परन्तु वह भी निराले प्रकार की मर्यादापूर्ण हास्य का उदाहरण है।

यह हमें ज्ञात है कि जीवन मे हास्य की बड़ी उपयोगिता है चाहे भौतिक हो या मनोवैज्ञानिक समाज उसे चाहता है। हास्योत्पत्ति शिक्षित और अशिक्षित कर सकते है, गोद का बच्चा मूछे खीचकर पिता को हँसा देता है. मनुष्य स्वाँग कर दूसरे को हँसाता है, बन्दर और कुत्ता उछल कूद कर स्वामी को आनन्द देते है। मनुष्य की चिन्ताये दूर भाग जाती है और वह खिल-खिला उठता है। उल्लासयुक्त मुद्रा सौन्दर्य का एक मुख्य भूषण है जिसके पास यह भूषण नहीं है वह रोनी सूरत बनाये मुँह लटकाये जवानी मे ही वृद्ध प्रतीत होता है, उसे मसखरापन पसन्द नहीं आता है। निरर्थक हँसना भी बुद्धिमानी के लक्षण नहीं, समय समय पर सब शोभा देता है। मैं कुछ व्यक्तियो को देखता हूँ जो बात बात में हँसते हँसते पेट पकड़ने लगते है कुछ स्मित हास भी करते है। परिहास एक सामाजिक गुण है, इसका विस्तार प्राणी प्राणी से होता है। मन के भार को हलका करने की एक अचूक दवा है, साहित्य में उसका एक स्थान है, नव दस सवारो में से एक सवार यह भी है जो सबका मन मुग्ध किये रहता है। साहित्य के किसी भी अंग में हम इसे देख सकते है। संस्कृति साहित्य के अतिरिक्त हिन्दी साहित्य के कृतिकारो ने अनेक हास्य पूर्ण दृश्य उपस्थित किये है। एक कविता सेवक कवि की लीजियेः—

चतुरानन बाप पँचानन आप षड़ानन बेटो गजानन भाई।
सेवक एक दसानन सो सहसानन अंग रहै लपटाई॥
गोद में लीन्हें बरानन को अरु सीस सितानन है सुखदाई।
काहे न होय सदा सुखिया बरदा पर एक सबै बरदाई॥

हास-परिहास के साथ साथ चोज और व्यंग भी हमारे सम[illegible]आते है चोज थोड़े ही शब्द जालो के साथ अत्यधिक आनन्द देता है। मेधा और नवीन कपोल कल्पना ही उसका कारण है, जिससे बुद्धि अचानक चत्मकृत हो जाती है, हृदय खिल उठता है और हँसी का वेग फूट पड़ता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी की रचना "अंधेर नगरी" में व्यंग पूर्ण हास्य "चूरन का लटका" में देखियेः—

चूरन जमके सब जो खावैं। दूनी रूशवत तुरत पचावै॥
चूरन नाटक वाले खाते। इसकी नकल बचाकर लाते॥
चूरन सभी महाजन खाते। जिससे जमा हजम कर जाते॥
चूरन खाते लाला लोग। जिनको अकिल अजीरन रोग॥
चूरन खावै एडीटर जात। जिनके पेट पचे नहि बात॥
चूरन साहब लोग जो खाते। सारा हिन्द हजम कर जाते॥
चूरन पुलिस वाले खाते। सब कानून हजमकर जाते॥

ले चूरन का ढेर। बेचा टके सेर॥

व्यंग वाणों की वर्षा रिशवत खोर, महाजन, लाला, एडीटर, साहब पुलिस सब के ऊपर पडती हुई दृष्टिगोचर होती है। उस समय के समाज, और राजनैतिक परिस्थितियों का एक दृश्य इस व्यंग से युक्त हास में प्राप्त होता है। व्यंग में तुच्छ को उच्च व्यक्त किया जाता है। हँसी हँसी मे व्यंग बोल देने से लोग तिलमिला कर हँस देते हैं, कुछ कह नहीं सकते और अचूक निशाना भी बैठ जाता है। साहब लोग चूरन खा कर सारे हिन्द को, पुलिस कानून को और महाजन जमापूँजी हजम कर जाते हैं, तथा इस चूरन से रिशवत भी पच जाती है।

भारतेन्दु-कालीन लेखक इतने जिन्दादिल थे, उनकी प्रकृति इतनी विनोदी थी कि सभी परिस्थितियों में वे हास्य के लिये मौका निकाल ही

लेते थे। पं० प्रतापनरायण मिश्र "ब्राह्मण" की करूणा "अपील" भी कितनी परिहासपूर्ण शब्दावली में लिखते हैं।

आठ मास बीते जजमान, अब तो करौ दच्छिना दान। हर गंगा॥
आज काल्हि जो रुपया देव, मानों कोटि जग्ग कर लेव। हर गंगा॥
माँगत हमको लागै लाज, पर रुपया बिन चलै न काज। हर गंगा॥
जो कहुँ दैहो बहुत खिजाय, यह कौनेहु भलमंसी आय। हर गंगा॥
हँसी खुशी से रुपया देउ, दूध पूत सब हमसे लेउ। हर गंगा॥
काशी पुन्न गया माँ पुन्न, बाबा बैजनाथ माँ पुन्न। हर गंगा॥
तो अधीन ब्राह्मन के प्रान, ज्यादा कौन बकै जजमान। हर गंगा॥

नाटकों में गम्भीर परिस्थित योजना के साथ साथ पाठकों के मन बहलाव के लिये विदूषक की कल्पना की गई जिनमे कथोपकथन से दर्शक का हृदय शोकपूर्ण वातावरण मे भी क्षण भर के लिये आनन्दित हो उठे। भारतेन्दु ने भी अपने नाटकों में प्रचलित परिपाटी का अनुकरण किया।

भारतेन्दु युग की हास-परिहास व्यग पूर्ण बातों में चौवे जी का मुख्य स्थान है। चौवे उस युग के अनेक नाटकों में परिहास के पात्र समझे जाते थे। उदाहरण के लिये "रणधीर प्रेम मोहनी" नाटक में देखियेः—
चौबेजी—(दर्पण में दूसरा चौवे समझकर) चौवे जू तुम राजी हो, मधुपुरी ते आये किते दिन भये ? हमारे घरहू गये हे, हमारे छोरानै तुमको अपनो बाबा तो नाय समझ लिओ, (डर कर मन में) इनको यहाँ रहवो अच्छो नाहीं। (प्रकट) भैय्या यहाँ का तंत है तुम कहो तो हमहूँ हमारे संग परदेश चलैं, तुमनै भांगहू पीई के नाँहि ? नाहि पीई होइ तो हमारे पास लुगदी तय्यार है, छान डारे।

अनेक प्रहसनों में चौवे जी दिखलाई पड़ते जो पाठकों तथा दर्शकों के मनोरंजन के साधन है। चोज की बातें और लतीफे भी पत्रिकाओ में

दिखलाई पडते है, जो भारतेन्दु युग की नवीन मुख्य विशेषता है। मैंने "हरिश्चन्द्र चद्रिका" "हिन्दी प्रदीप" "भारतेन्दु" "क्षत्री पत्रिका" इत्यादि में अनेक चोज और लतीफे उद्धृत देखा, इनमे छोटे छोटे चुटकुले, तथा समाज के भिन्न २ वर्गगत और जातिगत बातों को हास्य व्यग रूप मे उपस्थिति किया है:—

" एक चौबे जी किसी यजमान के यहाँ लड्डू खाते खाते अकड़ गये और हुई तयारी पेट फूल कर राम राम सत्त की।"

यजमान ने कहा—"चौबे जी को चूरन दो"

चौबे जी मरते मरते क्या बोले—"अरे भैया पेट मे चूरन कू जग्गो कहाँ ? जो चूरन कू ही जग्गो होती, तो एक लड्डू ही और न खाय लेते ?"

(२३ अक्टूबर १७८५ ई०, भारतेन्दु मासिकपत्र)

आजकल सीधा (Simple) होना अर्थ विचार से मूर्खता ही व्यक्त करता है। हमारे प्रिय चौबे जी सीधे साधे है विजया भवानी के दास है। नित्य भग के तरंग मे ही बोलते है, लोग उनकी भगेड़ी मुख और चालढाल वार्त्तालाप के ढग को देखकर हँसते है! भारतेन्दु कालीन हिन्दी साहित्य में वे विदूषक का कार्य करते है!

"चौबे जी पर प्रायः चुटकुले निकलते थे। × × × × × × × भारतेन्दु युग मे चोज की बातो का खूब प्रचलन था और सम्भवतः इन चुटकुलो मे मथुरा के चौबे प्रधान पात्र थे"

डा० श्री कृष्ण लाल, एम० ए०—डी० फिल्

इन चुटकुलो मे शिक्षा, उपदेश, व्यंग, हँसी, तथा किसी किसी चुटकुले मे अश्लीलता भी दिखलाई पड़ी, जिन्हे मैंने त्याज्य समझ कर संग्रह मे स्थान नहीं दिया, मुख्य मुख्य चुटकुलो का ही (चोज की बातों का ही) संकलन किया! जो लगभग पचपन की सख्या मे उद्धृत किया गया है। चुटकुलों में जातीय मतभेद तथा अभारातयों के प्रति घृणा और

द्वेष के भाव भरेपड़े है ! इनका उद्देश्य विदेशियों की बदमाशी दिखलाना तथा उनके चरित्र दुर्बलता को प्रगट करना है। निम्नलिखित चुटकुले में पाश्चात्य रमणी के चरित्र चित्रण की झाँकी दिखलाई पड़ती है: —

"वलायट का वर्ल्ड अखबार लिखता है कि हाल में एक मेम साहिबा कुछ लोगों को बड़ी चालाकी के साथ अपनी उमर का हिसाब समझा कर अपने सिन को हद से जिआदा घटा रही थी, उनकी लडकी निहायत हाजिर जवाब थी उससे न रहा गया और बात को कुछ काट कर बोल उठी, " अम्मा भला अपनी और मेरी उमर मे कम से कम नौ महीने का फर्क तो छोड़ दो"।

इसी प्रकार विदेशियों के मुख से हिन्दी स्वर व्यञ्जन का उच्चारण अटपटे ढग से तथा तकार को टकार बहुला भाषा प्रगट कर उनके सवाद को हास्यप्रद बना दिया है। "जैसे टुम क्या कहटे हो टुमारा बाट मै नहीं समझटा है।" इत्यादि संवादो से वाक्य के वाक्य भरे पड़े हैं ! उस समय पादरियो का धर्म प्रचार भारतवर्ष में चारो ओर हो रहा था, भारतीय अशिक्षित और पददलित जनता धीरे धीरे ईसाई धर्म स्वीकार कर आधुनिक सभ्य पुरुष के ढाँचे मे ढल रही थी। हमारे हिन्दी सेवानुरागी संम्पादक तथा विद्वान् लेखक उनकी आलोचना कर रहे थे। उनके खिलाफ आवाज उठा रहे थे ! पं० प्रताप नारायण मिश्र के साथ एक पादरी का सवाद जनप्रचलित हो गया है। एक पादरी ने मिश्रजी को लज्जित करने के विचार से पूछा कि आप गाय को माता कहते है तो बैल को पिता कहेंगे परन्तु बैल कभ. कभी अभक्ष (मैला) भी खा लेता है। प्रताप-नारायण जी ने उत्तर दिया, "साहब वह बैल ईसाई हो गया होगा। हमारे समाज में ऐसे भी बहुत से बैल है।" इस उत्तर को सुनकर पादरी किंकर्तव्य विमूढ हो गया।

किए हुए चुटकुले में देखिये विरोधी अपने ही साथी के द्वारा घाय
हो गया:—

"एक मगरूर पादरी अपने दोस्तो में कहने लगे हा आज मु
कैसे गधों को वाज सुनाना पडा था। एक तेजतबीयत मेंम साहब
वहाँ मौजुद थी बोल उठी," अहा तभी आप उन्हे बार बार मेरे प्या
भाईयो कह रहे थे।"

इस प्रकार अन्य भारतीय जातियो और भारतीय वर्णों की हँसी उन
गुणो और कर्मों को लेकर किया, कोई भी अछूता न बच सका।

भारतेन्दुकालीन निबध विशेषतः व्यक्तिनिष्ट हुआ करते थे। उ
निबन्धो में लेखको की बहुमुखी प्रतिभा की झलक आ गई है। उस सम
के लेखको ने जनता की भलाई का ध्यान रखते हुये अनेक विषयो
अपनी लेखनी दौड़ाई है जो विभिन्न रूपों में हमारे समक्ष दिखलाई पड़
है। समाज सुधार की भावना, मसखरेपन से पूर्ण निबन्ध प्रमुख लेख
ने दिखलाया है। हास्य-परिहास पूर्ण निबधों में व्यंग, आक्षेप बहुत
मार्मिकता पूर्ण ढग से ढिया है। नवीन विचार, नवीन भावना जन
में शीघ्रता से आ रही थी। मानव पुरानी परम्परागत रूढ़ियो को छोड़
स्वयं बुद्धि से विचार करने लगा, वह सत् असत् का विवेक अपने बु
से करने लगा था, लकीर के फकीर भी अपनी-अपनी डफली पीटते रहे
देश का ढ़ाचा इन श्वेताङ्गो के कारण बदल गया! उस विषम परिस्थि
में पड़े हुये असहाय भारतवासीयो को जनजागरण का सदेश भारते
मंडल के उत्साही लेखको ने दिया. जनता, समाज, धर्म आर्थिक प
स्थितियो तथा राजनैतिक वातावरण, सरकारी मुहकमा और अफसर स
को समक्ष रखकर इन लेखको ने आलोचना की। भारतवासी सरका
हुकूमत द्वारा पकाये जा रहे थे जिसे हम मीठी आँच कह सकते है।

वे कुछ कह नही सकते थे, निरीह पशु की तरह उनके गले की बा
डोर ईन विदेशी अफसरो के हाथ में थी। वे जिधर चाहते और बाँधते

ऐसी परिस्थिति मे जबकि सरकार के विरूद्ध आवाज उठाना गद्दारी समझी जाती थी सरकार अनेक मार्गों से देश को रसातल में ढकेल रही थी या उन्नति कर रही थी यह विवाद का विषय मेरे विषय से दूर है। परन्तु काले गोरे का भाव दोनो के हृदय में विषकी गाँठ के समान था। अकाल, टैक्स, आर्थिक जटिलता, निर्धनता का विशाल सम्राज्य देश के चारो ओर छाया हुआ था। ऐसे ही समय हमारे जन जागरण के देवता भारतेन्दु आये और उनके सहयोगी पं० बद्रीनाथ चौधरी प्रेमघन तथा बा० बालमुकुन्द गुप्त इत्यादि कुशल सम्पादक और हिन्दी भाषा प्रेमी अपने समस्त जीवन को भारती के चरणों पर न्यौछावर कर लिखते रहे, नाना प्रकार की जटिल परिस्थितियों को झेलते रहे। इन लेखकों के हृदय मे सरकारी कार्यों के प्रति हार्दिक क्षोभ था इसीलिये अपने निबन्धों मे विष-वपन करते रहे, व्यग बाण छोड़ते रहे। स्तोत्र शैली का प्रयोग सभी लेखकों ने किया! भारतेन्दु ने "अगरेज स्तोत्र" राधाचरण गोस्वामी ने "मिस्टर वूट" प०प्रताप नारायण जी ने "कलिकौष" और बालकृष्ण भट्ट जी ने अपने निबन्धो में विषय के साथ-साथ इधर उधर घूमते भी रहे, उसी लपेट मे कुछ न कुछ कहते रहे।

सामाजिक दशा को ध्यान में रखकर परिहास पूर्ण व्यंग बोलने की प्रवृति उस समय के सभी लेखकों में विद्यमान् थी। कटुआलोचना सरकार के कार्यां पर तथा अन्य विषयों पर परिहास से साथ व्यंग दिखलाई पड़ता है। यह विशेषता अधिकाशं निबन्धों में ही दृष्टिगोचर होती है। नाटकों में भी उसके छींटे देख सकते है।

स्तोत्र हास्य व्यंग प्रधान है तथापि इससे अनेक लाभ भी दिखलाई पड़ते हैं। आर्य संस्कृति की महत्ता, चरित्र सुधार की मनोवृत्ति दिखलाई पड़ती है। भारतीय गुणों से श्रद्धा और कुचरित्रों से घृणा दो, तथा उस समय इस प्रकार के हास्य, व्यंग, जोज, लतीफे पत्र पत्रिकाओं में लिखकर

जन-साधारण मे हिन्दी भाषा का प्रचार, पटन-पाठन में रुचि तथा देशोपकार की भावना यत्र तत्र बिखरी हुई प्रतीत होती है।

इन निबंधों में हास्य व्यंग के कारण हलकापन प्रतीत होता है परन्तु स्थान-स्थान पर पाठको को भाव गम्भीरता के भी दर्शन होते है जैसे भट्ट जी के मेला ठेला, बघुस्तनराज, कौआपरी आशिकतन, पत्तीस्त इत्यादि निबंधों में हास्य के साथ गम्भीरता है जो सरल स्वाभाविक बात मे भी दर्शन लिये हुये और समाजिक दृष्टिकोण से लिखी गई है। सामाजिक कुरीतियो पर ध्यान आकर्षित करना उस समय के लेखकों का मूक सिद्धान्त था परन्तु भट्ट जी में सस्कृत सूक्तियाँ हिन्दी के उत्तम मुहावरे और लोकोक्तियों से पूर्ण समंध्य भाषा है।

निबन्ध किसी प्रकार का हो, भट्ट जी का व्यक्तित्व अनेक प्रकार से व्यञ्जित हुआ है! भट्ट जी संस्कृत साहित्य के मर्मज्ञ थे उनके विचार निर्भीक स्वदेशाभिनी और जागरूक थे। साहित्य और समाज के निस्वार्थ सेवक थे। विनोद की मात्रा उनमे परयाप्त थी। उनके व्यतित्व की सम्पूर्ण विशेषताएँ उनके निबन्धो मे प्राप्त हो सकती है उनका व्यंग विधान ध्यान देने योग्य है। उनके व्यग खीझ से पूर्ण जीवन के सभी क्षेत्रो पर है। मेला-ठेला वर्णन मे यथार्थ चित्रण सुन्दर ढग से उपस्थित किया जैसे गुलेरी जी की अमर कहानी "उसने कहा था" मे अमृतसर शहर का यथार्थ वर्णन पाठकगण प्राप्त करते है।

उस समय के लेखको का जन जीवन से गहरा सम्पर्क था भारतेन्दु-युग के प्रमुख सम्पादको ने भारतीय आशा, आकाक्षा और आवश्यकता को भली भाँति मार्मिकता के साथ अपनी लेखनी से व्यक्त किया है। विभिन्न सप्रदायो के धार्मिक आक्रमणो का साहस पूर्वक सामना किया। ये सरकार से जनता की वकालत करते, अच्छी बातो की प्रशंसा और जर्जर रूढ़ियो, अन्धविश्वासों की भत्सना करते थे। पं० प्रताप नारायण मिश्र तथा राधा-चरण गोस्वामी में उपर्युक्त गुण वर्तमान थे। मिश्र जी ईसाई धर्म प्रचारकों

से क्षुब्ध थे। उर्दू फारसी शब्दों का प्रयोग व्यंग विनोद के अवसरो पर तथा शब्द क्रीड़ा के साथ देखा जाता है "कलिकोष" में मुखतार, मुख. से तार, हाँ किम्, हाँ क्या करता है। मिश्र जी व्याकरण से अनभिज्ञ होते हुये भी अपने प्रयत्न और मनमौजीपन के कारण समय-समय पर "ब्राह्मण" पत्रिका मे हास्य विनोद की सामग्री अपने "नादिहन्द" पाठकों को देते गये। ऐसा मस्तमौला आनन्द जीवी लेखक, मस्तीपन और फक्कड़पन से पूर्ण व्यक्तित्व, हिन्दू हिन्दी हिन्दुस्तान का अनुरागी; लावनी और कजरी का प्रेमी बहुत ही कम लेखको को देखते है। आप के निबंधों मे से "कलिकोष" और "होली है" इस ग्रंथ में संग्रहीत है।

व्यग की दुधारी तलवार गोस्वामीजी के निबधो मे दिखलाई पड़ती है। अपनी उग्र लेखनी द्वारा कठोर से कठोर बात कहने में भी आप पीछे न हटे! अंग्रेजों की स्वार्थपरता, कूटनीतिज्ञता को प्रकट किया है। आप की शैली सुन्दरता के साथ तर्क पूर्ण ढग से पाठकों के समक्ष आती है। 'मिस्टर बूट" 'मूषक स्तोत्र' 'नापित स्तोत्र' 'वैद्यराजस्तोत्र' इत्यादि से व्यग के साथ आत्मीयता व्यक्त करते हैं! 'मिस्टर बूट' का एक उदाहरण देखिये:—

"आप के विषय में लिखने को हमारी कलम बहुत दिनों से सुरसुरा रही थी। दवात महीनों से उधार खा रही थी। कागज हप्तों से झख मार रहा था अखबार बहुत दिनों से ताक लगाए था पर बहुत दिनों से अकल को अजीर्ण होगया था बुद्धि का बुखार चढा था आज जहालत का जुलाब और वेसमझी का सिनकोना खाकर तबियत दुरुस्त की, अब मस्तक आप का गुन गावेंगे।"

भारतीय सार्टिफिकेट को कितने यत्न पूर्वक रखते हैं उसी का एक उदाहरण 'मूषक स्तोत्र' में देखिये।

'यह बर माँगते हैं कि और सब कुछ चाहे काट डालिये, पर इस मूषक स्तोत्र को न काटिये। यह आप का उन्नीसवीं शताब्दी का सार्टिफिकेट

है इसे यत्न से अपने बिल मे रखिए, और इसे गले में तगमे की तरह लटका कर निकलिए।"

"नापित स्तोत्र" सामाजिक निबंध है इसमे भी लेखक सरकार और टैक्स के अत्याचार को न भूला, स्तोत्र के अन्तिम वाक्य मे व्यक्त करता है कि 'हमारे परिवार की सच्ची हितैषिता करो! टैक्स घटाओ और—काम आओ।"

राधाचरण गोस्वामी के निबंधो मे व्यंग और हास के पुट चारो ओर दिखलाई पड़ते है। स्वाभाविक गति से दोनों गुण आप के निबंधो में बहते रहते है। सरकार की कड़ी आलोचना, सामाजिक विषयों को लेकर स्थान स्थान पर हस्तक्षेप कर अपना आक्रोष प्रगट किया है।

पं० बद्री नारायण चौधरी "प्रेमघन" अपने पत्रिका 'आनन्दकालम्बनी' में उस युग की नवीन चेतना और जाग्रति काल का दृष्य अंकित किया है। आपने भारतेन्दु के स्वर में स्वर मिलाकर उस युग की परिपाटी के अनुसार अपने पत्रिका मे परिहास को स्थान दिया है। परिहास पूर्ण लेखो मे भी उस युग की झाँकी स्पष्ट झलकती हुई प्रतीत होती है तथा सरकारी मुहकमो के हथकण्डे और सामाजिक पतन का दृष्य उपस्थित करते हैं।

"पं—अरे क्या व्यर्थ पूछते हो लाला। लाए हो कुछ कि आशीर्वाद ही लेने आए हो, कचहरी मे तो बिना हाथ गरम करवाए किसी से बोलते भी नहीं होगे और हमसे संसार भर की व्याख्या लेव, और न लेना एक न देना दो। इतना बड़ा होली का त्योहार बीत गया, मद्य पिया मास खाया, नाच देखा, हर तरह रुपया लुटाया परन्तु हमको साझ घोंघी से प्रयोग नही।"

मु—अजी महराज। वह जमाना आया है, कि कौड़ियों के लाले पड़ रहे हैं आप को नाच तमाशे की सूझी है, भाई परमेश्वर की कसम अब सरकारी नौकरी में भी कुछ मजा न रहा! क्या कहूँ निहायत परीशान हूँ।"

एक परिहास में चौबे जी कहते हैं कि अंग्रेजों ने जमुना के पानी में टैक्स न लगा दिया नहीं तो हम लोग पानी बिना मर जाते। बादशाही समय मे वे मुसलमान शासक प्रसन्न होने पर भूत ही जागीर ही लगा देते थे परन्तु ये अंग्रेज अत्यधिक आनन्दित हुये तो राजा बाबू कर दिया या सितारे हिन्द का खिताब दे दिया, उससे परिणाम् यह हुआ कि जो महीने भर खर्च होता था वह दो दिन में ही खर्च होने लगा क्योंकि विदेशी बू के कारण शान-शौकत पर आधुनिक रंग चढ़ गया केवल खर्चा ही खर्चा बढ़ गया परिणाम कुछ न निकला। इस प्रकार प्रेमघन जी ने उस समय के देश काल के चित्र को भली भाँति अपने परिहासों में स्थान दिया है।

भारतेन्दु के निबंधो मे आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक विषयों पर हास्य व्यंग कर जनता में नव चेतना जाग्रत करना मुख्य उद्देश्य था। उपधर्म के प्रति आक्रोष और व्यंग, आलसी भारतवासियो पर व्यग परिहास के छींटे दिये हैं।

उस युग प्रवर्तक पुरुष ने देश के अन्धकार को दूर करने के लिए नाना प्रकार के मार्ग अपनाए, व्यंग और हास्य-परिहास एक सरल और अन्योक्ति पूर्ण ढंग का मार्ग था। इसकी सहायता से कड़ी से कड़ी बात हँस कर कह डालते। जिसे सुनकर विरोधी कुछ कह भी न सकता था इस प्रकार विदेशियों की भर्त्सना तथा पाश्चात्य सभ्यता के पुजारियों पर करारा व्यंग किया है। पुराने लकीर के फकीरों पर भी हास्य व्यग की चर्चा करते हुए दिखलाई पड़ते हैं। "अग्रेज स्तोत्र" और पाँचवाँ पैगम्बर अंग्रेजों की धूर्तता पूर्ण व्यंग प्रधान निबंध है। भारतेन्दु की व्यंग पूर्ण शैली और भाषा उनके निबंधों की मुख्य कला है। हास्य परिहास युक्त लच्छेदार बातों से पाठक लोट पोट हो जाता है। परन्तु विचारों में हलकापन न होकर गम्भीरता ही बनी रहती है। "पाँचवे पैगम्बर" में भारतीयों पर व्यंग देखने योग्य है।

"लोगों दौडो, मैं पाँचवां पैगम्बर हूँ, दाऊद, ईसा, मूसा, मुहम्मद ये चार हो चुके मेरा नाम चूसा पैगम्बर है, मैं विधवा के गर्भ से जन्मा हूँ और ईश्वर अर्थात् खुदा की ओर से तुम्हारे पास आया हूँ इससे मुझ पर ईमान लाओ नहीं तो ईश्वर के कोप में पड़ोगे।"

× + ×

"(खुदा कहता है) देख मूर्तिपूजन अर्थात् बुत परस्ती को जमाने से उठा देना क्योकि मैने हाफ सिविलाइज्ड किया दुनिया को पूरा तुझको जो शराब सब पैगम्बरों पर हराम थी मैंने हलाल किया तेरे पर बल्कि तेरे मजहब की निशानी है जो तेरे आसमान पर आने के बाद रूए जमीन पर कायम रहेगी क्योकि यद्यपि "तेरा राज्य सर्वदा न रहेगा पर यह मत यहाँ सर्वदा दृढ़ रहेगा।"

भारतेन्दु जी आधुनिक सभ्यता के पुजारियो पर व्यंग की कठोर वर्षा करते हुये कहते है कि शराब पियो, बाल विवाह उठाओ, विधवा विवाह करो, जातिभेद मिटाओ, कुलीन कुल का सत्यानास करो और होटल में लब करना सीखो, मेम्बर बनो इत्यादि २ इस प्रकार प्राचीन भारतीय परम्परागत पद्धति नियम धर्म सदाचार को त्यागकर सभ्य पुरुष कहलाओ।

"कङ्कड़ स्तोत्र" में काशी के मुनिस्पलबोर्ड पर व्यंग किया है। ये सड़क दिन रात बनती हैं हजारो ठेकेदार सड़को की मरम्मत का ठीका लेकर सरकारी रुपयो से आनन्द उड़ाते है और ये कंकरीली सड़के कुछ दिन के बाद पुनः अपनी पुरानी स्थिति मे हो जाती है। सड़क पर कङ्कड़ काशी के शंकर की तरह स्थान स्थान पर पड़े रहते है।

"अगरेज स्तोत्र" लेख के शीर्षक से ही विदित होता है कि भारतेन्दु युग का वातावरण विदेशी सत्ता से किस प्रकार त्रस्त था। व्यापारी से शासक होने का उदाहरण ये श्वेताङ्ग है अपनी कूट नीतिज्ञता से किस प्रकार अपना जाल भारत और पूर्वी द्वीपों में फैलाना आरम्भ

किया। भारत का पतन हो रहा था। वैज्ञानिक आविष्कारों से भारतीय जनता चमत्कृत हो गई थी।

"मदिरास्तवराज्य" मे मदिरा देवी की व्यंगपूर्ण स्तुति की है। "हे मदिरे तुम साक्षात् भगवती का स्वरूप है। जगत तुमसे व्याप्त है।"

"हे सर्वानन्दसार भूते। तुम्हारे बिना किसी बात में मजा ही नहीं मिलता।"

"होटल नाच जाति पाति घाट बाट मेला तमाशा दरबार घोड़दौड़ इत्यादि स्थान में तुम्हें लेकर जाने से लोग देखो कैसी स्तुति करते है।"

"सबै जाति गोपाल की" इस लेख में हिन्दू समाज के जाति-पाँति व्यवस्था को समक्ष रखकर सामाजिक व्यंग किया है यह नाटकीय संवाद से गुथा हुआ लेख है। काशी के धुरंधर पंडित किस प्रकार लोभ के वश में होकर किसी भी जाति को उच्च या तुच्छ बनाया करते है। टके के कारण जाति व्यवस्था हर एक नीच उच्च को दिया करते हैं। यही इस निबन्ध से लक्षित होता है। उन्हीं पंडितो की खिल्ली भारतेन्दु ने अपने इस निबंध में उड़ाई है उनके उपर व्यग किया है।

पं० शुक्राचार्य और बृजमोहन कूल के "प्रेरित पत्र और 'रंगीला दृश्य नाटक हास्य लेख इस संग्रह में संग्रहीति है। शुक्रचार्य और बृजमोहन कूल 'हिन्दी प्रदीप' तथा और पत्र पत्रिकाओ में लेख लिखते थे। ये लेखक अपने लेखों में हास्य पूर्ण वातावरण का निर्माण करते और पाठकों को अपनी चलती छलकी व्यंग पूर्ण वार्तालाप से हँसाते थे। इनके लेखों का उद्देश्य भी सदाचार, आदर्श नीति ही हुआ करता था।

"प्रेरित पत्र" में डाक्टर साहब अंग्रेजों की हिन्दी बोलते हैं? वे इश्क की बिमारी का नुसखा देखिये किस प्रकार लिखते हैं।

"वास्ते मिटर शुक्राचार्य, इश्क का नुशखा।

घृणा—८ औंस, दृढ़ प्रतिज्ञा—८ पौंड, बुद्धि—२ग्रेन, धैर्य—२ पां०ट गड़्रस—२ औंस, इन सब द्रव्यों को बीस पौण्ड बीवट पानी में

मिलाकर उसमे २ पौण्ड लापरवाही का मिश्री डालकर बदचलनी का आँच का जोश दो—आधी रात के बखत रोज उसका ३ औंस के हिसाब से सेवन करो सालभर मे बीमारी दूर हो जायेगा।"

ब्रजमोहन कूल का "रंगीला दृश्य" पाश्चात्य सभ्यता का प्रदर्शन है उसके लटके लपेट में हमारे भारतीय आकर किस प्रकार काली मेमों के साथ नाटकीय प्रदर्शन करने लगते है। सोसाईटी का दुराचार पूर्ण रंगीला दृश्य है। मेमो के साथ भारतीय युवक इधर उधर कूद कर नृत्य कर रहे है। मदिरा के साथ भारतीय सस्कृति पीये जा रहे है। "पहिला फ्र्ग्ड फशन परस्त कोट पैंट वाले जेंटिलमेन आफ दि ट्वेंटियथ सेंचुरी था।"

लेखक के हृदय में किस प्रकार के भाव पैदा हो रहे है वह नीचे लिखता है "यह तमाशा देख मुझे पुराने लोगों की युग अवस्था का ध्यान आया और सोचने लगा हमारे धर्म ग्रंथो मे जो कुछ कलियुग के सम्बन्ध मे लिखा गया है सब सत्य है बहुत ही सटीक उतरते हुये पाया जाता है।"

इस कथा युक्त लेख में व्यंग और हास का छींटा लेखक देता गया है, आधुनिक सोसाईटी की आलोचना लेखक अपने लेख मे ही व्यक्त कर देता है और पाठको को विदेशी जहरीली सभ्यता से सावधान करता हुआ प्रतीत होता है।

'भारतमित्र" के सम्पादक बाबू बालमुकुन्द गुप्त समय के प्रसिद्ध लेखको और सम्पादकों मे से थे। गुप्त जी प्रजा के प्रतिनिधि होकर समाचार पत्र निकालते थे सरकार की कडी आलोचना करते। भारत का कच्चामाल विदेश चला जा रहा था जब चावल चीन जाने लगा तब गुप्त जी शान्त न रह सके अपने पत्र में तीव्र विरोध किया। दीन देशवासियों की करुण दशा पर गुप्त जी ने अनेक निबन्धो मे आँसू बहाया। फूट, बैर, नशा अंग्रेजी फैशन, टैक्स, चुगी इत्यादि पर अनेक बार अपने पत्र में दोप और शोक प्रकट किया। गुप्त जी ने "शिवशम्भु का चिट्ठा" लिख कर

उपर्युक्त विषयो पर विवेचना की। लार्ड कर्जन को सम्बोधित कर पत्र शैली के रूप मे अपने विचारो को व्यंगात्मक रूप में रक्खा। उस समय के विषयों को लेकर कुशल कलाकार की तरह पत्र रूप मे लिखा। जो हास-व्यंग प्रधान होने के कारण पठनीय है उस समय इन चिट्ठों की चर्चा बहुत थी। निम्नलिखित उदाहरण उनके चिट्ठे से दिये जाते है जो उस युग के देशकाल परिस्थितियों का दर्शन कराते हैं।

"किस्मत पे उस मुसाफिरे खस्ता के रोइये।
जो थक गया हो बैठके मंजिल के सामने॥"

बड़े लाट होकर आप के भारत में पदार्पण करने के समय इस देश के लोग श्रीमान् से जो जो आशाँए करते और सुख स्वप्न देखते थे, वह सब उड़न्छू हो गये।

"भारतवासी जरा भय न करे, उन्हे लार्ड कर्जन के शासन मे कुछ करना न पड़ेगा। आनन्द ही आनन्द है। चैन से भङ्ग पियो और मौज उड़ाओ।

नजीर खूब कह गया है:—

कूड़ी के नकारे पै खुदके का लगा डंका।
नित्य भङ्ग पीके प्यारे दिन रात बजा डंका॥

पर एक प्याल इस बूढ़े ब्राह्मण को देना भूल न जाना।"

माई लार्ड माई लार्ड कह कर कठोर व्यंगात्मक शैली का प्रयोग सर्वत्र प्राप्त होता हैं। गुप्त जी के तीन निबन्धों का संग्रह इस पुस्तक में हैं, जो हास्य और व्यंग से ओतप्रोत है। मेले का ऊँट, मनुष्य गणना, एक दुराशा तीनों निबन्धों से हिन्दी साहित्य प्रेमी भलीभाँति परिचित है।

भारतेन्दु युग की भाषा और शैली

भारतेन्दु युग में भाषा कि यह विशेषता थी कि जो कुछ बोलचाल में भाषा प्रयोग की जाती उसे उसी प्रकार लिख कर साहित्य का निर्माण भी उसी बोलचाल की भाषा मे करते थे। इसलिये भारतेन्दु युग के लेखक इस्का (इसका) उस्का (उसका) सुन्ना (सुनना) इत्यादि लिखते थे।

लेखों में तदभव, प्रातंज या स्थानीय शब्दों का बाहुल्य दृष्टिगोचर होता है तद्भव शब्द जैसे ब्राम्हन (ब्राम्हण) थन (स्तन। कोख (कुक्षि) मानुष ´मनुष्य) गोरू (गाय)।

प्रातंज अथवा स्थानीय शब्द समूह जैसे मुडियाना, झपकी, फुदनी, हथकन्डा, रन्जामुन्जा, पहिराय उढ़ाय, मूरत, टिटिलटेटिल, ढच्चर ढच्चर पिन्न पिन्न इत्यादि।

इस समय की भाषा में व्याकरण सम्बन्धी त्रुटियाँ विशेष हैं। भाषा ऐकार ओकार बहुला पाई जाती है जैसे नो (नौ' मोज (मौज) यही खातर (यही खातिर) इत्यादि कही कही शब्दो को अशुद्ध प्रयोग भी प्राप्त होते हे। भाषा में शब्द क्रीड़ा भी बहुत स्थानो पर दिखलाई पडती है। जैसे मुखतार (मुख से तार) हाकिम (हा किम्) हाँ क्या करता है, इन निबन्धों में तत्सम, तद्भव, देशी शब्द तथा विदेशी शब्दों का प्रयोग भी प्राप्त होता है।

मुहाविरेदार भापा, मार्मिक सूक्तियाँ हृदय को आनन्दित कर देती है। सस्कृत की सूक्तियाँ श्लोक भी निबन्धों मे पाये जाते हैं विदेशी शब्दों और वाक्यों को भी अपने भाषा के साथ रखने का सुन्दर यत्न हैं जिससे व्यंग और हास्य में सहायता प्राप्त होती है। जैसे उर्दू फारसी अंग्रेजी मिश्रित पद् वल तथा दोहे और शेर का वेधड़क प्रयोग करते थे।

शैली

प्राजल शैली, अलंकारिक शैली, प्रवाह शैली, वार्तालापशैली, प्रदर्शनशैली, वर्णात्मक और व्यङ्गात्मक शैली, नाटकीय कथोपकथन की शैली, स्तोत्र शैली, व्यंगात्मक विनोद पूर्ण चित्र संवाद शैली, इत्यादि का प्रयोग उस युग के निबन्धो मे होता था। निबन्धकारों की भाषा और शैली अपने अपने रुचि के अनुसार प्रासगिक होती थी। निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा निबन्धो की भाषा और शैली के रूप दिखलाई पडते है—

१—शुद्ध हिन्दी भाषा का रूपः—

"मर्द मर्द लिखे जावे और स्त्रियाँ स्त्रियाँ, तो हीजड़ो को हीजड़ों ही की गिनती मे क्यो न लिखा जावे? ईश्वर ने जब उनका स्त्री पुरुष दोनो ही से विलक्षण बनाया है तो मनुष्य गणना में उनका वह लक्षण लोप क्यों किया जावे? इसके सिवा जब हीजड़े मर्द लिखे गये तो मर्दों और हीजड़ों मे पहचान ही क्या रही?

२ संस्कृत शब्द युक्त भाषा तथा श्लोक जिसमें वर्तमान है—

"हे ललना ललाम! हे कुलकामनियो की आदर्श स्वरूप! हे गुण-गरिमाविशिष्ट! तुम अपने स्वाभाविक सहज गुण से चिराभ्यासी योगियों की सहिष्णुता को सहज हीं में जीत लेती हो। हे वंश प्ररोह जननी! यह लोक परलोक दोनों मे सुख देने वाले शुद्ध सन्तान के पैदा होने की बीज भूमि तुम्हीं हो।

"सन्तितः शुद्ध वंश्या हि परत्रेह च शर्मणे"

देवी, तुम्हारे संख्यातीत अनगिनत दिव्य गुणों को गिन चुकता कर देने की किसकी सामर्थ्य है।"

३—उर्दू फारसी बाहुल्य शब्दों का प्रयोगः—

"चौबे जी आज आप बड़ी बुजर्गाना बातें करते हैं आप का हौसिला बहुत बढ़ा दिखलाई पड़ता है, आज तक आपने कभी मेरे साथ इस तरीके की बात चीत नही की थी, आप की बातो से तो कुछ और ही जाहिर होता है।"

"एक बदमाश जो कई बार कैद हो चुका था फिर किसी जुर्म मे गिरफ्तार होकर फ़रासीस के एक मजिष्ट्रेट के सामने हाजिर किया गया। मजिष्ट्रेट ने लानती के तौर पर कहा कि "बड़ी शर्म की बात है कि तुम्हें फिर अपनी हर्कतों की बदौलत अदालत मे आना पड़ा, अब तुम्हारी इसी मे बिहूतरी है कि बुरी सुहबत में वक्त ख़राब करने के बदले मिहनत की आदत डालों," मुजरिम बोला, "बुरी सुहबत ! भला आप ऐसा फर्माते है जब कि आप जानते है कि मेरा बहुत जियादा वक्त पुलिस और मजिष्ट्रेटोके दर्मियान सर्फ होता है।"

४—अंग्रेजी शब्दः—

"यदि यह न हो तो हमको डिनर होम निमन्त्रण करो, बड़ी बड़ी कमेटियो का मिम्बर करो सीनट का मिंबर करो, जसटिस करो, आनरेरी मजेष्ट्रेट करो, हम तुमको प्रणाम करते हैं।"

भारतेन्दु युग के निबन्धकार भाषा के मध्यम मार्ग का अनुसरण करते थे। जिससे संस्कृत युक्त पदावली, विदेशी शब्द तथा प्रांतज भाषा का प्रयोग होता था। भाषा और शब्दो के चलते रूप को ही अपने निबंध में स्थान देते थे ! भारतेन्दु ने भाषा की समस्या सुलझा कर हिन्दी को नये चाल मे ढाल दिया।

बुद्ध जयती २०१३ वि०
जैतपुरा, वाराणसी।

—ब्रजेन्द्रनाथ पाण्डेय
"टुन्नन"

मूषक स्तोत्र

हे गणेशजी के वाहन महागणेशमूषक । छोटा सा रूप धारण करके कई मन के मोटे ताजे गणेश जी को उठा ले जाना या तो आपका ही का काम है या इष्टीम ऐन् जीन् का ही काम है। यदि गणेशजी हजारो विघ्न नाश करते है तो आप करोड़ो अवश्य नाश करेगे तिसमे अपने ही स्तोत्र मे ! इसी से हम आप ही के स्तोत्र में आप ही का मंगलाचरण करते है ! "ओं श्री मन्महा महा गणाधिपतये मूषकेशाय नमः" हे मूसे राम मामा ! बालक जब उनके दुग्ध के दात गिरते है, तब आपके बिल मे रख देते है । और आपसे प्रार्थना करते है कि हमें अपने से दन्त दो, पर आप न उनके लेते न अपने देते, इसी से न आप उधो के लेने मे न माधो के देने में अतएव आपको राम राम ।

हे मूसासिंह महाराज । आप दान करने में तो राजा कर्ण हैं बहुधा बड़े आदमियो कि परम सुकुमारी कुमारी भूषण के भार से इधर उधर अपने आभूषण रख देती, आप चट उन्हें डोरा काटने के लोभ से बिल में खींच ले जाते जब कोई भाग्यवान आपके बिल स्पर्श का मार्जन करता तो उसे सुवर्ण के दाने, मोतियों के गुच्छे, हीरे की कनी मिलती हैं, अतएव आप की बिल्ली पर विजय हो, मुझ दरिद्र ब्राह्मण को भी भिक्षान्देहि कृपावलम्बन करी हे मूषकाधीश्वरी ।"

हे मूसामल भगत ! हमने पुराणों से सुना है कि एक दिन आप किसी दीपक की जलती बत्ती मुंह में दाब कर कहीं भगवान मन्दिर में चले

गये, भगवान ने आप को दीपक दिखलाने वाला जान कर वैकुण्ठ दिया, अतएव जय श्री कृष्ण ! जय श्री कृष्ण ।

हे मूषक महा मति ? हमने रूक्मिणी मङ्गल में सुना है कि जब श्री कृष्ण ने अपनी बरात में गणेशजी को बहुत मोटे अतएव हास्यास्पद होने के कारण निमंत्रण नही दिया, तो तुमने बरात का सारा रास्ता पोला कर दिया ज्योंही बरात चली कि धमाधम गड्ढो में गिर पड़ी, लाचार श्री कृष्ण को गणेश बुलाने पड़े, हम अभी से अपने पड़पोते के विवाह का निमन्त्रण दिये देते है, जरूर पधारियेगा।

मूसा पैगम्बर ! दुनियां के आधे लोग तुम्हे परमेश्वर का दूत मान कर पूजा करते है, अतएव हमारा भी आदाब अर्ज।

हे मिग्टर रैट् ! एक दफा पूना के निकटस्थ जिलो मे आपने हजारो खेतो का नाश कर दिया तब लाचार सरकार ने रैट् कमीशन बिठलाया, पर आप ऐसे वे शरम–कि अब तक जीते है अतएव गुड्मोर्निंग् ।

हे चतुर्भुज् ! आप की चारो भुजा धर्म अर्थ काम मोक्ष देती हैं, और दूसरे पक्ष में आप के वह पांव भी हैं इससे आप चतुर्भुज और चतुष्पाद भी है केवल शंख चक्र या फिटन की देर है।

हे बगुलाभगत लोग तो बगुला को ही बहुत बदनाम करते हैं पर मेरी बुद्धि में आप उसके भी गुरू है, जैसा आप ध्यान लगाना, निगाह चूकने पर माल उडाना, देखते देखते लोप हो जाना जानते है। बगुला के सहस्त्र पुरुष भी नही जानते। इस कर्तव्य में तो आप "तांतिया भील" हैं।

हे गोपाल ! दिन में तो आप बिल रूप बृज में बैठे बैठे गोचारण करते, पर जहा रात्रि हुई कि आप अपनी गोपियों को लेकर गृहस्थियों में घरों में रास लीला करते अतएव हे रासविहारी ! हम आप की नई रास-पंचाध्यायी बनावेगें !

हे राजस की कतरनी यदि चलुकमान हकीम ने आप के पकड़ने के लिये पिजडे बनवाये, पर आप उनको भी काट कर निकल जाते, अतएव आप बम्बई कलकत्ते की पिजरापोल में भी न रहेगे, हा इसी से हम भी मरे, और आप भी मरे !

हे इतिश्री इतिश्री ! शास्त्र मे खेतो के नाश करने के लिये छः इति लिखी है, उनमे एक नम्बर आप का भी है। हम एग्रीकल्चर डिपार्टमेन्ट के डाईरेक्टर साहब को परामर्श देते है कि आपके लिये कोइ जल्दी तजवीज करे।

हे अनेक रूप रूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे ! आप के अनेक रूप है ! कोई छोटे बालखिल्य के समान, कोई मोटे भीमसन के प्रमान, कोई खोटे रावन की सन्तान, कोई उपद्रव करने मे शैतान के शैतान, बस हम आप की स्तुति गान करते हैं।

हे गुरू गोविन्द। सब जातियो मे गुरू, पुरोहित, पादरी होते है, आप की जाति में भी पहाड़ी मूसा कुछ गौरवास्पद है, उसे देखकर आप कुछ डरते पर जहा वह आप के साथ घड़ी दो घड़ी किसी गृहस्थ के घर में रहे कि आपने उनका अदब कायदा सब छोड़ा। इससे यह दृष्टान्त सच हुआ कि "गुरू गुड़ ही रहे और चेला चीनी हो गये।"

हे शिक्षा गुरू वा परीक्षा गुरू ! सब का कोई न कोई गुरू अवश्य है, आप ने भी यह चीरहरण माखन चोरी अवश्य किसीसे सीखी होगी, कृपापूर्वक अपनी भगवद्गीता तो सिखाइये।

हे प्रवाद प्रतिवाद। संसार का यह प्रवाद भी आप ही में घटता है कि जिस हडिया मे खाय, उसी मे छेद करें। बस आप से बढ़ कर और कौन परच्छिद्रान्वेषी है ?

हे मुक्तिदाता ! जब बिल्ली ने नौ सौ मूसे खा लिये, तब उसे ज्ञान हुआ, वह मक्के को हज करने गई, और उसे मोक्ष हुआ पर यदि वह सौ मूसे और खा लेती, तो फिर सदेह स्वर्ग को ही चली जाती।

हे सिद्धि श्री सर्वोपरि विराजमान सकल गुणनिधानं। आप की कहां तक स्तुति करें। आपके गुण गाते गाते हम तो क्या शेष शारदा भी थक गये, बस आप की प्रशंसा यही समाप्त करते हैं, और यह बर मागते हैं, कि और सब कुछ चाहे काट डालिए, पर इस मूषकस्तोत्र को न काटिए। यह आप का उन्नीसवीं शताब्दी का सार्टिफिकेट् है इसे यत्न से अपने बिल में रखिए, और इसे गले में तगमे की तरह लटका कर निकलिए।

[श्री राधाचरण गोस्वामी]

नापित स्तोत्र

हे हमारे उष्णाता सन्तापित शिर के शीतल करने वाले नापित। आप को प्रणाम है! यदि आप न हो तो हमारी बड़ी दुर्दशा हो कि दाढ़ी बढ़कर हमे बकरा बनादे, सिर के बाल बढ़कर जटा हो जाये, प्रेत में और हम में कुछ भी भेद न रहे। लोग न माने तो सन् १८७७ में जब बनारस में नाई और लुहारो का झगडा हुआ था, उस समय की तारीख देखले। अतएव हे ब्रह्माजी के बाल बगीचे के माली आप को धन्य है।

हे नापित महाशय! सरकारी कर्मचारी रविवार को और शौकीन राजा बाबू बुधवार को अवश्य ही आप की पूजा करते हैं अतएव हे गल-ग्रह, अथवा रवि बुध को प्रकाशित होने वाले अर्द्ध साप्ताहिक पत्र! आपको धन्य है!

प्रिय नापित! यद्यपि तुम्हारे सभी यजमान होते हैं, पर धन पात्रों की हजामत दिन में दो दो दफा और गरीब को महीने में एक दफा भी नहीं पूछते, यदि कही मिल भी गये तो बहाना बतला दिया, अतएव हे विषम स्वभाव! तुम्हें धन्य है!

बड़े बड़े मालदार तो गरीबों की हजामत बनाते है और तुम उन की भी हजामत बनाते, अतएव हे विष के विष, गुरू के गुरू। तुम्हें धन्य है।

आहा नापित! तुम्हारे विना तो भारत वर्ष में कोई काम नहीं चलता—मुण्डन में तुम जब तक उपस्थित न हो, और अपना मन मानता नेग न धरालो, कभी नहीं हो सकता—यज्ञोपवीत में तुम्हीं से चांद घुटानी पड़ती, और विवाह के तो तुम आद्याचार्य ही हो। फिर मरने पर काष्ट चिता की अग्नि भी तुम्हीं लाते, और अन्त में श्राद्ध प्रायश्चित पर्य्यन्त पीछा नही छोडते, अतएव हे वेदमग्न! तुम्हें धन्य है।

देखो! जब किसी को पुत्र होता, तब तुम्हीं बधाई देते और जब किसी का विवाह होता, बुलावा भी तुम्हारे हाथ है फिर मरने पर गंगा प्राप्ति भी तुम्हीं सुनाते; अतएव हे चिट्ठी के दादे! टेलीग्राफ के पर दादे! और नोटिस के सरदादे! तुम धन्य हो।

प्रयाग राज जो सर्व तीर्थों का राजा है वहा बिना तुम्हारा आश्रय किये शुद्धि नही होती। और सर्व पापों के आश्रय के शोका भी तुम्ही छेदन करते, अतएव हे पतित पावन! हे तीर्थराज के सकल फल दाता वेणीमाधव! हे प्रयाग वाले पण्डों के दण्डा! तुम्हें धन्य है!

गया, काशी, पुरुषोत्तम, द्वारिका, मथुरा, माया, जहा कहीं तीर्थ में जाइये, बिना तुम से भेंट किये फल नही होता, अतएव हे पुराने ऋषियों की हा में हा मिलाने वाले! हे सब भक्ष्या-भक्ष्य के खाने वाले! हे तीर्थों के सतीर्थ! तुम धन्य हो।

बड़े आदमियों की बैठकों में पखा हाकना, पैर दबाना मसखरापन करना तुम्हारा ही काम है, अतएव ऐ बड़े आदमियों के खिलोने! तुम्हें धन्य है।

जब कोई सन्यासी वैरागी, योगी आदि होता है. तब पहिले तुम्हीं से चोटी कटाता है, अतएव हे परमार्थ पथदर्शक! तुम धन्य हो, तुम बड़े पुण्यवान हो!

सम्बन्धी सम्बन्धियों में फूट तन्त्र लगा कर तुम्हीं लड़ाई करा देते, कोई काम पड़ने पर सम्बन्धियों के यहा जा कर तुम्हीं छप्पन भोग उड़ाते,

और जो कोई तुम्हारी अच्छी सेवा न करे तो चट उसका काम बिगाड देते हों अतएव हे नारद जी ! और हे दुर्वासा ऋषि ! तुम धन्य हो !

रात्रि को अमीरो के पैर दाबते दाबते अनेको की चुगली खाते, अनेक प्रकार की झूठ सच कथा कहकर उनका मनोरंजन करते अतएव हे चुगल खोरों के चचा ! हे कथा बाचने वालो के जीविका हारी—तुम धन्य हो।

जिस प्रकार और जातियो ने इस समय उच्च जाति बनने का प्रयत्न किया, इसी प्रकार तुमने भी अपने को "न्यायी" अर्थात्" न्याय करने वाला" क्षत्रिय ठहराया, अतएव हे उन्नीसवी शताब्दी के उन्नति शाली, हे रिफार्मर तुम धन्य हो !

ऐ विविध विशेष्य विशेषणस्पदी भूत परम प्रिय नापित ! ऐ जहा गंगा तहा झाऊ, जहा ब्राह्मन तहां नाऊ। इत्यादि गड़बड़ स्मृति प्रति पादित महादेव ! इस स्तोत्र पाठ का यह बर मागते है कि जब हमे क्षौर की आवश्यकता हो, शीघ्र ही मिल जाओ। और हमारे लड़का लड़कियों के वर बधू अन्वेषण के समय ठग विद्या न लगाओ। वरन हमारे परिवार की सच्ची हितैषिता करो। टैक्स घटाओ और—काम आओ !

(राम च० गोस्वामी)

कङ्कड़ स्तोत्र !

कङ्कड़ देव को प्रणाम है देव नहीं महादेव क्यों कि काशी के कङ्कड़ शिव शंकर समान है ॥१॥

हे कङ्कड़ समूह । आज कल आप नई सडक से दुर्गा जी तक बराबर छाये हो इससे काशी खण्ड "तिलेतिले" सच हो गया अतएव तुम्हें प्रणाम है ॥२॥

हे लीला कारिन् । आप केशी शकट वृषभ खरादि के नाशक हो इससे मानो पूर्वार्द्ध की कथा हो अतएव व्यासों की जीविका हो ॥३॥

आप सिर समुह भञ्जन हो क्यों कि कीचड में लोग आप पर मुह के बल गिरते है ! आप पिष्ट पशु की व्यवस्था हो कि लोग आपकी कढ़ी बना कर आप को चूसते है ॥

आप पृथ्वी के अन्तरगर्भ से उत्पन्न हो । संसार के गृह-निर्माण मात्र के कारण भूत हो । जल कर भी सफेद होते हो दुष्टों के तिलक हो । ऐसे अनेक कारण है जिनसे आप नमस्करणीय हो ॥

हे प्रबल वेग अवरोधक । गरूड़ की गति भी आप रोक सकते हो और की कौन कहै इससे आप को प्रणाम है ॥४॥

हे सुन्दरी सिङ्गार ! आप बडी के बड़े हो क्यों कि चूना पान की लाली का कारण है और पान रमणी गण के मुख शोभा का हेतु है इससे आप को प्रणाम है ॥५॥

हे चुङ्गी नन्दन ! ऐन सावन में आपको हरियाली सूझी है क्यो कि दुर्गा जी पर इसी महीने में भीड़ विशेष होती है तो हे हठ मूर्ते तुमको दण्डवत है ॥६॥

हे प्रबुद्ध ! आप शुद्ध हिन्दू हो क्योकि शरह विरुद्ध हो आब आया और आप न वर्खास्त हुए इससे आप को सलाम है ॥७॥

हे स्वेच्छाचारित् ! इधर उधर जहां आपने चाहा अपने को फैलाया है। कही पटरी के पास पड़े हो कही बीच में अड़े हो अतएव हे स्वतंत्र आप को नमस्कार है ॥८॥

हे ऊभड खाभड़ शब्द सार्थ-कर्त्ता ! आप कोण मिति के नाश-कारी हो क्यो कि आप अनेक विचित्र कोण सम्मलित हो। अतएव हे ज्योतिषारि आप को नमस्कार है ॥९॥

हे शस्त्र समष्टि ! आप गोली गोला के चचा,छर्रो के परदादा, तीर के फल, तलवार की धार और गदा के गोला है इससे आप को प्रणाम है ॥१०॥

आहा, जब पानी बरसता है तब सड़क रूपी नदी मे आप द्वीप से दर्शन देते हो इससे आप के नमस्कार में सब भूमि को नमस्कार हो जाता है ॥११॥

आप अनेकों के वृद्धतर प्रपितामह हो क्यों कि ब्रह्मा का नाम पितामह है उनका पिता पङ्कज है उसका पङ्क है और आप उसके भी जनक हो इससे आप पूजनीयों में एल० एल० डी० हो ॥१२॥

हे जोगा जिवलात राम लालादि मिस्त्री समूह जीविका दायक ! आप कमानी भञ्जक, धुरी विनाशक, वारनिश चूर्णक हो केवल गाड़ी ही नहीं घोड़े की नाल, सुम बैल के खुर और कटंक चूर्ण को भी आप चूर्ण करने वाले हो इससे आपको नमस्कार है ॥१३॥

आप में सब जातियो और आश्रमो का निवास है। आप वानप्रस्थ हो। क्यों कि जंगलो में लुढ़कते हो। ब्रह्मचारी हो क्यों कि वटु हो। गृहस्थ हो, चूना रूप से, सन्यासी हो क्योंकि घुट्टमघुट्ट हो। ब्राह्मण हो क्यों कि प्रथम वर्ण होकर भी गली गली मारे मारे फिरते हो। क्षत्री हो क्योकि खत्रियों की एक जात हो। वैश्य हो क्यों कि कांटा बाट दोनों तुममें है शूद्र हो क्यों कि चरण सेवा करते हो। कायस्थ हो क्योंकि एक तो ककार का मेल, दूसरे कचहरीपथावरोधक तीसरे क्षत्रियत्व हम आप का सिद्ध कर ही चुके है इससे हे सर्ववर्ण स्वरूप तुम को नमस्कार है ॥१४॥

आप ब्रह्मा. विष्णु, महेश, सूर्य, अग्नि, जम, काल, दक्ष और वायु के कर्ता हो, मन्मथ की ध्वजा हो, राज पद दायक हो, तन, मन, धन के के कारण हो, प्रकाश के मूल शब्द की जड़ और जल के जनक हो, वरञ्च भोजन के भी स्वादु कारण हो क्यों कि आदि व्यजंन के भी बाबा जान हो इसी से हे कंकड़ तुमको प्रणाम है ॥१५॥

आप अंग्रेजी राज्य में श्रीमती महाराणी विक्टोरिया और पार्लमेण्ट महा सभा के आछत, प्रबल प्रताप श्री युत गवर्नर जनरल और लेफ्टेन्ट गवर्नर के वर्तमान हो साहिब कमिश्नर, साहिब मजिस्ट्रेट और साहब सुपरिनटेनडेन्ट के इसी नगर में रहते और साढ़े तीन-तीन हाथ के पुलिस इन्सपेक्टरों और कास्टिबलों के जीते भी गणेश चतुर्थी की रात को स्वच्छन्द रूप से नगर में भडाभड़ लोगों के सिर पर पड़ कर रुधिर धारा से नियम और शान्ति का अस्तित्व बहा देते हो अतएव हे अंगरेजी राज्य मे नवाबी स्थापक ! तुमको नमस्कार है ॥

यह लम्बा चौड़ा स्तोत्र पढ़कर हम विनती करते हैं कि आप अब सदेसिकन्दरी बाना छोड़ो या हटो या पिटो ॥

मिस्टर बूट

गुडमोर्नीङ्ग। गुड्नुङ्ग। गुड्ईवनिग। गुडनाईट ! गुडवाई। वन्दगी। आदाब। तसलीमात दण्डवत्। प्रणाम-पालागन, जुहार।

आप के विषय में लिखने को हमारी कलम बहुत दिनो से सुरसुरा रही थी दवात महीनों से उधार खा रही थी कागज हफ्तो से झख मार रहा था अखबार दिनो से ताक लगाए था पर बहुत दिनों से अकल को अजीर्ण हो गया था बुद्धि को बुखार चढ़ा था आज जहालत का जुलाब और बेसमझी का सिन्कोना खाकर तबियत दुरूस्त की अब भर-सक आप का गुन गावेंगे।

मिस्टर बूट आप हें हमारे प्यारे आखों के तारे, अंग्रेजो के दुलारे, आप है काले विलायती खाले, अधेरे घर के उजाले उन्नीसवींसदी के साले आप है अनमोल गोलमटोल पोलम पोल खाली ढोल बिलकुल वेबोल आप हैं बड़े-बड़े कड़े सड़े जमीन में पड़े मजबूत तड़े आप हैं पाद रक्षक सर्प तक्षक तैल, भक्षक और जेन्हल् मेनो के लक्षक आप हैं आप थाप तबले की थाप, फुट के नाप और छोटे-छोटे जीवो के सन्ताप साक्षात पाप और सब प्रकार की चरण दासियों के बाप के बाप अतएव अटल अखण्ड अडिग आप का प्रताप॥

मिस्टर बूट आप का जन्म कभी से क्यो न हो पर वेद में तो आप का उपानहो के मंत्र में थोड़ा सा चर्चा है और स्मृति में भी व्रात्यस्तोम यज्ञ

के प्रकरण में वाले उपानह पहरने की विधि है, अतएव आप प्राचीन तत्वानु संधार्यां जनो के सर्वस्व है फिर जो कुछ हो, एकोनविंशति शताब्दी के तो आप सूर्य्य है जितनी उन्नति हुई है वह भी आप ही के प्रताप से और आप की उन्नति हुईं है वह भी आप ही के प्रताप से फिर देखिये, भारतवर्ष की जो इतनी उन्नति हुईं है वह भी आप ही के प्रताप से। और विलायत के बड़े-बड़े सोदागर, दिल्ली के बढ़िया दुकानदार, कलकत्ते के चीना बाजार की जो इतनी उन्नति हुईं है वह भी बुरा न मानिये आप ही के (न कहूँगा शरम आती है) प्र-प्र प्रताप से। और हम ऐज्यूकेटेड् लोगो की जो इतनी उन्नति हुई है कि जिसके भार से हिमालय धसका जा रहा है वह भी सच तो यह है कि आप ही के धारण करने से, क्यों कि आप को धारण नहीं किया कि पैर से उन्नति की बेड़ी आपसे आप पड़ गई अतएव जहा जहां चरण पड़त संतन के तहाँ तहां-वन्टा धार और सबूज कदम आप ही हैं। मिस्टर बूट ! यदपि आप की एक ही जाति है पर गधा घोडों की भिन्न-भिन्न श्रेणी और रंग रूप है आप के भी तथैवच। बूट, शू, ज गुरगावी मुखडा, चपरौआ, चढैमा इत्यादि अनेक श्रेणी हैं और रंग भी आप का काला, लाल बैगनी, भूरा, सफेद, गुलाबी आदि विचित्र।

अतएव आप का यथार्थ रूप नहीं कह मकते कि आप काले है या गोरे हैं। या काले गोरे दोनो है मिस्टर बूट। जगत् में उसकी बड़ी प्रतिष्ठा है जो राजदर्बार में प्रवेश कर सके। सो पार्लामेन्ट आप के चरण तल से मर्दित, प्रिवी कौन्सल् आप की चरण रज से रञ्जित, वाईसराय की कौन्सिल् आप की पदधूलि से धूसरित और प्राय सब छोटे बड़े दरबार आप के पदाम्बुजों से परशोभित है अतएव हे अत्रभवन्। आप आप ही हैं, आप को हम क्या खिताब दे ? आप ही कोई बढ़िया खिताब पसन्द कर लें। डियर सर बूट, आप कोर्ट और हाईकोर्ट के तो गाईड है बिना आप के क्या मजाल कि वहाँ घुस जावे यदि घुसे तो फिर वही दुर्दशा हो जो एक

मुख्तार राम की हुई थी। हमने सुना है कि आप कानून में पास है तो फिर आप वकालत और बारिष्टरी का क्यों नहीं दावा करते? माई डियर बूट स्कूल कालिज हास्पिटल् पोस्ट पबलिक् वर्क सबडिपार्टमेन्टो से आप की तूती बजती है और फौज और पुलिस को तो आप ने सर्व ग्राम ही कर लिया है। अतएव आप को रिश्वत का छोटा भाई कहें तो अनुचित नहीं क्योंकि जैसे रिश्वत सर्वत्र वैसे ही श्रीमान् भी सर्वत्र है। महाशय बूट हमारा यह अनुमान सत्य है कि जहा अंग्रेजी भाषा अथवा अग्रेजी राज्य हैं वहा सर्वत्र आप की उपासना होती है अतएव आप अग्रेजी शास्त्र समूह के फल और बृटिश गवर्नमेन्ट के राज्य के प्रधान लायल है। श्री श्री बूट हम हिन्दुस्तानी लोग तो आप पर कुर्बान् है और क्यो नहीं जब आप हमारे नेता अंग्रेजो के प्राण समान है आप का स्पर्श करते ही हम अपने को बी० ए०, एम० ए० से अधिक विद्वान एक चाइल्ड से अधिक धनवान और मिष्टर ब्राडला से अधिक बुद्धिमान समझने लगते है जब आप हमारी ऐसी शोभा के साधन है तो फिर क्यों न अपने हाथ से आप की धूल झाड़े और का श्रमनिवारे मिस्टर बूट हम जानते हैं आप का कुछ माहात्म भी कहीं लिखा है न तो हिन्दू विवाह मे आप को क्यो पूजते? और अग्रेज फूलों के समान आप की वर्षा विवाह में क्यो करते? बूट जी, आप के दाम भी दिन-दिन बढ़ते जाते है पचीस रूपये तक तो आप की एक प्रति बिकने लगी। बूट आपके सहयोगी शाको में रतालू, अन्नों मे चना, और पक्षिओ में सारस है क्यो कि जैसा सारस का सदा एक साथ जोड़ा रहता है वैसा हुजूर का का भी, मिस्टर बूट एक साहब ने एक वोट के लिये अपने मित्र को एक पत्र लिखा था, पर वोट के बदले "बूट" आप का डाक द्वाउमारास के पास पहुँचे। भला आपके सम दयालु कौन है? मिस्टर बूट आपके दासानुदास देसी चरनदास तो चोरी बहुत जाते है पर आप को लेने मे चोर भी डरता है, विशेषतः जब आपके ऊपर नम्बर पड़ने लगेंगे, और दूकान का पता भी रहेगा तब तो जो सजा नोट वाले को होती है वही

आपको चुराने वाले को होगी। अतएव आप सब तरह से उलटे सीधे भले बुरे आगे पीछे सब तरह से भले हैं अतएव आपको यह ऐड्रेस् देते हैं और परमेश्वर से आप की उन्नति की प्रार्थना करते हैं 'Mr boot forget me not "

हम लोग आपके शुभचिन्तक

टठडढण।

[१८८४ ई०]

अथ मदिरास्तवराज ।

हे मदिरे तुम साक्षात् भगवती का स्वरूप हो जगत तुमसे व्याप्त है तुम्हारी स्तुति करने को कौन समर्थ है अतएव तुम्हें प्रणाम करना योग्य है ।। हे मद्य ! तुम्हे सौत्रामणि यज्ञ में तो वेद ने प्रत्यक्ष आदर किया है परन्तु तुम अपने सेव्य रूप प्रच्छन्न अमृत प्रवाह में संपूर्ण वैदिक यज्ञ वितान को प्लावित करती हो अतएव श्रुतिश्रुते तुम्हें—हे वारुणि ! स्मृतिकारों ने भी तुम्हारी प्रवृत्ति नित्य मानी है निवृत्ति केवल अपने पद्धतिपने के रक्षण के हेतु लिखी है अतएव हे स्मृतिस्मृते ! तुम्हें प्रणाम है ।

हे गौड़ि ! पुराणों में तो तुम्हारी सुधा सारिणी कथा चारो ओर अतिवाहित है निषेध के बहाने भी तुम्हारी विधि ही विधि है इससे हे पुराण प्रतिपादिते ! तुम्हे प्रणाम है ।।

हे सोम सखते ! चंद्रमा में तुम्हारा निवास, समुद्र तुम्हारी उत्पत्ति का स्थान और सकल देव मनुष्य असुर तुम्हारे पति हैं अतएव हे त्रिलोकगामिनि ! तुम्हें प्रणाम् है ।।

हे बोतल वासिनी ! देवी ने तुम्हारे बल से शुम्भादि को मारा यादव लोग तुम्हे पी के कट मरे । बलदेव जी ने तुम्हारे प्रताप से सूत का सिर काटा अतएव हे शक्ति ! तुम्हें प्रणाम है ।।

हे सकलमादकसामग्रीशिरोरत्ने ! तन्त्र केवल प्रचार ही को बनाए है और इनका कोई प्रयोजन नहीं था केवल तुममय जगत् करने को इनका अवतार है अतएव हे स्वतन्त्रे ! तुम्हें प्रणाम है ।।

हे ब्रांडि ! बौद्ध और जैन धर्म की तुम सारभूत हो । मुसलमानों में * मुफ्त के मिस हलाल हो । क्रिस्तानों में भी साक्षात् प्रभु की रूधिर रूप

हौ और ब्राह्मोधर्म की तो तुम एकमात्र आड हौ। अतएव हे सर्वधर्ममर्मरूपे, तुम्है प्रणाम है ॥

हे शाम्पिन्! आगे के लोग सब तुम्हारे सेवक थे यह श्लोकों के प्रमाण सहित बाबू राजेन्द्र लाल के लेकचर से सिद्ध है तो अब तुम्हारा कैसे त्याग हो सकता है अतएव हे सिद्धे! तुम्है प्रणाम है ॥

हे ओल्डटाम! तुम्हें भारतवर्षियों ने उत्पन्न किया रोम चीन इत्यादि देश के लोगो को कुछ परिष्कृत किया अब अंग्रेजों और फ्रान्सीसियों ने तुम्हें फिर से नए भूषण पहिराए। अतएव हे सर्व विलायत भूषिते! तुम्हें प्रणाम हैं ॥

हे कुल मर्य्यादा संहार कारिणी! तुमसे बढ़कर न किसी का बल है न आग्रह, न मान तुम्हारे हेतु तुम्हारे प्रेमी कुल, धन, नाम, मान, बल, मेल रूप वरञ्च प्राण का भी परित्याग करते है अतएव हे प्रणयेक पात्रे तुम्हें—

हे प्रेजुडिस विध्वंसिनी! तुम्हारे प्रताप से लोग अनेक प्रकार की शंका परित्याग करके स्वच्छन्द विहार करते हैं जिनके बाप दादा हुक्का भांग सुरती से भी परहेज करते थे वे अब सभ्यो की मजलिस मे तुम्हारा सेवन करके जाना ऐब नही समझते! अतएव हे बोल्डनेस जननि तुम्हें—

हे सर्वानन्दसार भूते। तुम्हारे बिना किसी बात में मजा ही नहीं मिलता। रामलीला तुम्हारे बिना निरी सुपनखा की नाक मालुम होती है नाच निरे फूटे काच और नाटक निरे उचाटक बेवकूफी के फाटक दिखाई पडते हैं अतएव हे मजे की पोटरी तुम्हें प्रणाम है ॥

हे मुखकज्जलावलेपके! होटल, नाच, जाति-पाति, घाट बाट, मेला तमाशा, दरबार, घोडदौड़ इत्यादि स्थान मे तुम्हें लेकर जाने से लोग देखो कैसी स्तुति करते हैं अतएव हे पूर्वपुरुषसञ्चितविद्याधनराजसंपदकीर्त्यन्यकठिनप्राप्यप्रतिष्ठासमूहासत्यानाशनि! तुम्हें बारबार प्रणाम ही करना योग्य है।

स्त्री सेवा पद्धति

इस पूजा से अश्रु जल ही पाद्य है, दीर्घ श्वास ही अर्घ्य है, आश्वासन ही आचमन है, मधुर भाषण ही मधुपर्क है, सुवर्णालङ्कार ही पुष्प हैं, धैर्य ही धूप है, दीनता ही दीपक है, चुप रहना ही चन्दन है, और बनारसी साड़ी ही विल्वपत्र है, आयुरूपी आँगन मे सौन्दर्य तृष्णा रूपी खूँटा है, उपासक का प्राण पुञ्ज-धाग उसमें बंध रहा है, देवी के सुहाग का खप्पर और प्रीति की तरवार है, प्रत्येक शनिवार की रात्रि इसमे महाष्टमी है और पुरोहित यौवन है ।

पाद्यादि उपचार करके होम के समय यौवन पुरोहित उपासक के प्राण समिधो मे मोहाग्नि लगाकर सर्वनाश तन्त्र के मन्त्रों से आहुत दे "मान खण्डन के लिये निद्रास्वाहा" "बात मानने के लिये माँ बाप बन्धन स्वाहा" "वस्त्रालङ्करादि के लिये यथा सर्वस्व स्वाहा" "मन प्रसन्न करने के लिये यह लोक परलोक स्वाहा" इत्यादि, होम के अनन्तर हाथ जोड़कर स्तुति करै ।

हे स्त्री देवी ससार रूपी आकाश में तुम गुब्बारा हो क्योंकि बात बात में आकाश में चढ़ा देती हो पर जब धक्का दे देती हो तब समुद्र में डूबना पड़ता है । अथवा पर्वत के शिखरों पर हाड़ चूर्ण हो जाते है, जीवन के मार्ग में तुम रेलगाड़ी हो जिस समय रसना रूपी एन्जिन तेज करती हो एक घडी भर मे चौदहो भुवन दिखला देती हो, कार्य क्षेत्र मे तुम इले-

क्ट्रिक टेलीग्राफ हो, बात पड़ने पर एक निमेष मे उसे देश देशान्तर में पहुँचा देती हो, तुम भवसागर में जहाज हो, बस अधम को पार करो ॥

तुम इन्द्र हो, श्वसुर कुल के दोष देखने के लिये तुम्हारे सहस्त्र नेत्र हैं ,स्वामी शासन करने में तुम वज्रपाणि हो। रहने का स्थान अमरावती है क्योंकि जहाँ तुम हो वही स्वर्ग है ॥

तुम चन्द्रमा हो, तुम्हारा हास्य कौमुदी है उससे मन का अन्धकार दूर होता है तुम्हारा प्रेम अमृत है जिसकी प्रारब्ध में होता है वह इसी शरीर से स्वर्ग सुख अनुभव करता है और लोक में जो तुम व्यर्थ पराधीन कहलाती हो यही तुम्हारा कलङ्क है ॥

तुम वरूण हो क्योकि इच्छा करते ही अश्रुजल से पृथ्वी आर्द्र कर सकती हो ! तुम्हारे नेत्र जल की देखा-देखी हम भी गल जाते है।

तुम सूर्य्य हो तुम्हारे ऊपर आलोक का आवरण है पर भीतर अन्धकार का वास है, हमे तुम्हारे एक घड़ी भर भी आखों के आगे न रहने से दसों दिशा अन्धकारमय मालूम होता है पर जब माथे पर चढ़ जाती हो तब तो हम लोग उत्ताप के मारे मर जाते हैं। किम्बहुना देश छोड़कर भाग जाने की इच्छा होती है ॥

तुम वायु हो क्योंकि जगत की प्राण हो। तुम्हें छोड़कर कितनी देर जी सक्ते है ? एक घड़ी भर तुम्हे बिना देखे प्राण तड़फड़ाने लगते हैं, जल में डूब जाने की इच्छा होती है पर तुम प्रखर बहती हो किससे बाप की सामर्थ्य है कि तुम्हारे सामने खड़ा रहे ॥

तुम यम हो यदि रात्रि को बाहर से आने में विलम्ब हो, तो तुम्हारी वक्तृता नरक है। यह यातना जिसे न सहनी पडे वही पुण्यवान है उसी की अनन्त तपस्या है ॥

तुम अग्नि हो क्योंकि दिन रात्रि हमारी हड्डी हड्डी जलाया करती हो ॥

तुम विष्णु हो तुम्हारी नथ तुम्हारा सुदर्शन चक्र है उस के भय से पुरुष असुर माथा मुड़ा कर तटस्थ हो जाते है एक मन से तुम्हारी सेवा करे तो सशरीर वैकुण्ठ को प्राप्त कर सकता है।

तुम ब्रह्मा हो तुम्हारे मुख से जो कुछ बाहर निकलता है वही हम लोगो का वेद है और किसी वेद को हम नही मानते, तुमको चार मुख है क्योंकि तुम बहुत बोलती हो। सृष्टिकर्ता प्रत्यक्ष ही हो पुरुषो के मनहंस पर चढती हौ चारो वेद तुम्हारे हाथ में है इस्से तुमको प्रणाम है।

तुम शिव हो। सारे घर का कल्याण तुम्हारे आधीन है भुजंग वेनी धारिणी हौ (३) तृशूल तुम्हारे हाथ मे है क्रोध मे और कंठ मे विष है तौ भी आशुतोष हो।

इस दिव्य स्तोत्र पाठ से तुम हम पर प्रसन्न हो। समय पर भोजनादि दो। बालको की रक्षा करो। भृगुटी धनु के सन्धान मे हमारा बध मत करो और हमारे जीवन को अपने कोप से कंटकमय मत बनाओ।

"अंगरेज स्तोत्र"

हे अंगरेज ! हम तुमको प्रणाम करते हैं।

तुम नानागुण विभूषित, सुन्दर कान्ति विशिष्ट, बहुत संपद युक्त हो; अतएव हे अंगरेज ! हम तुमको प्रणाम करते है ॥

तुम हर्ता—शत्रुदल के; तुम कर्ता आईनादि के, तुम विधाता—नौकरियों के, अतएव हे अगरेज ! हम तुमको प्रणाम करते हैं।

तुम समर में दिव्यास्त्रधारी — शिकार में बल्लमधारी, विचारागार में अर्ध इञ्चि परिमित व्यासविशिष्ट वेत्रधारी आहार के समय काटा चिमचधारी अतएव हे अगरेज ! हम तुमको प्रणाम करते है ॥

तुम एक रूप से पुरी के ईश होकर राज्य करते हो, एक रूप से पराय वीथिका मे व्यापार करते हो और एक रूप से खेत में हल चलाते हो, अतएव हे त्रिमूर्ते ! हम तुमको प्रणाम करते हैं।

आप के सत्वगुण आप के ग्रन्थों से प्रगट, आप के रजो गुण आप के युद्धों से प्रकाशित, एवं आप के तमोगुण भवत्प्रणीत भारतवर्षीय सम्वाद पत्रादिकों से विकसित, अतएव हे त्रिगुणात्मक ! हम तुमको प्रणाम करते हैं।

तुम हो अतएव सत् हो, तुम्हारे शत्रु युद्ध मे चित्, उम्मेदवारों को आनन्द, अतएव हे सच्चिदानन्द हम तुमको प्रणाम करते हैं ॥

तुम इन्द्र हो—तुम्हारी सेना वज्र है, तुम चन्द्र हो—इनकम् टैक्स तुम्हारा कलङ्क है, तुम वायु हो—रेल तुम्हारी गति है, तुम वरुण हो—

जल मे तुम्हारा राज्य है, अतएव हे अंगरेज! हम तुमको प्रणाम करते हैं।

तुम दिवाकर हो—तुम्हारे प्रकाश से हमारा अज्ञानांधकार दूर होता है, तुम अग्नि हो—क्योंकि सब खाते हो, तुम यम हो—विशेष करके अमला वर्ग के, अतएव हे अंगरेज! हम तुमको प्रणाम करते है॥

तुम वेद हो—और रिग्यजुस्साम को नहीं मानते, तुम स्मृति हो—मन्वादि भूल गये, तुम दर्शन हो—क्योंकि न्याय मीमांसा तुम्हारे हाथ है, अतएव हे अंगरेज! हम तुमको प्रणाम करते है॥

हे श्वेतकात—तुम्हारा अमलधवल द्विरद रद शुभ्र महाश्मश्रु शोभित मुखमण्डल देख करके हमे वासना हुई कि हम तुम्हारा स्तव करें, अतएव हे अगरेज! हम तुमको प्रणाम करते है॥

हे वरद! हमको वर दो, हम सिर पर शमला बाध के तुम्हारे पीछे पीछे दौड़ेगे, तुम हमको चाकरी दो हम तुमको प्रणाम करते है।

हे शुभंकर! हमारा शुभ करो, हम तुम्हारी खुशामद करेंगे, और तुम्हारे जी की बात कहेंगे, हमको बड़ा बनाओ हम तुमको प्रणाम करते हैं॥

हे मानद! हमको टाईटल दो, खिताब दो, खिलत दो, हमको अपना प्रसाद दो हम तुमको प्रणाम करते है॥

हे भक्तवत्सल! हम तुम्हारा पात्रावशेष भोजन करने की इच्छा करते है, तुम्हारे कर स्पर्श से लोकमण्डल मे महामानास्पद होने की इच्छा करते है, तुम्हारे स्वहस्तलिखित दो एक पत्र बाक्स में रखने की स्पर्द्धा करते है, हे अगरेज! तुम हम पर प्रसन्न हो हम तुमको नमस्कार करते है॥

हे अन्तरयामिन्! हम जो कुछ करते है केवल तुमको धोखा देने को, तुम दाता कहो इस हेतु हम दान करते है तुम परोपकारी कहो इस हेतु

हम परोपकार करते हैं, तुम विद्यावान् कहो इस हेतु हम विद्या पढ़ते हैं अतएव हे अंगरेज ! तुम हम पर प्रसन्न हो हम तुमको नमस्कार करते है ।

हम तुम्हारी इच्छानुसार डिस्पेंसरी करेंगे, तुम्हारे प्रीत्यर्थ स्कूल करेंगे, तुम्हारी आज्ञा प्रमाण चन्दा देंगे, तुम हम पर प्रसन्नहो हम तुमको नमस्कार करते है ॥

हे सौम्य ! हम वही करेंगे जो तुमको अभिमत है, हम बूट पतलून पहिरैंगे, नाक पर चश्मा देंगे, काटा और चिमिचे से टिबिल पर खायेंगे, तुम हम पर प्रसन्न हो हम तुमको प्रणाम करते हैं ।

हे मिष्टभाषिण ! हम मातृभाषा त्याग करके तुम्हारी भाषा बोलेंगे, पैतृक धर्म छोड़ के ब्राह्म धर्मावलंब करेंगे, बाबू नाम छोड़कर मिष्टर नाम लिखवावेंगे, तुम हम पर प्रसन्न हो हम तुमको प्रणाम करते हैं ।

हे सुभोजक ! हम चावल छोड़कर पावरोटी खायेंगे, निषिद्ध मासबिना हमारा भोजन ही नहीं बनता, कुक्कुर हमारा जलपान है, अतएव हे अंगरेज ! तुम हमको चरण मे रक्खो हम तुमको प्रणाम करते हैं ॥

हम विधवा विवाह करेंगे, कुलीनों की जाति मारेंगे, जातिभेद उठा देंगे—क्योंकि ऐसा करने से तुम हमारी सुख्याति करोगे, अतएव हे अगरेज तुम हम पर प्रसन्न हो हम तुमको नमस्कार करते है ॥

हे सर्वद ! हमको धन दो, मान दो, यश दो, हमारी सब वासना सिद्ध करो, हमको चाकरी दो, राजा करो, राय बहादुर करो, कौसिल का मिंबर करो हम तुमको प्रणाम करते है ॥

यदि यह न हो तो हमको डिनर होम में निमन्त्रण करो, बड़ी बड़ी कमेटियों का मिंबर करो । सीनट का मिंबर करो, जसटिस करो, अनरेरी मजेस्ट्रेट करो, हम तुमको प्रणाम करते हैं ॥

हमारी स्पीच सुनो, हमारा ऐसे पढ़ो, हमको वाहवाही दो, इतना ही होने से हम हिन्दू समाज की अनेक निन्दा पर ध्यान न करेंगे, अतएव हम तुम्हीं को नमस्कार करते हैं ।

हे भगवन ! हम अकिञ्चन है और तुम्हारे द्वार पर खड़े रहेंगे, तुम हमको अपने चित्त मे रक्खो हम तुमको डाली भेजेगे, तुम अपने मनमें थोड़ा सा स्थान मेरी ओर से भी दो, हे अंगरेज ! हम तुमको कोटि कोठि साष्टाङ्ग प्रणाम करते है ।।

तुम दशाअवतारधारी हो, तुम मत्स हो क्योकि समुद्रचारी हो और पुस्तक छाप छाप के वेद का उद्धार करते हो, तुम कच्छ हो, क्योकि मदिरा, हलाहल वारांगना धन्वन्तर और लक्ष्मी इत्यादि रत्न तुमने निकाले है पर वहां भी विष्णुत्व नही त्याग किया है अर्थात् लक्ष्मी उन रत्नो मे से तुमने आप लिया है तुम श्वेत वाराह हो क्योकि गौर हो और पृथ्वी के पति हो, अतएव हे अवतारिन् ! हम तुमको नमस्कार करते है ।।

तुम नृसिंह हो क्योंकि मनुष्य और सिह दोनोपन तुम मे है टैक्स तुम्हारा क्रोध है और परम विचित्र हो, तुम वामन हो क्योंकि तुम वामन कर्म्म में चतुर हो, तुम परशुराम हो क्योकि पृथ्वी निक्षत्री कर दी है अतएव हे लीलाकारिन् ! हम तुम को नमस्कार करते है ।।

तुम राम हो क्यो कि अनेक सेतु बाँधे है तुम बलराम हो क्योंकि मद्य-प्रिय और हलधारी हो, तुम बुद्ध हो क्यों कि वेद के विरुद्ध हो, और तुम कल्कि हो क्योकि शत्रु संहारकारी हो, अतएव हे दशविधिरूप धारिन ! हम तुमको नमस्कार करते हैं ।।

तुम मूर्तिमान् हो ! राज्य प्रबन्ध तुम्हारा अग है न्याय तुम्हारा शिर है, दूरदर्शिता तुम्हारा नेत्र है, और कानून तुम्हारे केश है अतएव हे अगरेज हम तुमको नमस्कार करते है ।।

कौसिल तुम्हारा मुख है, मान तुम्हारी नाक है, देश पक्षपात तुम्हारी मोछ है और टैक्स तुम्हारे कराल दंष्ट्रा है अतएव हे अंगरेज ! हम तुमको प्रणाम करते हैं हमारी रक्षा करो ।।

चुंगी और पुलिस तुम्हारी दोनो भुजा है अमेल तुम्हारे नख है, अन्धेर तुम्हारा पृष्ठ है और आमदनी तुम्हारा हृदय है, अतएव हे अंगरेज ! हम तुमको प्रणाम करते है ॥

खजाना तुम्हारा पेट है, लालच तुम्हारी क्षुधा है, सेवा तुम्हारा चरण है, खिताब तुम्हारा प्रसाद है, अतएव हे विराटरूप अंगरेज ! हम तुमको प्रणाम करते हैं ।

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानयागादिकाःक्रियाः ।
अंगरेजस्तव पाठस्य कलां नार्हति षोडशीम् ॥ १ ॥
विद्यार्थी लभते विद्या धनार्थी लभते धनम् ।
स्टारार्थी लभते स्टारम् मोक्षार्थी लभतेगति ॥ २ ॥
एक कालं द्विकालं च त्रिकालं नित्य मुत्पठेत् ।
भव पाश विनिर्मुक्तः अंगरेजलोकं स गच्छति ॥३॥

—:o:—

पाँचवें पैगम्बर !

लोगों दोड़ो, मै पांचवां पैगम्बर हूँ, दाऊ, ईसा, मूसा, मुहम्मद ये चार हो चुके मेरा नाम चूसा पैगम्बर है, मैं विधवा के गर्भ से जन्मा हूँ और ईश्वर अर्थात् खुदा की ओर से तुम्हारे पास आया हूँ इस्से मुझपर ईमान लाओ नहीं तो ईश्वर के कोप में पड़ोगे ॥

मुझ को पृथ्वी पर आए बहुत दिन हुए पर अब तक भगवान का हुक्म नहीं था इस्से मैं कुछ नहीं बोला ! बोलना क्या बल्कि जानवर बना घात लगाए फिरता था और मेरा नाम लोगों ने हूश, बन्दर, लंका को सेना और म्लेच्छ रक्खा था पर अब मैं उन्हीं लोगों का गुरू हूँ क्यौं कि ईश्वर की आज्ञा ऐसी है इस्से लोगों ईमान लाओ ॥

जैसे मुहम्मदादि के अनेक नाम थे वैसे ही मेरे भी तीन नाम है ! मुख्य चूसा पैगम्बर दूसरा डबल और तीसरा सुफैद और पूरा नाम मेरा श्रीमान् आनरेबल हज़रत डबल सुफैद चूसा अलैहुस्सलाम पैगम्बर आखिर कुल जमा है ॥

मुझ को कोह चूर पर खुदा ने जल्वा दिखलाया और हुक्म दिया कि मैंने पैग़म्बर किया तुझ को तू लोगों को ईमान में ला। दाऊद ने बेला बजा के मुझे पाया तू हारमोनियन बजावैगा, मूसा ने मेरी खुदाई रौशनी से कोहतूर जलाया तू आप अपनी रौशनी से जमाने को जला कर काला करैगा, ईसा मर के जिया था तू मरा हुआ जीता रहैगा, मुहम्मद ने चाद को बीच से काटा तू चांद का कलक मिटा अपनी टीका बनावैगा।

(खुदा कहता है) देख मूर्तिपूजन अर्थात बुत परस्ती को जमाने से उठा देना क्योंकि मैंने हाफ् सिविलाइज्ड किया दुनियां को पूरा तुझ को, जो शराब सब पैगम्बरों पर हराम थी मैंने हलाहल किया तेरे पर, बल्कि तेरे मज़हब की निशानी है जो तेरे आसमान पर आने के बाद रूए ज़मीन पर कायम रहैगी क्यौंकि यद्यपि "तेरा राज्य सर्व्वदा न रहैगा पर यह मत यह्रा सर्व्वदा दृढ़ रहैगा ॥"

(खुदा कहता है) मैंने हलाल किया तुझ पर गऊ, सूअर, मेढ़क, कुत्ता वगैरह सब जानवर जो कि हराम हैं, मैंने हलाल किया तुझ पर, अपने मज़हब के वास्ते झूठ बोलना, और हुकुम दिया तुझ को औरतों की इज्ज़त करने. और उनको अपने बराबर हिस्सा देने की, बल्कि यारों के संग जाने की, और सिवाय पब्लिक प्लेसो के कोहे चूर पर जहा मैंने जलवा दिखाया तुझ को तीन आरामगाह फ़रिश्तों से बनवा कर तुझे बख्शी और तुझ पर हलाल की जिन तीनों का नाम कुर्सी, झुर्सी और दगली है ॥

(खुदा कहता है) देख, खबरदार, मुँह वगैरह किसी बदन को साफ न रखना नहीं तो तुझे शैतान बहका देंगे, लिबास सियाह हमेशः पहिरना और मेरी याद में सिर खुला रखना ॥

मै खुदा के इन हुक्मों को मान कर तुम्हारे पास आया हूँ, मेरा कहा मानों और ईमान लाओ मै खुदा का प्यारा पुत्र, माशूक, जोरू, नायक नहीं हूँ बल्कि खुदा का दूसरा हूँ । यह इज्ज़त किसी पैगम्बर को नहीं मिली थी ॥

लोगों ! मेरा कहा मानों खुदा मुझसे डरता है क्यौंकि मैं प्रच्छन्न नास्तिक हूँ पर पैगम्बरिन के डर से आस्तिक हो गया हूँ इस्से खुदा को हमेशः हमारी दलीलों से अपने उड़ जाने का डर रहता है तो जब खुदा मुझ से डरता है तब उसके बन्दो तुम मुझसे बहुत ही डरो ॥

मेरे प्यारे अगरेजो ! तुम खौफ मत करो मै तुमको सब गुनाहो से बरी कराऊँगा क्यौकि नाशिनैलिटी बड़ी चीज़ है पैगम्बरिन और तुम्हारा रंग एक है इस्से मै तुम्हारे पापों को छिपा दूगा ॥

प्यारे मुसलमानों ! में कुछ तुम से डरता हूँ क्यौंकि तुमको भार डालने में देर नहीं लगती इस्से मै तुम्हारी बेहतरी के वास्ते अपनी धर्म पुस्तक में लिख जाऊँगा कि हमारे सक्सेसर लोग तुम्हारी खातिर करैं तुम्हारे न पढ़ने पर अफसोस करैं और तुम्हारे वास्ते स्कूल और कालेज बनावैं ॥

मगर मेरे मेमने हिन्दुओं ! तुम को मै सब प्रकार नीच समझूंगा क्योंकि यह वह देश है जो ईश्वर के क्रोध रूपी अग्नि से जल रहा है और जलैगा और ईश्वर के कोप से तुम्हारा नाम जीते हुए, हाफ सिविलाइज्ड, रूड, काफिर बुतपरस्त, अघेरे मे पड़े हुए, वारबरस, वाजिबुल कत्ल होगा ।

देखो हम भविष्य बानी कहते है तुम रोते और सिर टकराते भागते भागते फिरोगे, बुद्धि सीखते ही नहीं बल नाश हो चुका है एक केवल धन बचा है सो भी सब निकल जायगा, यहाँ महँगी पड़ेगी पानी न बरसैगा, हैजा डैगू वगैरह नए नए रोग फैलैंगे, परस्पर का द्वेष और निन्दा करना तुम्हारा स्वभाव हो जायगा, आलस छा जायगी, तब तुम उसके कोप अग्नि से जल के खाक के सिवा कुछ न बचोगे ।

पर प्यारों ! जो मुझ सच्चे पैगम्बर पर ईमान लावेगा वह छुड़ाया जायगा क्यौंकि मै खुशामद पसद और घूस लेने वाला जाहिरा नहीं हूँ मैं ईश्वर का सच्चा पैगम्बर और दुनियां का सच्चा बादशाह हूँ क्यौकि सूरज को खुदा ने रौशनी मेरे लिये इनायत की, चाद मे ठंढक सिर्फ मेरे लिए बख्शी गई और ज़मीन आस्मान मेरे लिए पैदा किया बल्कि फरिश्ते भी मेरे लिए बनाए गए ।

ईमान लाओ मुझ पर, डाली चढ़ाओ मुझको, जूता उतार के आओ मेरी मजारेपाक पर, पगड़ी पहन कर आओ मेरे मकबरे में, इनाम दो

इनको और धक्का खाऊँ उनका जो मेरे मुज़ाविर है क्यौंकि वे मूजिव होगे तुम्हारी नज़ात के, और जो कुछ मैं कहूं उसे सुनकर हुज़ूर, साहब बहुत ठीक फरमाते है, बजा इरशाद, वेशक, ठीक है, सत्त वचन जा आज्ञा, जे आज्ञा, जो आज्ञा, इसमे क्या शक, ऐसा ही है, मेरे मालिक, मेरे बाबाजान सब सच फरमाते हौ—क्यौंकि जो मै कहता हूँ वह ईश्वर कहता है; और मेरे अनादरो को सहो अगर मेरी दरगाह में तुम्हे गरदनिया दी जाय तो उसकी कुछ लाज मत करो फिर घुसो क्योकि मेरी दरगाह से निकलना दुनियां से निकल जाना है।

देखो शराव पिय, विधवाविवाह करो, बालपाठशाला करो आगे से लेने जावो, बाल्यविवाह उठाओ, जातिभेद मिटाओ, कुलीन का कुल सत्यानाश में मिलाओ, हौटल में लव करना सीखो, स्पीच दो, क्रिकेटखेलो, शादी में खर्च कम करो, मेमबर बनो, मेम्बर बनो, दरबारदारी करो, पूजा पत्री करो, चुस्त चलाक ब नो, हम नही जानते को हम नही जानता कहो, चक्कर दार टोपी पहिनो, वासिर खुला रक्खो पर पौशाक सब तंग रक्खो, नाचवाल थियेटर अटा गुड़गुड वंक डिवी सिवी मे घरो में लाओ क्यौकि ये काम मूजिब होंगे खुदा और मेरी खुशी को।

शराब पियो, कुछ शंका मत करो, देखो मै पीता हूँ क्यौकि यह खुदा का खून है जो उसने मुझे पिलाया और मैंने दुनियां को और यह उसके दोनों वादशाहत की निशानी है जो बाद मेरे बहुत दिन तक कायम रहैगी क्यौंकि उसने हुक्म दिया है कि औरों की तरह तू मकान बहुत पक्का न बनवाना क्यौंकि दुनिया खुद नापायदार है मगर मेरे खून के बोतलो के टुकड़े जो कि (खुदा कहता है) मेरी हड्डियां है बहुत दिनों तक न गलैगी और मेरे सच्चे राज की निशानी कायम रहेगी।

देखो मेरा नाम चूसा है क्यौंकि मैं सब का पापरूपी पैसा चूस लेता हूँ क्योंकि खुदा ने फरमाया है कि मेरे बन्दे पैसा के बहकाने से गुनाह करते

हैं अगर उनके पास पैसा न रहै तो खुदा गुनाह न करे इस्से तू सब स पहिले इनका पैसा चूस ले।

मेरा दूसरा नाम डबल है क्योंकि डबल हिन्दी मे पैसे को कहते है और अंगरेजी मे दूने को और पच्छिम मे उस बरतन को जिस्से घी वा अनाज निकाला जाता है और मेरा तीसरा नाम सुफैद है क्योंकि मै रौशनी बख्शने वाला हूँ और दिल मेरा साफ चिट्टा चमकीली चीनी की जात है और चमड़ा मेरा गोरा है और भी मैं सफैद करूगा लोगों को अपने दीन की चादनी से इनलाइटेन्ड करके।

मेरे पहाड़ का नाम कोहेनूर है क्योंकि मैं सब के पापी दिलों को और पापों को तथा प्रैजुडिसो को लोगो के बल और धन को चूर करूंगा, और मेरी पहली आरामगाह कुर्सी है क्योंकि अब वहा की आबहवा साफ होकर बेवकूफी की शिकायत रफा हो गई और दूसरी क़ुरसी है जहा जलती आग पर मेरे से पैगम्बर के सिवा दूसरा नहीं बैठ सकता और तीसरी दगली है उसमें चारो ओर दगल भरा है और बीच मे मेरा सिंहासन है।

जहा पर खुदा ने हलाल किया है शराब, बीफ, मटन, बग्गी, दगल, फसल, नैशानीलटी, लालटैन, कोट, बूट, छड़ी, जेबीघड़ी, रेलधुआकस, विधवा, कुमारी, परकीया, चाबुक, चुरट, सड़ीमछली, सडी पनीर, सड़े अचार, मुँह की बू, अधोभाग के केश, बिना पानी के मल धोना, रूमाल मौसी, मामी, बुआ, चाची मै अपनी बेटी पोतियो के, कजिन, फ्रेंड लेपालट की बहू, खानसामा खान सामिन, हुक्का, थुक्का, लुक्का, बुक्का, और आजादी को हराम किया बुतपरस्ती, बेईमानी, सच बोलना, इन्साफ करना, धोती पहरना, तिलक लगाना, कंठी पहरना, नहाना, दतुअन करना, स्वच्छन्द होना, उदार होना, निर्भय होना, कथा पुराण, जातिभेद बाल्यविवाह, भाई वा मा वा पिता के साथ रहना, मूर्तिपूजन तथा आर्थोडाक्स की सुहबत सच्ची प्रीति, परस्पर उपकार, आपस का मेल बुरीं बातैं, घातैं, फातैं, छातैं और प्रेजुडिस को।

लोगो ! दौड़ो ईमान लाओ मुझ पर, देखो पीछे पछताओगे और हाथ मलते रह जाओगे मैं ईश्वर का प्यारा दूसरा और पाँचवाँ पैगम्बर केवल तुम्हारे उद्धार के वास्ते पृथ्वी पर आया हूँ ईनामो लाओ मुझपर हुकम मानो मेरा, मेरा दाहिना हाथ जो तुम लोगो के सामने उठा है खुदा का हाथ है इस को सिजदा करो, झुको, अदब करो, ईमान लाओ और इस शराब को खून समझकर पिओ पिओ पिओ ॥

[सन् १८७३ ई०]

सर्वैजात गोपाल की

[एक पंडित और एक क्षत्री आते हैं।]

क्ष०—महाराज देखिये बड़ा अन्धेर हो गया कि ब्राह्मणो ने व्यवस्था दे दी कि कायस्थ भी क्षत्री हैं, कहिए अब कैसे काम चलैगा।

पं०—क्यो इसमे दोष क्या हुआ ? "सवै जात गोपाल की" और फिर यह तो हिन्दुओं का शास्त्र पनसारी की दुकान है और अक्षर कल्प वृक्ष है इसमे तो सब जात की उत्तमता निकल सकती है पर दक्षिणा आप को बाएं हाथ से रख देनी पड़ेगी फिर क्या है फिर तो सवै जात गोपाल की।

क्ष०—भला महराज जो चमार कुछ बनना चाहै तो उस (को) भी आप बना दीजियेगा।

पं०—क्या बनना चाहै

क्ष० —कहिये ब्राह्मण ।

पं०—हां चमार तो ब्राह्मण हई है इसमें क्या सन्देह है ईश्वर के चर्म से इनकी उत्पत्ति है इनको यमदंड नहीं होता चर्म का अर्थ ढाल है इससे ये दंड रोक लेते है चमार मे तीन अक्षर है 'च' चारो वेद 'म' महाभारत (र) रामायन जो इन तीनों को पढ़ावै वह चमार पद्म पुराण में लिखा है इन चर्मकारो ने एक बेर यज्ञ किया था उसी यज्ञ में से चर्मरावती निकली

है अब कर्म भ्रष्ट होने से अन्त्यज हो गए हैं नहीं तो है असिल में ब्राह्मण देखो रैदास इनमें कैसे भक्त हुए हैं लाओ दक्षिणा लाओ सवै०

क्ष०—और डोम

पं०—डोम तो ब्राह्मण क्षत्रिय दोनो कुल के हैं विश्वामित्र वशिष्ठ वंश के ब्राह्मण डोम हैं और हरिश्चन्द्र और वेणु वंश के क्षत्रिय डोम है इसमें क्या पूछना है लाओ दक्षिणा सवै०

क्ष०—और कृपानिधान! मुसलमान!

पं०—मिया तो चारो वर्णों मे है वाल्मीकि रामायण में लिखा है जो वर्ण रामायण पढ़ै मीया हो जाय!

पठन् द्विजो वाग् ऋषभत्वमीयात् ।
स्यात् क्षत्रियो भूमिपतित्वमीयात् ॥

अल्लहोपनिषत् में इनकी बड़ी महिमा लिखी है द्वारिका में दो भाँति के ब्राह्मण थे जिनको बलदेव जी (मुशली) मानते थे उनका नाम मुशलिमान्य हुआ और जिन्हें श्रीकृष्ण मानते उनका नाम कृष्णमान हुआ अब इन दोनों का अपभ्रंश मुशलमान और कृस्तान हो गया।

क्ष०—तो क्या आप के मत से कृस्तान भी ब्राह्मण हैं?

प०—हई हैं इसमे क्या पूछना—ईशावास उपनिषद में लिखा है कि सब जग ईसाई है।

क्ष०—और जैनी?

पं०—जैनी ब्राह्मण "अर्हन्नित्यपि जैनशासनरता" जैन इनका नाम तब से पड़ा जब से राजा अलर्क की सभा में इन्हे कोई जै न कर सका।

क्ष०—और बौद्ध?

पं०—बुद्धिवाले अर्थात् ब्राह्मण।

क्ष०—और धोबी।

पं०—अच्छे खासे ब्राह्मण जयदेव के जमाने तक धोबी ब्राह्मण होते थे। "धोई कविः क्ष्मापतिः" ये शीतला के रज से हुए हैं इस से इन नाम रजक पड़ा।

क्ष०—और कलवार?

पं०—क्षत्रिय है शुद्ध शब्द कुलवर है भट्टी कवि इसी जाति में था।

क्ष०—और महाराज जी कुँहार।

पं०—ब्राह्मण-घट खर्प्पर कवि था।

क्ष०—हां हा वेश्या।

पं०—क्षत्रियानी—रामजनी, कुछ बनियानी अर्थात् वैश्या!

क्ष०—अहीर।

पं०—वैश्य—नन्दादिको के बालकों को द्विजाति संस्कार होता था "कुरू द्विजाति संस्कारं स्वस्तिवाचनपूर्व्वक" भागवत में लिखा है।

क्ष०—भुइंहार

पं०—ब्राह्मण

क्ष०—दूसर

पं०—ब्राह्मण, भृगुबश के ज्वालाप्रसाद पंडित का शास्त्रार्थ पढ़ लीजिये।

क्ष०—जाट

पं०—जाठर क्षत्रिय।

क्ष०—और कोल।

प०—कौल ब्राह्मण

क्ष०—धिरकार

प०—क्षत्रिय शुद्ध शब्द धैर्यकार है।

क्ष०—और कुनबी और भर और पासी

पं०—तीनो ब्राह्मण वंश में है भरतद्वाज से भर, कन्व से कुनबी, पराशर से पाशी।

क्ष०—भला महाराज नीचों को तो आपने उत्तम बना दिया अब कहिये उत्तमो को भी नीच बना सकते हैं ?

पं०—ऊँच नीच क्या सब ब्रह्म है सब ब्रह्म है। आप दक्षिणा दिये चलिए सब कुछ होता चलैगा सर्बै०।

क्ष०—दक्षिणा मै दूँगा भला आप इस विषय मे भी कुछ परीक्षा दीजिए।

पं०—पूछिए मैं अवश्य कहूँगा।

क्ष०—कहिये अगरवाले और खत्री।

पं०—दोनों बढ़ई है जो बढ़ियाँ अगर चंदन का काम बनाते थे उनकी संज्ञा अगरवाले हुई और जो खाट बीनते थे वे खत्री हुए वा खेत अगोरने वाले खत्री कहलाए।

क्ष०—और महराज नागर गुजराती !

प०—सपेरे और तेली नाग पकड़ने से नागर और गुल जलाने से गुजराती।

क्ष०—और महराज भुइंहार और भाटिये और रोड़े।

पं०—तीनो शूद्र भूजा से भुइंहार, भट्टी रखने वाले भाटिये, रोड़ा ढोने वाले रोड़े।

क्ष०—(हाथ जोड़कर) महाराज आप धन्य हौ। लक्ष्मी वा सरस्वता जो चाहै सो करैं चलिए दक्षिणा लीजिए।

प०—चलो इस सबका फल तो यही था।

(दोनो गए)

[सन् १८७३]

वधुस्तवराज

हे ललना ललाम—हे कुल कामनियों की आदर्श स्वरूप—हे अनेक गुणगारिमा विशिष्ट—तुम अपने स्वाभाविक सहज गुण से चिराभ्यासी योगियों की सहिष्णुता को सहज ही में जीत लेती हो। हे वंश प्ररोह जननी यह लोक परलोक दोनों मे सुख देने वाले शुद्ध सन्तान के पैदा होने की बीज भूमि तुम्हीं हो" सन्ततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे" देवी तुम्हारे संख्यातीत अनगिनत दिव्यगुणों को गिन चुकताकर देने की किसकी सामर्थि है। हे बड़े कुनवे वाले गृहस्थों के घर की दीप-शिखा-सी समुज्ज्वल वेशधारिणी विविध वेशभूषा विहारिणी। बेटी के भाव में जब तक तुम अपने बाप के घर को सुशोभित करती रहती हो तब तक पिता के घर का तुम्हारा अखण्ड स्वर्गीय राज्य को भला किसकी सामर्थि की खण्डित कर सके? भौजाईयो पर तुम्हारी सतत हुकूमत उद्धत स्वच्छन्द विहार और तुम्हारी अठखलियो का निरूपण लेखिनी की शक्ति के बाहर है। पर ससुराल के लिये देहली से बाहर पाव रहते ही एक बारगी पतोहूपन सक्रामित हो न जानिये, पहले की बाते किस कन्दरा में जा छिपती है, औद्धत्य सहसा विनीतभाव में परिणत हो जाता है स्वच्छन्दता भूत के आवेश सी उतर कौन जाने कहाँ गायब हो जाती है। देवी यदि तुम्हें लोकोत्तर सहिष्णुता "बरदाश्त' का बल या भरोसा न होता तो थोड़ी थोड़ी बात मे खांव खाव कर दौडने वाली सास तथा ननदों का हठ और जोर जुल्म कैसे सहज में सहने के लायक होता—दुर्गा पाठ में लिखा है।

"विद्याः समस्तास्तवः देवि भेदाः स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु"

जितनी विद्याये सब तुम्हारे रूप हैं संसार मे जितनी स्त्रिया वे भी सब तुम्हारी ही प्रतिकृति हैं प्रश्नकर्ता मार्कण्डेय ऋषि इतना ही गोल-मगोल कह चुप हो गये, आगे साफ-साफ कहने की हिम्मत न कर सके। हम कहते हैं देवियों में भी कई तरह की है ; जिनमें एक महाकाली होती है। जो जितना सोम्य और सद्गुण-वाली है वे सब महालक्ष्मी और सरस्वती हो बहू के रूप में घर की लक्ष्मी बन आती हैं और घर को देव मन्दिर बना देती है। पर जो चण्डी कर्कशा नित्य कलहकारिणी फूहर मैली कुचैली है वह महाकाली के रूप से घर में प्रवेश कर घर को श्मशान तुल्य कर देती है—एक एक आदमी की जिन्दगी उभारू कर दी जाती है "जन्माष्ट' कुभार्या" तस्मात् हे चण्डी तुम अपना चण्डरूप का संकोच कर सौम्य दृष्टि से हमें आप्यायित करती रहो तो इसी से हमारा कल्याण है बहुधा जो गृहस्थ हैं जिनकी अपने कुल की लाज निभाने का बड़ा ख्याल है वरन् सदा इसी चिन्ता में व्यग्र रहते हैं कि चादरे के चार खूंट है न हो किसी खूंट में दाग लग जाय, इसलिये उद्धत हो जाने से मुंह मोड़ सदा सबसे नम्र रहते हैं मानो शील-संकोच के बोझ से दबे जाते हो ऐसे ही के घर को देवी तुम बहू बन सुशोभित करती हो। जिनमें ये पूर्वोक्त भाव नहीं आये अपनी हर एक बातों ते घमण्ड से तीनों लोक को तिनका तु य समझते हैं वहा उनके संहार के लिये तुम काली सी कराल काल रात्रि हो प्रवेश करती हो। तुम्हारे चण्ड रूप का प्रकाश वहा पहूँचते ही सब छिन्न-भिन्न होने लगता है और जल्द उस घराने को इतिश्री हो जाती है। इससे हे देवी। यह शक्ति आप ही को प्राप्त है चाहे सोने के पाव से घर में प्रवेश करो चाहे लोहे के। आपका स्वर्णपद गृहस्थी में समस्त अभ्युदय दायक ह भाग्यवानों के घर की लक्ष्मी बनने को आप सुवर्ण पद से प्रवेश करती हो. दरिद्रों के यहां आप लक्ष्मी की बड़ी बहन बन कर आती हो। जहा आलसी निरूद्यमियो का दल मैले कुचैले भेष से

पत्नीस्तव

हे महाराणी पत्नी तुम्हे नमस्कार है तुम संसार का बन्धन महा-जगड़वाल की मूलाधार हो। एक वार विवाह कर तुम्हारे जाल में फॅस जाना चाहिये फिर क्या सामर्थि कि इस छुंदान को तोड़ कोई कही भाग सके ! यह तुम्हारी ही कृपा है कि आदमी एक जोरु कर खुद संसार भर की जोरू आप बनाता है अति अल्प वय दस ही वारह वर्ष की उम्र मे तुम्हारे जाल मे फंसने से हिन्दू जाति को कमजोरी, ही बल क्षीण, वीर्य हीन-सत्व हो जाने का तुम्ही मुख्य कारण हो। हम लोग अल्प बुद्धिवाले किस गिनती मे हैं त्रिकालज्ञ पाणिनि ऐसे महार्षियो ने भी तुम्हारी कदर की है "पत्युर्नो यज्ञ संयोगे' पति शब्द को तुक् का आगम हो यज्ञ के सयोग मे। तात्पर्य यह कि धर्मशास्त्र मे "पत्न्या सहाधिकारात्" के आधार पर यज्ञ दान आदि बड़े-बड़े धर्म के कामों मे तुम्हे अपने सग ले तभी पुरुश को उन उन धर्म के कृत्यां का अधिकार है।

शास्त्रवालो ने तुम्हारा महत्व और गौरव यहाँतक माना है कि "अना-श्रमी न तिष्ठेत्" विना गृहस्थ हुये न रहैं ऐसा लिख गये है, जो इस कारण संयुक्तिक भी मालुम होता है कहा है:—

"ऋणानिन त्रीण्यपाकृतमनो मोक्षे निवेशयेत्"

विद्या पढ़, पुत्र पैदा कर, वडे वडे यज्ञ और दान के उपरान्त तब मन को मोक्ष मे लगावे अर्थात संन्यासग्रहण करे। ऐसा न होता तो कितने

ऐसे सभ्य समाज के सिरमौर सशोधन और देश हित का वीड़ा उठाये महा महन्त माननीय मान्यवर क्यों सदैव पत्नी-पत्नी रटते' उनके वद्धांजलि वशंवद रहते और बिना उनकी आज्ञा एक कदम आगे पाँव न रखते। तस्मात् हे पत्नि। लोक और वेद दनो तुम्हारी नमस्या और अपचिति मे सावधान और प्रवण है। हे पत्नि! तुम्हारे कोमल अंग-सौष्टव का सपर्क, तुम्हारे अधरामृत का पान, वाचाल कोकिला लाप, कुहू-नाद को तिरस्कार करने वाला तुम्हारे कोकिल-कण्ठ-निर्गत शब्दो को जिसने अपने कानो का अतिथि न किया उस लङ्गूरे का जीवन ही क्या? कारण रस यन द्वयक्षरात्मक पत्नी शब्द सुन और तुम्हारा मोहिनी रुप देख कौन ऐसा यु१क है जो अप्यायित हो आनन्द निर्भर न हो जाता हो।

हे आदि रस की अधिष्ठात्री। शूर-वीर साहब लोग मुल्क के इन्तिजाम की चतुराई मे कहीं से नहीं चूकते पर तुम्हारे समस्त नाज नखरों पर अपना अधिकार जमाना तो दूर रहा एक साधारण गौन के इन्तिज़ाम मे उनकी सब भूल जाती है छोट-भइये औसत दर्जे की तनखाह पाने पर भी सदा कर्जदार बने रहते है।

जिस घर मे तुम अपना सौम्य-रूप धारण किये हो वहाँ समग्र संपत्ति हँस रही है जहां तुम्हारा भयंकर प्रचण्ड और उदण्ड रूप घर के एक-एक प्राणी को विकल किये है वहा दरिद्रता का वास रूदन और क्रदन का सहकारी हो हाहाकार मचाये हुये है। सेवा करने मे दासी, एकान्त मे सलाह देने वाली मित्र, घर-गृहस्थी की बातो मे उपदेश देनेवाली गुरू, पति-भक्ता, पति प्राणापत्नी उन्हीं को मिलती है जिन्होने किसी पुण्य तीर्थ में अच्छी तपस्या कर रक्खा है। गजगामिनी जिसकी चाल के आगे हसो की अपनी चाल का घमंड चला जाता है, जिस पिक वैनी की वचन माधुरी सुन कोकिला लज्जित हो मौन-व्रत धारण कर' लेती है जिसके नव-नीत कोमल अंगों के साथ होड़ होने में चमेली की कोमलता पत्थर-सी

कड़ी मालुम होती है, शोभा और सौन्दर्य की अधिष्ठात्री लक्ष्मी जिसके लावराव जलधि की लहरी में अचम्भे में आप गोता खाने लगती हैं:—

"एक नारी सुन्दरी वा दरी वा"

भर्तृहरी की इस उक्ति ऐसी ही रुह धार्मिणी के मिलने से सुघटित होती हो। इत्यादि, इस पत्नी के गुणार्णवि को कहाँ तक पल्लवित करते जाँय। इसकी फल स्तुति में विश्वगुणादर्श का यह श्लोक उपयुक्त मालुम होता है:—

व्यापारान्तरमुत्सृज्य वीक्षमाणो बधुमुखम्।
यो गृहेष्वेव निद्राति दरिद्राति स दुर्मतिः॥

सब काम काज छोड़ जो वनिता-भक्त पत्नी के मुख की छबि निरखता हुआ घर में सोया करता है वह मूर्ख अवश्यमेव दरिद्र का दास बन जाता है।

[हि० प्र० मार्च १६०४]

कौआपरी और आशिकतन

आज हमारे पंचमहाराज गोपियों में कन्हैया के परतो घर कौअपरियों के बीच आशिक़तन बनने की ख्वाहिश मन में ठान भोर ही को घर से चल पड़े—

"मन लगा गधी से तो परी क्या चीज़ है"

यह मत समझो हमारे पंचमहाराज आशिकतनी में किसी से पीछे हटे हुये है घर में चाहे भूँजी भाग न हो दिल दिमाग तो सात ताड़ की ऊचाई से भी अधिक ऊँचा है। नेउले का सा मुँह सूरत में साक्षात् छाया सुत, किन्तु सौन्दर्य और हुस्न मे कोटि कन्दर्प लजावन तरहदारी मे मटियाबुर्ज के नौबान किस हकीकत मे। अबे ओ खड्डेदार बुल्ले। क्या तुझे भी आशिकतन बनने का हौसिला चर्राया क्या? सूरत लंगूर मगर दुम की कसर है। दुम न हो दुमदार सितारे को नोच कर ला दूँ। अरे ओ बीचुड्डो! अञ्चनगिरि पर्वत की श्यामता का अनुहार करने वाले तुम्हारे अङ्ग-प्रत्यङ्ग की छवि पर तन मन सब वारै ये मुफलिस कल्लाच होकर भी आशिकतनों में नाम लिखाये तुम्हारे पीछे खराब खस्ता हैं, तुम्हारे लिए वेकल हैं। इश्क के फन्दे मे गिरफ्तार बेवस है, असीर हैं, वेकल इतनेकि कलकत्ता को कौन कहे कालापानी छान आने पर भीतुम उन्हें अपना दासानुदास चरण सेवक कर लेने को राज़ी हो तो उन्हें कोई उज़र नहीं है। अब तो इस कूचे मे पाँव रख चुके हैं। आशिकों की फिहरिश्त में

नाम दर्ज हो गया। लोकदिन्दा और बदनामी को कहाँ तक डरैं। ओखली में सिर दै मूसलो की धमक से कहां कोई बच सकता है। शरम को शहद समझ चाट बैठे। बिना बेहयाई का जामा पहिने आशिक के तन जेब नहीं—

"गाढ़े इश्क़ के हैं हम आशिक।
तेरी जुदाई मे मल मल के हाथ रहते हैं॥"

हाय मेरी कोआपरी - कौआपरी - कौआपरी - अफसोस जर दिया ज़नानो के पास माल न हुआ नहीं तो कौआपरियों की पलटन खड़ी कर हम उसके कपतान बनते या तो शाहवाजिद अली किसी जमाने में हुये थे या अब हमी इस वख्त देख पड़ते। अच्छा तो क्या बिलाई से भैंस लगती हैं किसी मालदार को चलकर फंसावै ओ हो! आप है-पण्डिअमुक! अमुक ! अमुक। बाबू फला। फला। फला। मिस्टर सो ऐण्ड सो। सो ऐण्ड सो। सो एण्ड सो ! लाला साहब वगैरह। वगैरह। ओः खोः। आप क्या है–बला है। करिश्मां है। तिलस्मा हैं। फिनामिना है आश्चर्य और अद्भुत तथा लोकोत्तर वस्तु का सन्दोह है। उठती उमर और जग जानी जवानी के जोश के उफान में बीबी लोकमोहिक के नवासे हैं।

"चुलबुल चालाक चतुर चरपर छिन-छिन में होत।
छैले छबीले छिछोरे ओर छोर के"॥

क्या कहना आप ही तो हैं। भला यह तो कहिये आपने कितने करा-टाप और पदाघात के पश्चात पदाधिरूढ़ हो अनङ्ग अखाड़े की पहलवानी प्राप्त की:—"सदा शठः शठापालं मल्लो मल्लाय शक्ष्यति"

सींक से पतले आप के भुजदण्ड आप की पहलवानी की गवाही दे रहे हैं! मुरछल आप हाथ में क्यों लिये रहते हैं! नहीं नहीं यह तो नीम की टेहनी है क्या कौआपरियों में नवधाभक्ति के साधन का योग सिद्ध हो गया!

'स्मरणं कीर्तनं विष्णोरर्चनं पादसेवनम्"

धनुषकार कमान सी झुकी हुई कमर स भी बोध होता है आप की तपस्या सिद्ध हो गई महाप्रसाद पाय गये—

लक्षाणामब्दमेकन्तु धूम्रपानमधोमुखी ।

उमेति मात्रा तपसो निषिद्धा पश्चादुमाख्या सुमुखी जगाम ॥

सुमुखी नहीं मुमुखो कहिये—सुमुख, दुर्मुख, कृष्णमुख, घोड़मुख, लोखरी मुख, वीघमुख, मुख के जितने विशेषण जोड़ते जाइये हम सब का एक-एक उदाहरण आप को देते जांयगे । गरज कि पञ्चमहाराज अशिकतनी के महकमे को बीच तक टटोल इसे अथाह और वे ओर छोर पायऊत्र गये और निश्चय किया कि इन कौआपरियों के फन्दे में पड़तन और धन दोनों का तहस-नहस है । ईश्वर शत्रु को भी इनसे बचाये रक्खे यही सब सोचते-विचारते घर लौटे ।

[हि० प्र० अप्रैल १८९८]

मेला-ठेला

मसल है—

"काजी काहे दुबले शहर के अन्देशे"

जमाने भर की फिकिर अपने ऊपर ओढ़े कुढङ्गों के कुढङ्ग से कुढते हुए मनीमन चूरंचूर नहूसत का बोझ सिर पर लादे पंच महाराज उदासीन घर बैठे रहा करते थे। आज न जानिये क्यो मेला देखने का शौक चर्राया तो दो घड़ी रात रहते भोर ही को खूब सजधज पुराने ठिकरे पर नई कलई के भाँति तेल और पानी से बदन चुपड़ घर से निकल चल खड़े हुये। मेला क्या देखने गये मानों अपना मेला औरो को दिखाने गये खैर पढ़ने वाले जैसा समझें। एक ओर निपटते चलिये—"चलो हटो बचो" "सभा मे दोस्तो इन्दर की आमद है" 'मस्तो सम्हल बैठो जरा हुशियार हो जाओ।" भिंगुरू साव की सवारी है! खड्डेदार जुल्ला सेर भर मास हो तो रफ़ू हो, उस पर खूबसूरती और नजाक्त के नखरे किससे देखे जाँय? अबे ओ। कोचवान सोता है क्या? जरा चेतकर जोड़ी हाँक। जानता नही, मेला है झमेला है, तमाशबीनों की भीड़ का रेला है। यह दूसरे कौन है—राय दुर्लभचन्द के पोते राय सुलभचन्द।

"नाम लखन चन्द मुंह कुकरै काटा!"

मानों मास का लोदा थूहा सा रक्खा हुआ। विधाता की अद्भुत सृष्टि का एक नमूना। किस मतलब से गढ़ा गया, कौन बतला सकता है?

कुम्हार का बर्तन होता, बदल लिया जाता। हाँ जाना, ब्रह्मा महाराज इस को मढ़ते समय दो चित्ते हो दुबिधे मे पड़े थे या—

"लुक ऐंड लाफ"—हाथ में लिये रहे हो।

अब यह दूसरे कौन आये–रियासत की गठरी का बोझ सिर पर लादे राय कंबख्तचन्द के बली अहद बदबख्त बहादुर। जरदी मुंह पर छाई हुई सीकिया पहलवान क्यो हो रहा है? क्या इसको बदन सुखाने वाला रोग हो गया है? नहीं नहीं ऐयाशी और शराब ने इसका यह हाल कर डाला कुन्दे नातराश यह दूसरा इसके साथ कौन है—नरकू महराज के सगे नाती, अक्षर से भी कभी भेंट हुई है, कोन काम है? न हम पढ़े न हमरे आजा पढ़ै-लिखै क्या सुआ-मैना है, पढ़ा लिखा तू पच।

'बह बह वहै बैलवा बैठे खांय तुरंग।"

हमारे कुल मे पढ़ना-लिखना नही सोहता। हमारे बाप के छोटे ताऊ गठरी भर पोथी पढ़ डालिन। रहा जवानै उजीह गये। तब से हमारे तात चरण का सिद्धान्त हो गया है—

"हम पंचन के वंश में कोई नहीं विद्वान।
भाग पियैं गाजा पियैं जय बोलै जिजमाम॥"

"चपलान् तुरगान्परिनर्तयतः पथि पौर जनान्परिमर्दयतः।"

ये कौन हैं–सींग पूछ कटाय बछड़ों में दाखिल अहल योरप। पूरे जेन-टिलमेन शाह पनारूदास।

"बाबू न कहना फिर कभी मिस्टर कहा जाता हैं हम।
कोट पतलून बूट पहने टोकरी सिर पर धरे।
साथ मे कुत्ते को लै के सैर को जाता है हम।
दियानतदार अपने कौम मे मशहूर है।
सैकड़ों लोगों से चन्दा लेके खा जाता है हम।
खाना-पीना हिन्दुओं का मुझको खुश आता नहीं।

वीफ, काँटा, चमचा से होटल में जा खाता है हम।
भांग, गाँजा, चर्स, चंडू घर मे छिप छिप पीते थे।
अब तो वे खटके हमेशा ह्विस्कि दरकाता है हम।"

"पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा पतित्वा धरणी तले।
उत्थाय च पुनः पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।"

"एकेन शुष्क चणकेन घटं पिवामि गंगा पिवामि सहसा लवणार्द्रकेण।"

सच है—

"एकां लज्जां परत्यज्य त्रैलोक्य विजयी भवेत्।"

शाबास गाज़ी मर्द ! अच्छे वश उजागर कुल की कलगी पैदा हुये।

"वंशस्याग्रे ध्वजो यथा।"

लू लू, है जाने दो, इस मुछन्दर को। लो इधर ध्यान दो छल्लेदार बालो मे तेल टपकता हुआ, पान के बीड़ो से गाल फूका मानों वतौड़ी निकली हो, आड़ा तिलक मुंह चुचुका, आशिकतन, हिमाकत नज़ाकत शानोशौकत में लासानी। घर मे भूँजी भॉग भी नहीं, पर बाहर मानो दूसरे नौवाबशाह वाजिदअली। अरे खिलौनेवाले बाबू साहब को खेलौना दे। चटुआ भी तेरे पास है ? दे बाबू साहब चटुआ चाटेंगे। चरखी है। क्या लेगा ? उः पाकेट खाली।

"दान पुण्य को कौड़ी नाहीं शिवकोटी को घोड़ा।"

जाने दो। छोड़ दे बालक का पिण्ड, ओ खेलौनावाला जा। क्यों किसी की पोल खोल फजीहताचार करता है ? आहा कहीं सुर्ख कहीं बैगनी कहीं नीली कही पीली भाँति भाँति के रंग की बदली घटा की घटा किधर से उमड़ी चली आ रही है। यह कौन है—बी० हुस्सों और यह दूसरी बी० मानो। बी० खानो, मखानो, गुमानो, कमानो, अमीरों की इमारत, शहर के शहरीयत की शान, विसनी आशिक तनों की प्रान और यह दूसरी कौन है बी० चुहटो। अरे ओ बी० चुहटो अजनगिरि पर्वत की श्यामता का

अनुहार करने वाले तुम्हारे अंग प्रत्यग की शोभा पर तन मन धन सब वारे हुये ये मुफलिस कल्लांच खराब खस्तह मुहब्बत के फन्दे में गिरफ्तार, अपना सब कुछ समर्पण कर ठिकरा हाथ में लै दर दर भीख माँगने लायक हो गये। अब और क्या चाहती हो? शरम को शहद बनाय चाट बैठे, बिना बेहयाई का जामा पहने आशिक के तन जेब नहो, गाढ़े इश्क के आशिक है, जुदाई में मलमल के हाथ रहते हैं। अफ़सोस जर दिया जनानो को माल पास न हुआ, नहीं तो कौआ परियों की फौज खड़ी कर आप उसके कपतान बनते। या तो किसी समय मटियाबुर्ज के नौवाब थे या इस समय यही देख पड़ते। आहा आप है—पण्डित अमुक-अमुक-अमुक! पण्डित जी नमस्कार। यह दूसरे कौन है—वा-कान्त देव कि महाशय भाला वासेन! और यह बाबू फलाँ-फलाँ-फलाँ। मिस्टर सो एण्ड सो! गुड मार्निंग मिस्टर जान बुल! हौ डू यू डू? और यह सेठजी। जै गोपाल सेठ जी और यह आप। ओः खो! आप क्या हैं, बला है करिस्मा है तिलिस्मा है – फिना मिना है–आश्चर्य अद्भुत तथा लोकोत्तर वस्तु का सन्दोह हैं। उठती उमर जग जानी जवानी के तूफान में अन्धे न जानिये कितने कंटाप और पदाघात सह तब अनग के अखाड़े की पहलवानी प्राप्त की हैं। गरज कि ऐसे कितने कुढंगो का ढङ्ग देख पंच महराज उब गये और मन में दृढ़ संकल्प कर लिया कि मेले ठेले के कभी डाँड़े न जाना। पछताते हुए घर लौट आये!

[सन् १८९९ ई०]

प्रेरित-पत्रः—

एडीटर महाशय,

आप यह तो जानते ही है कि मिष्टर शुक्राचार्य हमारे पुराने मित्र है—उन्होंने मुझे एक पत्र भेजा है—वह मैं ज्यों का त्यो नीचें लिखे देता हूँ—यदि आपको अपने पाठको पर कुछ दया हो वो उनके हितार्थ छाप दीजिये—

मिष्टर शुक्राचार्य मुझको लिखते हैं:—

मित्रवर,

आप से मै अपनी कोई बात छिपा नहीं रखता विशेष कर ऐसी बात जिससे आप लाभ उठा सकै—चार दिन की बात है कि मैं शहर अबोधनगर की अन्धी गली में घूम रहा था कि एक बड़ा भारी साइन बोर्ड मुझे दिखलाई पड़ा, उसमे लिखा था Dr. A. P. Block head M. B. F. R. C. S. Edinburgh. F. M. K. C. S. I.C. London and New york etc.

इन लम्बी चौड़ी उपाधियों को देख मेरे जी मे उक्त महाशय के दर्शन की अभिलाषा उत्पन्न हो गई—मैं चट पट खट खट कर उपर चढ़ गया, तो सबके पहले जो वस्तु द्वार पर मुझे देख पड़ी वह एक मनुष्य के शरीर का पंजर था। पहले मैं देखकर ही चौका और पीछे हट गया,

परन्तु यह सोच कर कि यह तो डाक्टरों की कार्रवाई का चिन्ह ही हैं और यही याद दिलाने के लिये द्वार पर रक्खा गया है कि हमारी देहली (ड्योढ़ी) जिसने नाघा और हमारे फेर में आया उसका यही हाल होता है मैं साहस कर अन्दर घुसा--अन्दर देखने मे आया कि कोट पतलून डाटे एक युवा पुरुष एक कुर्सी पर दो एक शीशी सामने मेज़ पर घरे बैठे है और वह एक शीशी के लेबिल को बड़े ध्यान से देख रहे थे। मै जूता खटखटाया आप के पास तक चला गया परन्तु डाक्टर साहब ने यद्यपि एक कनक्खी से मुझे देख लिया था फिर भी अपने शीशी के ध्यान में लगे रहे मानो बड़े मर्म की बात सोच रहे हो और किसी बात का ध्यान ही न हो–मैं कुछ देर तक तो चुपके खड़ा रहा कि देखे डाक्टर साहब कब आँख उठाते हैं-और वहाँ कोई कुर्सी भी न थी जिस पर मैं बैठ जाता–निदान यह विचार कि इस भाँति का Dumb show कब तक रहेगा, मैं बोल उठा, "डाक्टर साहब मै........"

इतना कहते ही डाक्टर साहब इस तरह चोंके मानों उन्हें हमारे आने की कुछ खबर ही न थी पहले तो आप ने मुझे सिर से पैर तक देखा और कदाचित् यह देखा कि मै फैशन के तौल मे उन से झंझी बराबर भी कम न था उठ खड़े हुये और इधर उधर देखने लगे मैं समझ गया कि यह कुर्सी ढूढ़ रहे हैं--डाक्टर साहब को जब कुछ देख न पड़ा तो कुछ सिटपिटाये से मालूम पड़े-मै यह देख चट टेबिल पर बैठ गया और बात छेड दिया–डाक्टर भी कुर्सी पर बैठ गये और हमे ऐसा जान पड़ा मानों बड़ा भारी बोझा उनके सरसे उतर गया–मैंने पूछा "क्या डाक्टर ब्लाकहेड आप ही है?

डा० —वेल। यस। जी हाँ मै ही हैं-आप कुछ काम–

मै— क्या आप ने विलायत मे डाक्टरी सीखा है?

डा०—हम विलायट वहुत दिन रहा पर सीखना, पाड़ना कैसा -हम अकल का ज़ोर से डाक्टरी करता–सीखता बेवकूफ़ लोग–

मैं—तो क्या जितने लोग वर्षों सिर पचा कर पढ़ते हैं और मेहनत् करते है सब बेवकूफ है ?

डा०—-आलवट-जो अक़ल रखटा उसको सीखना क्या काम दुनियाँ में कोई बिमारी नहीं जो हम अकल का जोर से नहीं आराम करने सकटा, हमारा नूसखा किसी को शूझने नही शकटा।

मै—क्यो डाक्टर साहब ! जब आपने पढ़ा नहीं तो आपने M. B. F. R. C. S. इत्यादि उपाधिया कहां पा ली।

डा०—(बड़े जोर हंस कर) ओह हाः। हाः। हाः। आप कूश नहीं शमझटा-यह सब दिखलाने का बाट-हमारा काम का नेई-लेकिन जैसे हम बहुत चीज दिखलाने की खरीदा, यह भी खरीद लिया, जिससे नाम में लगा रहे। ओ हो हो हो अब आप समझा-यह सब कूरा बात नहीं-हमारा अकल सब कूश है, आप कोई बिमारी बटावै हम अभी नूसखा लिखटा-देखिये हम कैसा कैसा बिमारी अच्छा करटा है।

यह कह कर उन्होंने टेबिल के दराज से एक कागज निकाल कर मुझे दिया--यह डाक्टर साहब का Advertisrcment. था-इसमे आप की बड़ी प्रसंशाये लिखी थी-इसमे एक बात भी लिखी थी कि Dr. A. P.Black-head. ORIGINAL Doctor है—आप आयुर्वेदिक यूनानी और विलायती ढंग सब ही कुछ जानते हैं-और आपने आज तक ६००० रोगियो को अच्छा किया है-- यह पढ़ मै बोला "क्यों डाक्टर साहब आपने ६००० रोगियों को अच्छा किया है ?"

डाक्टर बोले—अलवट—यह कह आप ने एक किताब निकाली जिसमें बहुत से पुरुष और स्त्रियों के नाम थे।

मैंने पूछा—"क्यों डाक्टर साहब आपने इतनों का इलाज् किया है या इतनों को अच्छा किया है ?"

डा०-वो एक ही बाट, हमारे यहा जो आया वह आप ही अच्छा हो जाता -आप अपना नाम बतलाइये हम लिखें।

मैं-मेरा नाम तो मिष्टर शुक्राचार्य है परन्तु क्यों साहब आपने तो मेरा इलाज किया नहीं जो मेरा नाम लिखते हैं।

डा०-(रजिष्टर में मेरा नाम लिखकर) ओह हमारा यहां आप आया है तो जरूर कूछ बिमारी होगा, और हम अच्छा कर देगा। जो बिमार न हुआ तो भी हमारे यहा से अच्छा जायगा।

मैंने यह सोचा कि अब डाक्टर का इम्तिहान लेना चाहिये-यह विचार कर मै बोला-"डाक्टर साहब आपने कहा कि मै हर तरह की बीमारी दूर करता हूँ मुझे इश्क की बिमारी है आप इसकी क्या दवा बतलाते है।"

डाक्ट साहब सर पर हाथ धर कर सोचने लगे और थोड़ी देर बाद एक कागज पर कुछ लिखने लगे और बोले अच्छा मै आप के वास्ते नुशखा लिखटा, आप इससे अलबट अच्छा हो जायगा-उन्होने कागज़ मुझे दे दिया उसकी नकल मैं नीचे देता हूँ।

वास्ते मिष्ठर शुक्राचार्य।
इश्क़ का नुशख़ा।

घृणा—८ औंस
दृढ़ प्रतिज्ञा—८ पौंड
बुद्धि—२ ग्रेन
धैर्य—२ पौण्ड
तजूरबा—२ औंस

इन सब द्रव्यों को बीस पौण्ड जीवटका पानीमें मिलाकर उसमें २ पोण्ड लापरवाही का मिश्री डालकर, बदचलनी का आँच का जोश दो-आधीरात के वख़्त रोज उसका ३ औंस के हिसाब से सेवन करो सालभर में बिमारी दूर होजायेगा।

यह कुल दवाईयाँ अबोध नगर मोहल्ला अन्धीगली Dr Blockhead के यहां मिल सकती है।

मैं इसको ले विदा हुआ और यह सोचा कि कदाचित् आप इस्में इश्क़्बाज नये जवानों के इश्क की बिमारी के लिये कुछ भला कर सकें, आप के पास भेजता हूँ—

आप का पुराना मित्र शुक्राचार्य A. S.

[सन् १६०४ ई०]

पञ्च महाराज

माथे पर तिलक पाँव में बूट चपकन और पायजामा के एवज कोट और पेट पहने हुये पञ्च जी को आते देख मैं बड़े भ्रम में आया कि इन्हें मैं क्या समझूँ पंडित या बाबू या लाला या क्या ? मैंने विचारा इस समय हिकमत अमली बिना काम मे लाये कुछ निश्चय न होगा, बोला—पालागन, प्रणाम्, बन्दगी, सलाम, गुडमार्निंग पंच महाराज—

पञ्च—न-न-नमस्कार नमस्कार-पु-पु-पुरस्कार-परिस्कार,

मैंने कहा—मै एक बात पूछा चाहता हूँ बताइयेगा—

प०—हा हां पू-पू पूछोना-च-व-बताऊँगा क्यों नहीं,

आप अपने नाम का परिचय मुझे दीजिये जिससे मैं आप को जान सकूँ कि आप कौन है—

पं०—प-प-परिचय क्या ह-ह-हमतो कु-कुलीन हैं न,

मैं अचरज मे आय कहने लगा ऐ कु-कुलीन कैसा ?

पं०—हा अ-अ-और क्या,

तो क्या व्याकरण के अनुसार कुकुत्सितः कुलीनः कुकुलीनः अर्थात् कुलीनों में सब से उतार—अथवा कुत्सितः प्रकारेण कुपृथिव्यांलीनः—क्या इस मनुष्य जीवन मे आप को क्या लोग अतिनिन्दित समझते है ?

पं०—अजी तुम तो बड़ी हिन्दी की चिन्दी निकालते हो-हम कुलीन है एक कु को बतौर ब्याज के समझो—

मैंने फिर कहा—अजी ब्याज कैसा बड़े-बड़े सेठों के समान क्या कुलीनता में भी कुछ ब्याज देना होता है-मेरे मन में कुछ ऐसा आता है कि यह कुलीन कुलियों की जमा है तो यहाँ आपका क्या काम है जाकर कुलियों में शामिल हो बोझा ढोओ—

प०—नहीं नहीं तुमतो बड़े कठ हुज्जती मालुम होते हो अरे कुलीन के अर्थ हैं, अच्छे वंश में उत्पन्न-अबतो समझ में आया—

मैं फिर बोला—तो क्या अच्छे वंश में पैदा होने ही से कुलीन हो गये कि कु ीनता की और भी कोई बात आप में सद्वृत अथवा विद्या इत्यादि भी है—

पं०—हम तो नहीं हमारे पूर्वजो में कोई एक शायद ऐसे हो गये हो विद्या बद्या तो हम कुछ जानते नहीं न सद्वृत्त जाने क्या है-हां पुरखों के समय से जो विर्त भूर दक्षिणा बंध गया आज तक बराबर पुजाते है। और अङ्गरेजी फेशन भी इखतियार करते जाते हैं और फिर अब इस संसार मे कौन ऐसा होगा जो मिलावटी पैदाइश का न हो वैसा ही मुझे भी समझ ला-पैदाइश की आप क्या कहते हो पैदाइस कमल की देखिये कैसे मैले और गंदले कीचड़ से उसकी उत्पत्ति है तो जब हम कुलीन है तो हमें अपने कुल का अभिमान क्यों न हो--

मै-पंच महाराज यह तो वैसी ही है कि बाप ने घी खाया हाथ हमारा सूँघलो खाली पैदाइश से कुछ नहीं होता "आचारः कुलमा ख्याति" कुछ आचार विचार भी जानते हो--

पं—हेम आचार विचार इसी की छिलावट मे पड़े हुये लोग अपनी जिन्दगी खोये देते हैं तरक्की तरक्की चिल्लाया करते है और तरक्की खाक नहीं होती-इसी से तो इन सब बातों को हम फिजूल समझ आजाद बन गये हैं और इस समय के जेंटलमेनों में अपना नाम दर्ज करा लिया—'

सच पूछो तो शराब और, कबाब यही दोनो सामयिक सभ्यता और कुलीनता का खास जुज़ है–हा इतनी होशियारी ज़रूर रहै कि प्रगट में बड़ा दंभ रचे रहै ऐसा कि कदाचित् कभी कोई देख भी ले तो रोब में आ किसी को मुंह-खोलने की हिम्मत न रहे—

मैं०—हा यह ठीक कहते हो पर कुछ गुण की पूंजी भी तो होनी चाहिये—

पं०— None sense) दुनियाँ में कौन ऐसे होंगे जो अपने पुरखों के कुलीनता का दम न भरते हों और गुण तो वे सीखे जिनको कहीं दूसरा ठिकाना न हो यदि गुण सीखकर पेट चला तो कुलीनता फिर कहाँ रही –

मैंने अधिक अपने माननीय मित्र की पोल खोलना मुनासिब न समझा इससे उनसे दो चार इधर उधर की बात कर रफूचक्कर हुआ।

(हि० प्र० १६०३)

—x—

रंगीला दृश्य

अपने कमरे में जाकर थोड़ी देर गपशप कर पलग पर लेटा-बिस्तरों ने मुझे अपनी गोद में पडे देख बड़े प्रेम के साथ अपने शीतल अङ्गो से मुझे आलिगन करते करते तुरन्त अपनी प्रिय सखी निद्रा के हवाले कर दिया—अब वही हरे लाल पीले आदि रङ्ग जिनका अक्स या प्रतिच्छाया मेरे दिमाग पर अब तक पड रहा था अपनी-अपनी सूरत बदल कर चक्कर खाने लगे—

देखता हूँ कि एक बहुत उत्तम स्वच्छ हरियाली से घिरा हुआ एक स्थान है। वहां एक स्फटिक शिला पर बैठी एक युवती अठला-अठला कर अपनी अज्ञानता जताने के बहाने अपनी धानी साड़ी का आंचल खिस्काकर रसिकों का दिल निचोड़ रही है-मै भी अपने चश्मे की अकड़ मे आंय खून लगाय शहीदो में जा मिला और पास जाय पूंछा-आप कृपा कर अपना नाम बता सकती है? वह चंचला अबला अपना अंचला सह्याल बोली आप मेरा नाम इन्हीं (अपने चाहने वालो की ओर इशारा कर) लोगों से पूछिये—मैंने फिर कहा, मै तो आपही के श्री मुख से आपका सुधा स्पन्दी नाम सुन करणकुहर पवित्र किया चाहता हूँ—तब उसने बड़े नाजो नखरे के साथ कहा यों तो मेरे नाम अनेक हैं। किन्तु मेरा प्यार का नाम विजया है और लोग मुझे सदाशिव की अर्द्धांगिनी पार्वती की प्रिय सखी भी कहते हैं।

यह सुन कर मुझे कुछ अचरज सा हुआ और अब मैंने इसके चाहने-वालों की ओर दृष्टि फेर देखा तो मुझे उसमें सब हिन्दू ही हिन्दू देख पड़े उन में भी ब्राह्मण तो तनमनसे इसपर अपने को न्यौछावर किये थे—कोई बगल में पोथी दबाये मुहबाये विलार सा ध्यान लगाये इसकी ओर देख रहे है-कोई स्वच्छ मांजा हुआ जनेऊ धारण किये माथे में भस्म का त्रिपुण्ड पोते बडी-बडी चुटिया रखाये आख फैलाये ताक रहे हैं-एक ओर सडे मुसडे पंडे गले मे गंडे बाधे कूड़ी सोटा हाथ मे लिये अलगही ढाई चावल पका रहे है और यह भी मुझे मालुम हुआ कि ये सब उनके पाने को ऐसा ललचा रहे थे कि मानो यदि वश चले तो उसी दम उठाकर घोल के पी जाय—ये लोग यह देख कि मैंने उस धानी साड़ी वाली अलबेली को न तो प्रणाम किया न उनके समान मेरे मुँह मे पानी भर आया, मुझ पर कुछ क्रुद्ध सा हुये और मेरी ओर आ खड़े हुये उसमें से एक तो रूमाली कसे हुये था उपर से जोगिया रङ्ग का एक अगोछा लपेटे ऐंठते हुए पास पहुँचा और कहने लगा, ओ अन्धे आंख पर की ठिकड़ी हटा कर इधर ताक, तू नहीं जानता, यह सदाशिव की विभूति है "इसका नाम कमलावती रहै नैनभरपूर, ऊधो खाई सन्तो खाई, खाई कुंवर कन्हाई-जो विजया की निन्दा करै उसे खाय कालिका माई—वंअगड़ ब दे तीन-छिट्टे मूजी के नाम—" इस प्रकार की इनकी भोड़ी कविता और महा असभ्य आचरण देखकर मुझे गुस्सा आया तो बड़ा पर "कमजोर का गुस्सा मार खाने को निशानी" मन मे सोचा कुछ भी बोलता हूँ तो ये सबके सब मेरे उपर टूट पड़ेगे और ये सडे मुसडे डडे से पलेथन निकाल डालैगे-यही सब सोच तुरन्त दुम दबाय खीसें (दाँत) काढ़ दी और कहा "वाह महाराज क्या ही उत्तम कविता है हम लोग बन्दर के समान क्या जाने आदी का स्वाद, हम को उसके जानने की आवश्यकता भी नहीं पड़ी आप ठढे रहै हम तो आप लोगों के चेले है"-इतना कह मैंने विजया

देवी को दूर ही से प्रणाम् किया और जाना ही चाहता था कि एक ओर से कहकहे के शब्द ने मुझे चौंका दिया--

जिधर कहकहे का शब्द सुन पड़ा था उसी ओर मैने मुख मोड़ा भागने को तो था ही कि चित्तने मेरी अगाड़ी (आगे) पिछाड़ी (पीछे) खोल दी और २० मील की घंटे की चाल के अनुसार उसी ओर को छूटा जिधर से शब्द आया था और डेढ़ या दो मिनट में वहां पहुँच अपना दम ठिकाने करने लगा--जब जामे में आया तो एक नये किस्म का तमाशा देख पड़ा--बहुत से मनुष्यो के कई झुण्ड नजर पड़े इनमें पहिला झुण्ड फेशन परस्त कोट पैंट वाले जेंटिलमेन आफ दि न्टैंटियथ सेंचुरी था ये सब एक नाजनीन सुर्ख पोशाक वाली जो साफ और सुथरे फर्श पर शीशे जड़े हुये कमरे में उछल कूद रही थी, चाहने वाले जो मनमें आता था भकुआ आय बाय शांय बक रहे थे--मैने कई बार ध्यान दे कानफटफटाय कर सुनना चाहा कि ये क्या बक रहे है और किस विषय पर अपनी बुद्धि को गोठिल किये डालते है पर सिवाय AhAh once more her health......oh .. ...a.......you........Bara को जाटा टुम इडर आ.......ना.......मागे......के आगे कुछ न सुन पड़ा --इनमें से बहुत से महाशयों को तो मै खूब जानता हूँ--अरे रे रे यह तो बड़े प्रसिद्ध रईस....ओह I am यह यहा क्या कर रहे है; इस तरह के टूटे फूटे शब्द सहसा मेरे मुख से निकल पड़े--मै पास तो था ही एक महाशय मेरी ओर बढते हुये देखाई पड़े परन्तु वे पैर रखते कहीं थे और ड़ता कहीं था तीन चार कदम चलने के बाद, ऐसी ठोकर ली कि धड़ाम से गिर पड़े और बड़ बड़ाने लगे "oh genmen what... name..... .. Ple" यह बक गड गाय हो गये--एक महाशय को अभी गाड़ी से उतर उधर आते देख मैं उनके पास गया और दीनता से पूछा--क्यों सरकार अगर आपका कोई हर्ज न होता हो तो मुझे इस मतवाली लाल परी का नाम दीजिए,--" अहहह (हंस कर) आप इनका नाम मुबारक मुझसे

दरियाफ्त करते है आइये मैं आपको इनसे Intıoduce कर दूँ—मगर तबियत अपनी काबू में कर लीजिये, अहहह ऐसा न हो कहीं कि आप भी अंगुली पकड़ते पहुँचा थाम (पकड़) ले"

तब तो मैं सिटपिटाया और कहा, "मै अग्रेजी तरीके से न मिलूंगा क्यो कि मैं न तो बूट पहिने हूँ और न फेल्ट, क्या आप भला दो पल्ली टोपी, धोती और सलीम साही से तो काम चले होगा नहीं तो आप हिन्दुस्तानी तरीके पर मुझे उनसे मिलाइये और केवल नाम मात्र का परिचय दिला दीजिये—वह इस बात पर राजी हो गये और मुझे उसके सन्मुख लाकर खड़ा कर दिया—मैंने तीन बार झुक कर तसली-मात अर्ज की और हाथ पर हाथ धर चुप-चाप खड़ा हो गया—तब हमारे उक्त महाशय ने मेरा नाम बतलाया और उनका नाम मुझे बतलाया कि आपका "इस्म शरीफ अहहह (हंसकर) अरे भाई कौन सा बतलाऊँ इनकी एक हमशीरा है उन सबो मे हाला की रङ्ग मे फर्क है लेकिन नाम एक ही है! हाँ नाम बतलाना तो भूल ही गया, अरे इनके नाम का पहला हर्फ शीन है-मेरी समझ में सींग आया। मैने कहा—क्यो साहब इनके तो सींग मुझे नजर नहीं आती, यह सुन वे बहुत बिगड़े और बोले "तुम तो बिलकुल काठ के उल्लू हो ऐसे बदतमीज बेतहजीब को नाम न बतलाया जायेगा-" मैं चुप हो गया, इस पर वह लाल परी ने मै (यही नाम उनका रक्खे देता हूँ) ऐसे चुलबुलाहट के साथ मुसाबिरा कर प्यार भरी निगाह से देखा कि मै पत्थर हो गया इस समय मेरी दशा बहुत ही डमाडोल हो रही थी कि अकस्मात् "न्यायात् पथः प्रविचलन्ति पद न धीरा" जो मुझे याद न आया होता तो बेतहाश मैं भी उस युवती से लिपट कर एकबार उनका चुम्बन अवश्य ही कर लेता। धन्य है सच्चिदानन्द तूही ऐसी ऐसी कठिन विषम अवस्था में बचाने वाला है नहीं तो मैं भी उस दुष्टा के बनावटी धोखे में आय अपनी शुद्ध परिपाटी, बाप दादों के नाम, उच्चकुल के जन्म पाने की प्रतिष्ठा, आदि सब बहुमूल्य रत्नों को एक सेकेण्ड में

छार में मिलाय, मुंह में करखा पोत जीते ही नरक में ढकेला जाता। इतने में मेरे बाईं ओर लगभग २० गज के फासिले पर लोगो ने बड़ा कोलाहल मचाना आरम्भ किया इस कारण मेरा ध्यान बंट गया, देखता हूँ तो अमुक, अमुक बडी लम्बी उपाधि धारी शर्मा, अमुक लाला साहब या बाबू साहब, अमुक प्रसाद, इत्यादि आपस में इस बात पर लड़ रहे हैं कि रूपये की कै चवन्निया होनी चाहिये, कोई कहता है सात, तो कोई कहता है नही पांच और यह कह बार-बार हाथ जोड़ते है फिर गाली घूँसे और जूते इन सबो का यथा योग्य व्यवहार कर पीछे बेहोश हो पृथ्वी पर ऐसे हिसाब से गिरे कि मियां युक्लिद होते तो भी वे भी न बतला सकते कि युक्लैदिस की बारहो किताब में कौन से प्रपोज़िसन की शकल इन लोगों ने बनाया है एक हजरत पड़े हुये बर्रा रहे है—

"शराब थोड़ी सी होती तो हम बजू करते--खुदा के सामने पैदा कुछ आबरू करते"—यह सब तमाशा देख मुझे पुराने लोगों की युग व्यवस्था का ध्यान आया और सोचने लगा हमारे धर्म ग्रन्थों मे जो कुछ कलियुग के सम्बन्ध में लिखा गया है सब सत्य है बहुत ही सटीक उतरते हुये पाया जाता है—उनकी भविष्य वाणी हर्फ बहर्फ सच मालुम होती है हाय संसारार्णवलंघनक्षम बुद्धि और विवेक सम्पन्ना मनुष्य जाति की यह दुर्गति अब नहीं देखी जाती, इनसे तो पशुओं को मै बहुत अधिक श्रेष्ठ मानता हूँ— क्या सत्य ऐसों को भी हम मनुष्य कहे ? भाई हम से तो ऐसी भूल कदापि न होगी वरन् हम तो ऐसो को जोंक और खटमल के किस्म के कहते तो बहुत सन्तुष्ट होते—

"अरे ओ गॅडेरी वाले इॅधर इॅधर"

हैं क्या यह किसी भूत की आवाज है—अरे रे यह क्या मेरे हाथ पांव क्यों ठंडे होते जाते है। मै तो अपने को बड़ा निडर माने हुये था आज क्या हो गया फिर भी तबियत में ढाढ़स बांध जी मजबूत कर मैंने अपने आँख की पुतली दाहिनी ओर घुमाई, जब कोई भयानक वस्तु को

न देखा तो बड़ी फुर्ती के साथ उसी ओर को झुक पड़ा—"ओ हो आदा-बअर्ज मीर साहब है फरमाइये आप यहा आज किसकी खोज में आ पहुँचे-मेरे इतने पूछने पर मीर साहब बोले—"अरे यार इस काली बेगम ने तो नाक में दम कर दिया—मरे न माँचा छौंड़े और हमारे ऐसे बेह-याओं को मौत भी तलब नहीं करती"

उनकी ये बाते सुन मै अचम्भे में आ गया (मन में कहने लगा) यह काली बेगम कौन है और उससे इस बुढ़ऊ की कैसे भेंट हो गई, क्या वास्तव में कोई स्त्री है—जब इन प्रश्नो का उत्तर मेरी मन्द बुद्धि में न आया तो मैने मीर साहब से पूछा—"क्यो हजरत यह काली बेगम का मुअम्मा मेरी समझ मे नही आया—"मीर साहब बोले—"अरे खाँ साहब जरा इन्हें बतला तो देते यह क्या पूछते है"

खाँ साहब—"वल्लह तुम भी क्या मजे के आदमी हो काली बेगम की शकल से नहीं तो क्या उसके नाम से भी आशना नही हो" मैंने कहा—"भाई तुम लोगों के नाम भी तो पेचीदा होते हं, कैसे समझ मे आवे" तब मुझे इन्होंने एक रकाबी की ओर देखने को कहा,

"देखो इस चांदी की कुरसी पर आप ही तशरीफ रखती है"

"वाह जी अन्धा बनाते हो यह तो अफीम है"

"तोबा तोबा अरे। यह नाम तो दुश्मनो ने इनका रक्खा है—भाई इस नाम की याद मुझे मत दिलाओ—इतने में मुझे जमुआई आई तो जितने मेरी ओर देख रहे थे, सब मेरी ओर दौड़ मेरा मुँह बन्द करने लगे, साँस के रुकने से मेरा दम घुटने लगा, इसी घबराहट मे मेरी नींद खुल गई—सब झगड़ा समाप्त हुआ पर इसका असर जो मेरे दिल में नकशा सा हो गया, अब तक बना है—

[सन् १६०६ ई०]

—x—

दो चग्घड़ों की बातचीत

किच्चू चौवे—(लम्बी लम्बी मूछो पर ताव देकर) मुन्शी जी ! जैदाऊ जी की यमुना मइया सदा जै रक्खे, कहो आज उदास कैसे बैठे हो ?

मुंशी कमला प्रसाद—कुछ नही आओ चौवे जी, कहो आज कहाँ चले, आज तो बड़े खुश दिखलाई पडते हौ कही न्योते में जाते हो क्या ?

चौ०—हम तो तुम्हारेई घर नेवते जेमने की आशा में आये है। हमने आज घाट पर यह खबर उड़ती भई सुनी कि थोड़े दिन बीते तुम्हारी नानी मरगई। सो या बात कूँ ठीक करवेके तांई आये हैं, सो तुम्हारी चेष्टा और मूछ मुड़ी देख के निश्चय होगयो कि वो बात ठीक है।

मुं० कमला०—नही नहीं यह बात बिलकुल गलत है हमारे दुश्मनो ने यह खबर उड़ाई होगी। इधर कई दिन से कुछ तबियत ढीली थी मकान से हवा खाने तक के वास्ते नहीं निकला। इसी सबब से चेहरा कुछ उतरा हुआ है। और कुछ नहीं।

चौ०—(मुसकरा कर) क्यों उस्ताद, "गुरुन से गुरुआई" हम से अब क्यों छिपाते हो, तुम जानते होगे कि हमें कुछ खबर नहीं मिली. तुम तो हमारे जिजमान सूं हमारी बड़ी बड़ी बुराई कीनी और उलटो सीधी समझाय के अपनी बात बनानी चाही। पर याद रक्खो "जो काऊ के तांई कूआ खोदे हैं वाके लिये खाई पहले बनजाय है" क्यों है पते की कि नाय

मुं०—(शरमा कर) चौबे जी ! आज बूटी ज्यादः छागई हो तो कुछ देर आराम करलो। जी सावधान हो जायँ तब बाते करना।

चौबे०—हमारो जी तो श्री दाऊजी की कृपा सू हमेशा सावधान रहे है। पर तुम्हें जो छै सात वर्ष से अकल को अजीर्ण ह्वै रह्यो है सो याको कछू यत्न करो नाय तो अब जान जायवे को डर है।

मुं० - यह आप क्या बक रहे है उजड्डई से आप बाज नहीं आते !

चौ० - बाज तुम और तुम्हारे घर के, हम तौ आदमी है सीधे से बोलनो होय तो बोलो हम तुमसे कछु कम नाय है जैसी इज्जत तुम्हारी वैसी हमारी, धन दौलत तुम ने अपनी लुगाई की बदौलत पायो, हमारो बाप छोड़ गयो। तुम्हारी और हमारी दोनो की जीविका एकई घर सू चलै है फिर तुम जबानी जमा खर्च से झूठी साँची कह के अपने मालिक कूं खुश करते हौ, हम अपनी जान हथेरी पर धरे जहाँ वाको पसीना गिरे वहाँ अपनो खून गिराय वे कू तइयार है तुम कहो कछु और करो कछु, हम मर्द की जबान एक समझे है तुम अपनी ऐंठ मे आप जिसकू जो चाहें सो भला बुरा कह डालने हौ, सच्चे से सच्चे आदमियो कू अपनी अकल के घमड मे झूठो दगाबाज फरेबी साबित कर डालो हो और अपने ऐब कू नेक भी नाय देखो हो, हमे उन विचारेन पे दया आवे है तुम अपनी कलम दवात के जोर में चूर हौ हम अपनी कूडी सोटा पै पूरे वीर हौं हाँ एक बात में हम तुम सूं जरूर कम हैं तुमारी लुगाई की बड़ाई देस देशान्तर मे फैली है लुगाइन सू ऐसी घिन है कि व्याह ताईं नाय कियो।

मु०—चौबे जी आज आप बड़ी बुजर्गाना बातें करते है आप का हौसिला बहुत बढ़ा दिखलाई पडता है, आज तक आप ने कभी मेरे साथ इस तरीके की बातचीत नहीं की थी, आप की बातो से तो कुछ और ही जाहिर होता है।

चौ०— सुनो मु शी। जबसे तुम कूं हमारे भोलेभाले जजमान ने अपने इलाके को मुखत्यार कीयो तब सूं तुमने सीवाय खर्चा बढ़ायवे के

कौन सो अच्छो काम कीयो ? तुम्हारे इन्तजाम सू जमिदारन ने टाट उलट कर सब छोड़ छाड़ दियो खेती करने वाले भूखे मरने लगे, पटवारी अपनो अलग सिर पटके डारे है पर तुम जब कैफियत लिखवे बैठे हो तो झूठ-मूठ यही लिखते हो कि हमारे गाँव की प्रजा बड़े आनन्द सू है। और जो काऊ ने गलती निकासी तो वाय काऊ हेर फेर सूं जहन्नुम मिलवाय दियो। सब छोटे बड़े तुम्हारे मारे दुःखी है। फिर दुधार गाय की द्वै लातउ सही जाय है सो तुम ने सबन कू इतनो फजीहत कियो उनसूं मनमानतो रुपया भी लियो और ताऊ पर भी उनको पीठ पीछे गाली दिया। जो कभी वे वेचारे अपने रिस्तेदार या कुटुम्बी की शिफारस करवे गये तो उन्हें फाटक बाहर सूं फटकार बताई और अपनो बिरादरी के लोगन कूं दीवान, मुसद्दी, भडारी, मुंशी, बनाय दियो। धन्य हो ! लोगन को जैसो तुमने सुख दियो और आत्मा ठडी कीनी वैसोई दाऊ बाबा तुमारी करै।

मुं०—खैर लोगों के साथ हमने जैसा किया उस से आप को क्या गरज। जमीदार वगैरः भूखे मरे इसमें हमारा क्या नुकसान था मालिक क क्या घाटा, इसकी हम कुछ परवाह नहीं करते भलाई बुराई जो हमारी तकदीर में थी मिली। बहुत सी तदबीरें जो हमनें लोगों की वेहतरी के लिये की उलटी पड़ी या उनमें लोगों को नुकसान हुआ तो हम क्या करें उन्हीं की बदनसीबी। एक बड़ा जलसा कर डाला या यों कहिये कि वगैर दूलह के बरात निकाली जिसमें लाखों रुपयों की आतशबाजी फूक दी अपने इलाके के एक कोने से दूसरे कोने तक के सब बड़े आदमियों को बुलाया और बड़ी धूमधाम की तो इसमें हमारे या हमारे मालिक का नुकसान ही क्या हुआ। वेवकूफ बने वही जो करजा करके तमाशे मे शामिल हुये। आप खूब जानिये कि इसमें भी मैंने बहुत बड़ी चाल खेली थी। और जो जो मैं जानना चाहता था जान गया। ऐसी बातें आपकी ऐसी मोटी अकल के आदमियों की समझ में इसकी बारीकियाँ नहीं आ सकती। और मैं इन सब बातों का जिक्र करना भी

उसूल के खिलाफ समझता हूँ। खैर जाने दो। मगर तुम यह बतलाओ कि अपने ही होकर क्यों बिगड़ गये।

चौ०—याही पै कि तुमने अपनी अक़ल के जोम में आके मेरी बातन को और को तौर झूठो साचो मतलब समझ लियो और वाय अपनेई तक नाय मालिक ताईं भेज दियो पर याद राखो हम भी तुमारे गुरू। चौबे जी ठहरे हमने भी एक दाँव आजई के लिये बचाय राखो हो जासूं तुमे चारो खाने चित पछाड़ दियो।

मुं०—हाँ मैं खूब जानता हूँ कि आपने वाला वाला कारवाई मेरे खिलाफ खास मालिक से की थी। मगर आप खूब समझिये कि मैंने आप की बातों से वही मतलब निकाला जो आप की मंशा थी अब आप किसी के बहकाये में आगये हो यह दूसरी बात है। खैर जब मेरी बात का कुछ ख्याल नहीं हुआ तो मैं भी ऐसी नौकरी में दो लात मार कर अपने वतन को चल देता हूँ मैंने मालिक के वास्ते जो भलाइयां की वह उनका जी जानता होगा। मगर मेरी बात का कुछ ख्याल न हुआ। इससे मुझे ऐसा रंज है जैसा कि उस शख्श को होता है जिसके सब घर के लोग के के सुपुर्द हो जाये। मेरा दिल हरदम घबड़ाता रहता है खाना पीना सोना नाचना गाना यहाँ तक कि बीबी से बोलना तक हराम मालुम होता है क्या करूँ अब मे सोचता हूँ कि मैने नाहक ऐसी भारी नौकरी जरा सी बात पर छोड़ दी। हाय। मै तो इस इलाके का सोलह आने मालिक था। सच है "खुद कर्दरा चे इलाज"।

चौ०—(हसकर) "सदा न काहू की रही, सदा न वाजी बंम" मुंशी जी। "अब पछताये का होयगो जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत" हमने झूठीं साची कारवाई कछू नाय कीनी मालिक तो तुम सूं या बात पै खफा भयो कि एक तो तुमने वाके गाम के कई हिस्सा कर डारे जा सूं विशेष फायदा नाय दीखे है। दूंसरे तुमने हमारी बात का खयाल न कियो।

हमकूं जो न्योतो देदेते तो सब बात ठीक होय जाती! तुम जानो नाय के "अग्रे अग्रे विप्राणाम्"।

मुं०—अजी क्या कहै अब जो होना था सो हो चुका आप हमारे जख्मों को हरा न कीजिये हमने जो कुछ किया बुरा किया। अब हम पर मेहरबानी कर आप अपने डेरे पर तशरीफ लेजायें हमारे सर में दर्द होने लगा बुखार सा आया चाहता है!

चौ०—बढ़ती होय, दिन दूनो रात चौगुनो होय ले अब हम जाते हैं।

मु०—बहुत अच्छा। आखिरी सलाम।

[सन् १९०५ ई०]

—x—

वाजिदअली शाह

हाय ! आज हमी नहीं रो रहे है हमारी लेखनी का भी हृदय विदीर्ण हो रहा है । हँसी मत समझो, मारे दु.ख के उन्माद हो रहा है, इससे रक्त काला पड़ गया है, और आसुओ के साथ नेत्र द्वारा बहा जाता है । हमारा कानपुर यवनो का नगर नही सही, पर लखनऊ यहा से दूर नहीं है, वरञ्च यहा से सहस्रो सम्बन्ध रखता है । फिर क्यों न लखनऊ के साथ इसे भी शोक हो । सम्पादक और उसके मित्र श्री बाबू रामेलाल आदिक कई लोग प्रत्यक्ष, अश्रु-वर्षा कर चुके हैं । यह बात किसी के देखाने को नहीं, वरच हृदय के सच्चे संताप से थी । हाय शाह वाजिदअली । हा सुलताने आलम ! हा अखतर ! हाय सूबे अवध के कन्हैया ! तुम हमारा शासन न करते थे, तुम हमारी जाति के न थे तो भी, हमारा बादशाह कलकत्ते में बैठा हैं, यह स्मरण हमारे लिए सन्तोषजनक था । तुम्हारा अंतःकरण हमसे ममता रखता था, इसमें कोई सन्देह नहीं ।

पर हाय ! दुष्ट दैव से इतना भी न देखा गया, मूर्ख खुशामदी और और अपने दुर्गणो से भी पराए सद्गुण तक को तुच्छ समझने वाले चाहे जो कुछ झख मारे, पर हम भली भाति जानते है कि तुम्हारे दोष भी मनुष्य-जाति की अपूर्ण शक्ति से अधिक कुछ न थे । तुमने अपनी प्रभुता के समय हिन्दू-मुसलमान दोनों को अपनी प्यारी प्रजा समझा है । यह तुम्हारा एक गुण ऐसा है कि यदि तुम में सचमुच के सहस्र

तो भस्म कर देता। जो मुर्ख और दुष्ट लोग अपने मतवालेपन से दूसरों के पूज्य पुरुषों की निन्दा और उनसे घृणा किया करते हैं उनसे तुम लाखों कोस दूर थे! सहस्रों लोगों का रक्त बहेगा, सहस्रों ललनाओं का अहिवात जाता रहेगा, इस भय से अपने तंई प्रसन्नतापूर्वक दूसरों के हाथ में सौंप दिया। यह गुण तुम्हारा हमारे हृदय को प्रफुल्लित करता है। गुण-ग्राहकता आश्रित-पोषकता और दुःख सुख दोनों में एक रसता आदि के कारण तुम प्रेम समाज के प्रातस्मरणीय हो।

सितम्बर की २१ तारीख तुम्हारे वियोग का दिन है, अतः सहृदयों को दुःखदाई होगी। कहां तक लिखे, शोक के मारे तो अधिक विषय सूझते ही नहीं। इस दशा में भी सहस्रों के पेट तुम्हारे अनुग्रह से पलते थे, हाय! आज उनके चित्त की क्या दशा होगी।

कलिकोष !

कचहरी—कच माने बाल और हरी मानी हरण करने वाली, अर्थात् मुंडन (उल्टे छूरे से मूडने वाली) जहाँ गये मुँडाये सिद्ध !

दर्बार —दर्ब द्रव्य का अपभ्रंश और अरि अर्थात् शत्रु जैसे मुरारि मुरारि इत्यादि। भाषा में अन्तवाली ह्रस्व इ की मात्रा बहुधा लोप हो जाती है।

अदालत—अदा अर्थात छवि, उसकी लत। पोशाके चमका चमका के जा बैठने वालों का स्थान। अथवा होगा तो वही जो भाग में है, पर अपनी दौड़ने धूपने की लत अदा कर लो ! अथवा अदा बना के जाओ लाते खा के जाओ इत्यादि।

हाकिम—दुःखी कहता है हा ! (हाय) तो हजूर कहते है किम् अर्थात् क्या है वे ! अथवा क्यो बकता है।

वकील—वः कील, जो सदा कलेजे में खटकै, अथवा बंग भाषा मे वोः की, क्या है, अर्थात् वह तुम्हारे पास क्या है, लावो !

मुखतार—जिसके मुख से तार निकले, अर्थात् मकड़ी (जाल फैलाने-वाला) अथवा मुक्त्यारि (मुक्ति का अरि जो फदे में आवै सो छूटने न पावै ।)

मुअक्किल—मुआ अर्थात् मरा किल इति निश्चयेन (जरूर मरो)

मुद्दई—ग्राम्य भाषा में शत्रु को कहते हैं, (हमारा मुद्दई आहिउ लरिका थोरैं आहिउ ।)

मुद्दालेह—मुद (आनन्द) आ । आ ! ले दोत ! अर्थात् आव आव मजा ले अपने कर्मो का !

इजलास—अंगरेजी शब्द है, इज (है) लास (हानि) अर्थात् जहाँ जाने से अवश्य ानि है, अथवा ई माने यह, जलासा अर्थात् कोयला सा काला आदमी । अथवा फारसी तो शब्द ही है जेर के बदले ज़बर अर्थात् अजल (मौत) की आशा (आशा) अथवा बिना जल (पानी) के आस लगाए खड़े रहो ।

चपरासी—लेने के लिए चपरा के समान चिपकती हुई बातें करने वाला ! न देनेवालों से चप (चप । रासी अर्थ फारसी में हुआ नेवला है तू'—अर्थात 'चुप रह, नेवला की तरह तू क्या ताकता है ।

कहनेवाला—अथवा फारसी में चप के माने बाया अर्थात् अहित के हैं (विधि वाम इत्यादि रामायण में कई ठौर आया है) अर्थात् तू वाम नेवला है, क्योंकि कोल डालता है ।

अरदली—अरिवत् दलतीति भावः ।

स्त्री –(शुद्ध शब्द इसस्तरी) अग्नितप्त लोह के समान गुण जिसमें । (धोबी का एक औजार)

मेहरिया—जिसकी आँखों में मेह (बात-बात पर रोना) और हृदय में रिया (फारसी में कपट को रिया कहते हैं) का वास हो !

लोगाई—जिसमें नौ गौवों की सी पशुता हो । बंगाली लोग बहुधा नकार के बदले लकार और लकार के बदले नकार बोलते हैं जैसे नुक्सान को लोक्सान, निर्लज्ज को निरनज्ज ।

जोरू जो रूठना खूब जानती हो !

पुरुख—पुरु कहत हैं जेह में खेत सींचा जाथै, और 'ख' आकाश (संस्कृत में) अर्थात शून्य । भावार्थ यह हुआ कि एक पानी भरी खाल जिसके भीतर अर्थात् हृदय में कुछ न हो। 'मूर्खस्य हृदय शून्य' लिखा भी है ।

मनसवा—मन अर्थात् दिल और शव अर्थात मुरदा (आकारान्त होने से स्त्रीलिंग हो गया) भाव यह कि स्त्री के समान अकर्मण्य, मुर्दा दिल बेहिम्मत ।

मर्द—मरदन किया हुआ, जैसे लतमर्द ।

खसम—अरबी में खिस्म शत्रु को कहते है ।

सन्तान—जो सन्त अर्थात् बाबा लम्पटदास की आन से जन्मे ।

बालक—बा सरयूपारी भाषा में 'है' को कहते है। जैसे ऐसन बा अर्थात् ऐसा ही है, और लक निरर्थक शब्द है ! भाव यह कि होना न होना बराबर है ।

लड़का—जो पिता से तो सदा कहे लड़, अर्थात् लड़ ले और स्त्री से कहे, का (क्या आज्ञा है ! ,

छोरा—कुलधर्म छोड़ देनेवाला (रकार ड़कार का बदला)

पुत्र—पु माने नर्क (संस्कृत) और त माने तुझे, (फारसी, जैसे जवाबत् चिदिहम्—तुझे उत्तर क्या दूँ ।) और रादाने धातु है, अर्थात् तुझे नर्क देने वाला !

"होली है"

तुम्हारा सिर है। यहां दरिद्र की आग के मारे होला (अथवा होला-भुना हुआ हरा चना) हो रहे हैं उन्हें होली है, हैं!

अरे कैसे मनहूस हो ! बरस बरस का त्योहार हैं, उसमें भी वही रोनी सूरत ! एक वार तो प्रसन्न होकर बोलो, होरी है !

अरे भाई हम पुराने समय के बंगाली भी तो नहीं है कि तुम ऐसे मित्रों को जबरदस्ती होरी (हरी) बोल के शान्त हो जाते। हम तो बीसवीं शताब्दी के अभागे हिन्दुस्तानी हैं, जिन्हें कृषि, वाणिज्य, शिल्प सेवादि किसी में भी कुछ तन्त नहीं है। खेतों की उपज, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, जंगलों का कट जाना, रेलों और नहरों की वृद्धि-इत्यादि ने मट्टी कर दी है। जो कुछ उपजता है वह कटके खलिहान में नही आने पाता, ऊपर ही ऊपर लद जाता है। रुजगार-व्यौहार में कहीं कुछ देखी नही पड़ता। जिन बाजारों में, अभी दस वर्ष भी नहीं हुए, कंचन बरसता था वहां अब दूकानें भाय भांय होती हैं! देशी कारीगरी को देश ही वाले नहीं पूछते। विशेपतः जो छाती ठोकठोंक ताली बजवा बजवा कागजों के तख्ते रंग रंग देशहित के गीत गाते फिरते हैं वह और भी देशी वस्तु का व्यवहार करना अपनी शान से बईद समझते है। नौकरी बी० ए०, एम० ए० पास करने वालों को भी उचित रूप में मुश्किल से मिलती है। ऐसी स्थिति में हमें होली

सूझती है कि दिवाली। यह ठीक है। पर यह भी तो सोचो कि हम तुम वंशज किनके है ? उन्हीं के न, जो किसी समय वसन्त पंचमी ही से --

"आई माघ की पाचैं बूढी नाचैं डोकरिया"

का उदाहरण बनजाते थे, पर जब इतनी सामर्थ्य न रही तब शिवरात्रि से होलिकोत्सव का आरम्भ करने लगे। जब इसका भी निर्वाह कठिन हुआ तब फागुन सुदी अष्टमी से---

"होरी मध्ये आठ दिन ब्याह माह दिन चार।
शठ पण्डित, वेश्या बधू सबै भए इकसार"

का नमूना दिखाने लगे। पर उन्हीं आनन्दमय पुरुषों के वंश में होकर तुम ऐसे मुहर्रमी बन जाते हो कि आज तिवहार के दिन भी आनन्द-बदन से होली का शब्द तक उच्चारण नही करते। सच कहो, कहीं होली बाइविल की हवा लगने से हिन्दूपन को सलीब पर तो नहीं चढ़ा दिया ?

तुम्हें आज क्या सूझी है, जो अपने पराये सभी पर मुँहें चला रहे हो ? होली वाइविल अन्यधर्म का ग्रथ है, उसके मानने वाले विचारे पहिले ही से तुम्हारे साथ का भीतरी-बाहरी सम्बन्ध छोड़ देते है। पहिली उमंग में कुछ दिन तुम्हारे मन पर कुछ चोट चला दिया भी करते थे, पर अब बरसो से वह चर्चा भी न होने के बराबर हो गई है ! ऐसी ही लड़ास लगी हो तो उनसे जा भिड़ो जो अभी तुम्हारे ही कहलाते है, तुम्हारे ही साथ रोटी-बेटी का व्यौहार रखते है, तुम्हारे ही दो चार मान्य ग्रथो के माननेवाले बनते है, पर तुम्हारे ही देवता पितर इत्यादि की निन्दा कर करके तुम्हें चिढ़ाने में ही अपना धर्म और अपने देश की उन्नति समझते है। अरे राम राम ! पर्व के दिन कौन चरचा चलाते हो ? हमतो जानते थे तुम्हीं मनहूस हो, पर तुम्हारे पास बैठे सो भी नसूढ़िया हो जाय। और बाबा दुनिया भर का बोझ परमेश्वर ने तुम्हीं को नहीं लदा दिया। यह कारखाने है, भले बुरे लोग और दुख सुख की दशा होती ही हुवाती रहती है। पर

मनुष्य को चाहिए कि जब जैसे पुरुष और समय का सामना आ पड़े तब तैसा बन जाय। मनको किसी झगड़े में न फँसने न दे।

आज तुम सचमुच कही से भांग खाके आये हो। इसी से ऐसी बेसिर पैर की हांक रहे हो। अभी कलतक प्रेम सिद्धान्त अनुसार यह सिद्ध करते थे कि मन का किसी ओर लगा रहना ही कल्याण का कारण है और इस समय कह रहे हो कि "मन को किसी झगड़े में फँसने न दे।" वाह! भला तुम्हारी किस बात को मानें?

हमारी बात मानने का मन करो तो कुछ हो ही न जाओ। यही तो तुमसे नहीं होता। तुम तो जानते हो कि हम चोरी चमारी सिखावेंगे।

नहीं यह तो नहीं जानते। और जानते भी हों तो बुरा न मानते। क्योंकि जिस काल में देश का अधिकांश निर्धन, निर्बल निरुपाय हो रहा है, उसमें यदि लोग "बुभुक्षितः किं न करोति पापम" का उदाहरण बन जाय तो कोई आश्चर्य नहीं है। पर हा यह तो कहेंगे कि तुम्हारी बातें कभी कभी समझ में नहीं आती। इससे मानने को जी नहीं चाहता।

यह ठीक है, पर याद रखो कि हमारी बाते मानने का मानस करोगे तो समझ में भी आने लगेगी, और प्रत्यक्ष फल भी देंगी।

अच्छा साहब मानते हैं, पर यह तो बतलाइये जब हम जानने योग्य नहीं हैं तो कैसे मान सकते हैं! छिः क्या समझ है! अरे बाबा! हमारी बातें मानने में योग्य होना और सकना आवश्यक नहीं हैं। जो बाते हमारे मुँह से निकलती हैं वह वास्तव में हमारी नहीं हैं—और उनके मानने की योग्यता और शक्ति हमको तुमको क्या किसी को भी तीन लोक और तीन काल में नहीं है। पर इसमें भी सन्देह करना कि कोई चुपचाप आखे मीच के मान लेता है वह परमानन्द-भागी हो जाता है।

'हि हि! ऐसी बातें मानने तो कौन आता है, पर सुनकर परमानन्द तो नहीं, हाँ, मसखरेपन का कुछ मजा जरूर पा जाता है। भला हमारी बातों में तुम्हारे मुँह से हि हि तो निकली। इस तोबड़ा से लटके हुए मुँह

के टाकों के समान दो तीन दात तो निकले। और नहीं तो मसखरेपन ही का सही मजा तो आया। देखो, आखें मट्टी के तेल की रोशनी और कुल्हिया के ऐनक की चमक से चौधियान गई हों तो देखो ! छत्तिसो जात, वरंच अजात के जूठे गिलास की मदिरा तथा भच्छ अभच्छ की गन्ध से अक्लि भाग न गई हो तो समझो। हमारी बातें सुनने में इतना फल पाया तो मानने में न जाने क्या प्राप्त हो जायगा। इसी से कहते हैं, भैया मान जाव, राजा मान जाव, मुन्ना मान जावो। आज मन मार के वैठे रहने का दिन नहीं है। पुरखो के प्राचीन सुख-सम्पति को स्मरण करनेका दिन है। इससे हँसो, बोलो, गाओ बजाओ, त्योहार मनाओ और सबसे कहते फिरो —होली है।

हो तो ली ही है। नहीं तो अब रही क्या गया है। खैर जो कुछ रह गया है उसी के रखने का यत्न करो पर अपने ढंगसे न कि विदेशी ढंगसे। स्मरण रक्खो कि जब तक उत्साह के साथ अपनी ही रीति-नीति का अनुसरण न करोगे तब तक कुछ न होगा। अपनी बातों को बुरी दृष्टि से देखना पागलपन है। रोना निस्साहसो का काम है। अपनी भलाई अपने हाथ से हो सकती है। मागने पर कोई नित्य डबल रोटी का टुकड़ा भी न देगा। इससे अपनापन मत छोड़ो। कहना मान जाव। आज होली है। हा हमारा हृदय तो दुर्दैव के वाणो से पूर्णतया होली (होल अगरेजी में छेद को कहते है, उससे युक्त) है। हमें तुम्हारी सी जिंदादिली (सहृदयता) कहा से सूझे ?

तो सहृदयता के बिना कुछ आप कर भी नहीं सकते, यदि कुछ रोए पीटे दैवयोग से हो भी जायगा तो "नकटा जिया बुरे हवाल" का लेखा होगा। इससे हृदय में होल (छेद) हैं उनपर साहस की पट्टी चढ़ाओ। मृतक की भाति पड़े पड़े काखने से कुछ न होगा। आज उछलने ही कूदने का दिन है। सामर्थ्य न हो तो चलो किसी हौली (मद्यालय) से थोड़ी सी

पिला लावें, जिसमें कुछ देर के लिए होली के काम के हो जाओ, यह नेस्ती काम की नहीं।

वाह तो क्या मदिरा पिलाया चाहते हो?

यह कलयुग है! बड़े बड़े वाजपेयी पीते है। पीछे से बल बुद्धि, धर्म, धन, मान, प्रान सब स्वाहा हो जाय तो बला से। पर थोड़ी देर उसकी तरंग में "हाथी मच्छर, सूरज जुगनू" दिखाई देता है! इससे, और मनोविनोद के अभाव में, उसके सेवकों के लिए कभी कभी उसका सेवन कर लेना इतना बुरा नहीं है जितना मृतचित्त बन बैठना। सुनिए! संगीत, साहित्य, सुरा और सौन्दर्य के साथ यदि नियम-विरुद्ध वर्ताव न किया जाय तो मन की प्रसन्नता और एकाग्रता कुछ न कुछ लाभ अवश्य होता है, और सहृदयता की प्राप्ति के लिए इन दो गुणो की आवश्यकता है, जिनके विना जीवन की सार्थकता दुःसाध्य है! बलिहारी है, महराज इस क्षणिक बुद्धि की। अभी तो कहते थे कि मन को किसी झगड़े में फँसने न देना चाहिए, अभी कहने लगे कि मन की एकाग्रता के बिना सहृदयता तथा सहृदयता के बिना जीवन की सार्थकता दुःसाध्य है। धन्य है, ये सरगापत्ताली बाते। भला हम आपको अनुरागी समझे या विरागी?

अरे हम तो जो है वही है, तुम्हे जो समझना हो समझलो। हमारी कुछ हानि नही है पर यह सुन रखो, सीख रक्खो, समझ रक्खो कि अनुराग और विराग वास्तव में एक ही है। जबतक एक ओर अचल अनुराग न होगा, तब तक जगत के खटराग मे विराग नहीं हो सकता, और जब तक सब ओर से आन्तरिकविराग न हो जाय तबतक अनुराग का निर्वाह सहज नहीं है। इसी से कहते हैं कि हमारी बाते चुप चाप मान ही लिया करो, बहुत ही अविचल को दौड़ा दौड़ा के थकाया न करो! इसी में आनन्द भी आता है, और हृदय का कपाट भी खुल जाता है। साधारण ढूंढ़ वाले लोग भगवान् भूतनाथ श्मसान बिहारी, मुँण्डमालाधारी को वैराग्य

का अधिष्ठाता समझते हैं पर वह आठों पहर अपनी प्यारी पर्वत-राजनन्दिनी को वामांग ही में धारण किए रहते हैं, और प्रेम शास्त्र के आचार्य हैं। इसी प्रकार भगवान कृष्णचन्द्र को लोग शृगार रसका देवता समझते हैं, पर उनकी निर्लिप्तता गीता में देखनी चाहिए। जिसे सुनाके उन्होंने अर्जुन का मोहजाल छुड़ाके वर्तमान कर्तव्य के लिए ऐसा दृढ़ कर दिया था कि उन्होने सबकी दया-मया, मोह-ममता को तिलाजलि देकर मारकाट आरम्भ कर दी थी। इन बातो में तत्वग्राहिणी समझ भली-भाँति समझ सकती है कि भगवान प्रेमदेव की अनन्त महिमा है। वहाँ अनुराग-विराग, सुखःदुख, मुक्ति-साधन सब एक ही है। इसी से सच्चे समझदार संसार में रहकर सब कुछ देखते-सुनते, करते-धरते हुए भी संसारी नहीं होते। केवल अपनी मर्यादा मे बने रहते है। और अपनी मर्यादा वही जिसे सनातन से समस्त पूर्व-पुरुष रक्षित रखते आये है, और उनके सुपुत्र सदा मानते रहेंगे।

काल, कर्म, ईश्वर अनुकूल हों वा प्रतिकूल, सारा संसार स्तुति करे वा निन्दा, वाह्य दृष्टि से लाभ देख पड़े वा हानि, पर वीर पुरुष वही है जो कभी कहीं किसी दशा मे अपनेपन से स्वप्न मे भी विमुख न हो। इस मूल मंत्र को भूलकर भी न भूले कि जो हमारा है वही हमारा है। उसी से हमारी शोभा है, और उसी में हमारा वास्तविक कल्याण है।

एतदनुसार आज हमारी होली है। चित्त शुद्ध करके वर्ष भर की कही सुनी क्षमा करके हाथ जोड़के पाव पड़के, मित्रो को मनाके वाहें पसार के उनसे मिलने और यथा सामर्थ्य जी खोलके परस्पर की प्रसन्नता सम्पादन करने का दिन है। जो लोग प्रेम का तत्व तनिक भी नहीं समझते केवल स्वार्थ-साधन ही को इति कर्तव्य समझते हैं, पर है अपने ही देश जाति के, उनसे घृणा न करके ऊपरी आमोद प्रमोद में मिलाके समयान्तर मे मित्रता का अधिकारी बनाने की चेष्टा करने का त्योहार है। जो निष्प्रयोजन

हमारी बात बात पर मुरकते ही हों उन्हे उनके भाग्य के आधीन छोड़ के अपनी मौज में मस्त रहने का समय है। इसी से कहते हैं, नई बहू की नाई घरमें, न घुसे रहो, पर्व के दिन मनमार के न बैठो, घर-बाहर, हेली व्यौहारी से मानसिक आनन्द के साथ कहते फिरो—

हो ओ ओ ली ईईई है।

मेले का ऊंट

भारत मित्र सम्पादक। जीते रहो— दूध बताशे पीते रहो! भाँग भेजी सो अच्छी थी। फिर वैसी ही भेजना। गत सप्ताह अपना चिट्ठा आपके पत्र मे टटोलते हुए "मोहनमेले" के लेख पर निगाह पड़ी। पढ़कर आप की दृष्टि पर अफसोस हुआ। पहली बार आपकी बुद्धि पर अफसोस हुआ था। भाई। आप की दृष्टि गिद्ध की सी होनी चाहिये, क्योंकि आप सम्पादक है। किन्तु आपकी दृष्टि गिद्ध सी होने पर भी उस भूखे गिद्ध की सी निकली जिसने ऊँचे आकाश में चढ़े-चढ़े भूमि पर एक गेहूँ का दाना पड़ा देखा पर उसके नीचे जो जाल बिछ रहा था वह उसे न सूझा। यहाँ तक कि उस गेहूँ के दाने को चुगने से पहले जाल में फँस गया।

मोहन मेले मे आप का ध्यान दो एक पैसे की एक पूरी की तरफ गया। न जाने आप घर से कुछ खाकर गये थे या योंहीं। शहर की एक पैसे की पूरी के मेले में दो पैसे हो तो आश्चर्य न करना चाहिये, चार पैसे भी हो सकते थे। यह क्या देखने की बात थी? तुमने व्यर्थ बातें बहुत देखीं, काम की एक भी तो देखते, दाईं ओर जाकर तुम ग्यारहसौ सतरों का एक पोस्टकार्ड देख आये पर बाईं तरफ बैठा ऊँट भी तुम्हें दिखाई न दिया। बहुत लोग उस ऊँट की ओर देखते और हँसते थे। कुछ लोग

कहते थे कि कलकत्ते में ऊँट नही होते इसी से मोहन मेले वालों ने इ । विचित्र जानवर का दर्शन कराया था। बहुत सी शौकीन बीबियाँ कितने ही फूल बाबू ऊँट का दर्शन करके खिलते दाँत निकालते चले गये। तब कुछ मारवाड़ी बाबू भी आये। और झुक झुक कर उस काठ के घेरे में बैठे हुए ऊँट की तरफ देखने लगे। एक ने कहा–"ऊँटड़ो है।"

दूसरा बोला—"ऊँटड़ो कठेते आयो ?" ऊँट ने भी यह देख दोनों ओठो को फड़काते हुए थूथनी फटकारी। भङ्ग की तरंग में मैने सोचा कि ऊँट अवश्य ही मारवाड़ी बाबुओंसे कुछ कहता है। जी में सोचा कि चलो देखें वह क्या कहता है ? क्या उसकी भाषा मेरी समझ में न आवेगी। मारवाड़ियों की भाषा समझ लेता हूँ तो मारवाड़ के ऊँट की बोली समझ में न आवेगी ? इतने में तरंग कुछ अधिक हुई। ऊँट की बोली साफ साफ समझ में आने लगी। ऊँट ने मारवाड़ी बाबुओ की ओर थुथनी करके कहा—

बेटा। तुम बच्चे हो, तुम क्या जानोगे ? यदि मेरी उमर का कोई होता तो वह जानता। तुम्हारे बाप के बाप जानते थे कि मै कौन हूँ क्या हूँ। तुमने कलकत्ते के महलों मे जन्म लिया तुम पोतड़ों के अमीर हो। मेले मे बहुत चीजे है उनको देखो। और यदि तुम्हें कुछ फुरसत हो तो लो सुनो, सुनाता हूँ। आज दिन तुम विलायती फिटिन, टमटम और जोड़ियों पर चढ़कर निकलते हो, जिनकी कतार तुम मेले के द्वार पर मीलों तक छोड़ आये हो, तुम उन्हीं पर चढ़कर मारवाड़ से कलकत्ते नहीं पहुँचे थे। यह सब तुम्हारे साथ की जन्मी हुई है। तुम्हारे बाप पचास साल के भी न होंगे इससे वह भी मुझे भली भाँति नहीं पहचानते। हा उनके भी बाप हो तो मुझे पहचानेंगे। मैने ही उनको पीठ पर लाद कर कलकत्ते तक पहुँचाया है।

आज से पचास साल पहले रेल कहाँ थी। मैंने मारवाड़ से मिरजा पुर तक और मिरजापुर से रानीगंज तक कितने ही फेरे किये है। महीनों

तुम्हारे पिता के पिता तथा उनके भी पिताओं का घर बार मेरे ही पीठ पर रहता था। जिन स्त्रियों ने तुम्हारे बाप और बाप के भी बाप को जना है वह सदा मेरी पीठ को ही पालकी समझती थी। मारवाड में मैं सदा तुम्हारे द्वार पर हाजिर रहता था, पर यहाँ वह मौका कहाँ ! इसी से इस मेले में तुम्हें देखकर आँखें शीतल करने आया हूँ। तुम्हारी भक्ति घट जाने पर भी मेरा वात्सल्य नहीं घटता है। घटे कैसे मेरा तुम्हारा जीवन एक ही रस्सी से बँधा हुआ था ! मैं ही हल चलाकर तुम्हारे खेतों में अन्न उपजाता था और मैं ही चारा आदि पीठ पर लादकर तुम्हारे घर पहुँचाता था। यहाँ कलकत्ते में जल की कलें है, गङ्गाजी हैं, जल पिलाने को ग्वाले कहार हैं पर तुम्हारी जन्मभूमि मे मेरी ही पीठ पर लदकर कोसों से जल आता था और तुम्हारी प्यास बुझाता था।

मेरी इस घायल पीठ को घृणा से न देखो इस पर तुम्हारे बड़े अन्न रस्सियों यहाँ तक कि उपले लादकर दूर-दूर तक ले जाते थे। जाते हुये मेरे साथ पैदल जाते थे और लौटते हुए मेरी पीठ पर चढ़े हुए हिचकोले खाते वह स्वर्गीय सुख लूटते थे कि तुम रबड़ के पहिये वाली चमड़े की कोमल गद्दियों दार फिटिन में बैठकर भी वैसा आनन्द प्राप्त नहीं कर सकते मेरी बलबलाहट उनके कानो को इतनी सुरीली लगती थी कि तुम्हारे बागीचों मे तुम्हारे गवैयो तथा तुम्हारी पसन्द की बीबियों के स्वर भी तुम्हें उतने अच्छे न लगते होगे। मेरे गले के घण्टो का शब्द उनको सब बाजों से प्यारा लगता था। फोग के जंगल मे मुझे चरते देखकर वह उतने ही प्रसन्न होते थे जितने तुम अपने सजे बागीचों में भग पीकर, पेट भरकर और ताश खेलकर।"

भङ्ग की निन्दा सुनकर मैं चौक पड़ा। मैंने ऊँट से कहा—बस बलबलाना बन्द करो ! यह बावला शहर नही जो तुम्हें परमेश्वर समझे ! तुम पुराने हो तो क्या, तुम्हारी कोई कल सीधी नहीं है। जो पेड़ो की छाल और पत्तों से शरीर ढाकते थे, उनके बनाये कपड़ों से सारा संसार बाबू

बना फिरता है, जिनके पिता सिर पर गठरी ढोते थे, वही पहले दरजे के अमीर हैं, जिनके पिता स्टेशन से गठरी आप ढोकर लाते थे उनको सिरपर पगड़ी सम्हालना भारी है, जिनके पिता का कोई पूरा नाम न लेकर पुकारता था, वह बड़ी बड़ी उपाधिधारी हुए है। संसार का जब यही रंग है तो ऊँट पर चढ़ने वाले सदा ऊँट ही पर चढ़े यह कुछ बात नहीं। किसी की पुरानी बात यो खोलकर कहने से आजकल के कानून से हतक—इज्जत होजाती है। तुम्हें खबर नहीं कि अब मारवाड़ियोने "एसोसीयेशन" बनाली है अधिक बलबलाओगे तो वह रिजोल्यूशन पास करके तुम्हें मारवाड़ से निकलवा देगे। अतः तुम उनका कुछ गुणगान करो जिससे वह तुम्हारे पुराने हक को समझे और जिस प्रकार लार्ड कर्जन ने किसी जमाने के "ब्लैकहोल" को उस पर लाट बनवा कर और उसे सङ्गमरमर से मढ़वा कर शानदार बनादिया है उसी प्रकार मारवाड़ी तुम्हारे लिये मखमली काठी, जरी की गद्दियाँ ही, पन्नो की नकेल और सोने का घन्टियाँ बनवाकर तुम्हें बड़ा करेगें और अपने बड़ों की सवारी का सम्मान करेगे।

[सन् १६०१ ई०]

मनुष्य गणना

जय भङ्ग भवानी की। सम्पादक महाशय! अब के अच्छी घसीटन मे फँसे थे, पर राम आसरे से "भारतमित्र" मे अपना चिट्ठा छपवाने को और कुछ दिन के लिये बच गये। इस बार गरीब शिवशम्भुशर्म्मा की होली किरकरी होती होती बच गई। सो अब गहरी भङ्ग भेजिये कि पीते ही घर घूमे और छप्पर हिले।

आप अपने होली के नम्बर की धुन मे जान पड़ता है कि दीन दुनिया सब भूल गये। फिर शिवशम्भु शर्मा को याद रखते? पर एक बात आपको बता देते हैं कि जब आप अपना होली का नम्बर तय्यार करने में लगे थे ठीक उसी समय कलकत्ते मे मनुष्य गणना के बेगारी पकड़े जाते थे। सरहदी लडाई के समय जिस प्रकार पञ्जाब मे ऊँट और छकड़े पकड़े जाते थे, इस कलकत्ता महा नगर में ठीक उसी प्रकार बाबू लोग पकड़े जाकर "एन्यूमरेटर" बनाये जाते थे। कई दिन तक यह बेचारे छकड़ो की भांति लदे और ऊँट की तरह गर्दन उठाये गली गली घूमते थे। इन गरीबो की दशा देखकर बड़ी हँसी आती थी, पर आगे चलकर वही हँसी आंसुओं में बदल गई।

मुझे यह खबर न थी कि बाजार मे जाते ही बेगार का छकड़ा बनना पड़ेगा। एक कनिस्टबल मुझे देखकर पूछने लगा कि हे महाराज! आप

अंग्रेजी जानते हैं ? मैंने कहा—हां। इतना सुनते ही कनिस्टबल ने कहा—तो फिर चलिए थाने में साहब बुलाते है। मैंने कितना ही कहा कि मुझ शिवशम्भु शर्मा का थाने से काम ही क्या है, पर एक न सुनी गई। कनिस्टबल धकेलकर मुझे थाने में ले गया।

एक साहब ने आकर कागजो का एक पुलन्दा मेरे सामने डाल दिया और कहा कि सेन्सस आईन की रूसे तुम एन्यूमरेटर बनाये गये, तुम को एक मुहल्ले के बीस मकानोंकी मनुष्य गणना करनी पड़ेगी। और खबरदार इस काम से इनकार करोगे या इसमे गफलत करोगे तो तुमको सजा हो जावेगी।

मेरी बुद्धि चकरा गई! मैने कहा—साहब, मैं भङ्गड़ जङ्गड़ आदमी मुझसे भला यह काम कैसे होगा ? इसके उत्तर में साहब ने कहा कि नहीं नही अलबट टुमको करना होगा और नहीं करने से जेल जाना होगा! जाओ अपना घर पर जाकर सब काम समझो!

"गले पड़ी ढोल की, बजाये सिद्ध" समझ कर मैं कागजों का पुलन्दा लिये चल निकला। साहब ने कहा घर जाओ. वह क्या जाने कि शिवशम्भु के घर है या नही ? आज शिवशम्भु को घर दरकार है जिनके घर फालतू हो वह शिवशम्भु को देदे वह उसमे बैठकर सरकारी बेगार पूरी करेगा।

घर दर तो कुछ न सूझा। सूझा सरकारी बाग—बीडन गार्डन! वहां जाकर सब प्रकार की चिन्ताओं को भगानेवाली भगवती भंग का ध्यान किया। इस भगवती की कृपा से सब चिन्ताएं दूर होकर बुद्धि निर्मल हुई तब पुलिन्दा खोलकर देखना आरम्भ किया। नम्बर, मकान, नाम, जाति आदि से लेकर पैदा होने की जगह तक का पता लिखने की बात देखी। देखते देखते जब नीचेको दृष्टि गई तो कुछ विशेष बातें लिखी देखी। उनमें लिखा था कि हीजड़ों को मर्द लिखो। विचार उत्पन्न हुआ

कि यह दिल्लगी तो नहीं है ? किन्तु सरकार प्रजा-से दिल्लगी करे ऐसा हो नहीं सकता !

मर्द मर्द लिखे जावे औ स्त्रिया स्त्रिया तो हिजड़ों को हीजड़ों ही की गिनतीं मे क्यों न लिखा जावे ? ईश्वर ने जब उनको स्त्री पुरुष दोनो ही से विलक्षण बनाया है तो मनुष्य गणना मे उनका वह लक्षण लोप क्यों किया जावे ? इसके सिवा जब हीजड़े मर्द लिख गये तो मर्दों और हीजड़ों मे पहचान ही क्या रही ?

देर तक जी मे यही उलझन रही कि किस कारण सरकार मर्द और हीजड़ों को एक कर रही है । क्या भारत वर्ष मे मर्द और हिजड़ो मे कुछ पहचान रखने की जरूरत नही है ? मै इसी विचार मे था कि एक लम्बी तरङ्ग ने उठकर मेरी गर्दन दबा दी । नशे की गहरी झोक में मर्दों और हीजड़ों की एकता भली भाति समझ मे आने लगी ।

जब भारतवर्ष के मर्द मर्द कहलाने से प्रसन्न है तो यहा के हीजडो को मर्द कहना क्या वेजा है ? मर्द ऐसा कौन काम करते है जो हीजड़े नही कर सकते ? एक पुरानी फारसी की कहावत है कि हीजड़ों को हथियार से क्या लाभ ? अर्थात् हीजड़ो के पास यदि हथियार रहे भी तो उससे क्या लाभ है ? भारतवर्ष मे जो लोग मर्द कहलाते है सरकार ने उनसे हथियार छीन लिये है । केवल इसलिये उनके पास हथियार रहने से कुछ फायदा नही है । कितने ही वर्ष बीत गये बिना हथियार रहने पर भी देश के मर्द मर्द ही कहलाते हैं इससे जान पड़ता है कि हीजड़ों के पास भी हथियार न रहने से उनको कोई नामर्दी का दोष नही लगा सकता । तथा जैसे हीजड़े के पास हथियार रहने से कोई लाभ नहीं, वैसे ही अंगरेजी सरकार की समझ में भारत वर्ष के मर्दो के पास हथियार रहने से भी कुछ लाभ नही ।

इस देश के हथियार—रहित मर्दों को जब सरकार कृपापूर्वक मर्द ही समझती है तो मनुष्यगणना में इस देश के हीजड़ों को भी उन्ही की श्रेणी में रख देना कुछ युक्ति विरुद्ध नहीं है।

वह तो हुई हथियार की बात! अब हथियारों का खयाल छोड़ कर मर्दों और हीजड़ों का मुकाबला करना चाहिये। खाने मे, पीने में, चलने फिरने में, सोने जागने और उठने बैठने में, कपडा पहनने में—सब में देखिये और बताइये कि हीजड़े और मर्दों के बीच इन सब बातो में क्या भेद है?

इस देश के मर्द दिन में खाते पीते कपड़ा पहनते और चलते हैं तथा रात को पॉव पसारकर सो रहते है। हीजड़े भी ठीक इसी प्रकार सब काम करते हैं। फिर उनका नाम भी सरकार मर्दों में क्यों न लिखे?

यदि गाने बजाने या हथेली पीटने और गले में ढोलकी डालने की बात कहिये तो इस भारतवर्ष में वैसे मर्द कहलाने वालों की भी कमी नहीं है मर्द नामधारियों में स्त्री बन कर नाचने वाले और ढोलकी बजाने वाले कितने ही हैं। हीजड़े अपनी ही ढोलकी और अपने हों पांव के घुंघरूओ की आवाज पर नाचते है किन्तु मर्द कहलानेवालो में कितने ही ऐसे है जो रण्डी या जोरूकी उंगली के इशारे पर नाचते है। फिर भी हीजड़ों का नाम मर्दों में क्यों न लिखा जावे?

यदि यह कहो कि हीजड़े पराये द्वार पर जाकर बधाई देते हैं और न्योछावर मांगते हैं, तो भी शिवशम्भु शर्मा के निकट उनका कुछ हीजड़ापन नहीं है। सेठ जी के जम्हाई लेने पर पास बैठने वालों में से कितने ही चुटकियाँ बजाते हैं और बाबू साहब की बैठक में जाकर उनके मुंह पर उनके चेहरे मोहरे और कपड़े लत्तों की प्रशंसा कितनेही गाते हैं। यदि यह सब लोग मर्द कहला सकते हैं, तो हीजड़े भी मर्द कहला सकते हैं इसमें सन्देह नहीं।

हीजड़े विवाह आदि उत्सवों पर दो घड़ी तुम्हारी खुशामद क ने आते हैं। पर हे मर्द नामधारियो! तुममें से ऐसे बहुत है, जिनको खुशामद करते उमरें बीत गई। तुम मर्द हो तो भी तुम्हारी रक्षा सरकार करती है और हीजड़े, हीजड़े है तब भी उनकी रक्षा सरकार करती है। कौन काम में तुम उनसे बढ़ कर हो जिससे तुम मर्द और वह हीजड़े कहलावे। तुम खाते हो, पीते हो, शौकीनी करते हो, बाबूपन दिखाते हो और अन्त मे मर जाते हो, हीजड़े भी यहाँ सब करते हुये तुम्हारी तरह मर जाते है। मरने पर दोनों बराबर। नही नही हीजड़े तुमसे बेहतर। क्योंकि हीजड़े मरकर अपने पीछे और हीजड़े नहीं छोड़ जाते, पर तुम अपने से मर्द बहुत छोड़ जाते हो!

इसके अतिरिक्त यह बात भी ध्यान रखने की है कि अब सरकार अँग्रेज के बनाये सब कुछ बन सकता है। वह तुम्हारे हथियार छीन कर तुम्हें हीजडा बना सकती है और मनुष्य गणना मे हीजड़ों का नाम मर्दों के साथ लिखवा सकती है! इन सब बातों से तुम यह न समझ लेना कि शिवशम्भु हीजड़ों का हिमायती है नहीं नहीं, यह पागल ब्राह्मण तुम्हें हीजड़ों और मर्दों के पहचानने के दिव्य नेत्र देता है।

जिनके बाप दादा भेड़ की आवाज सुनकर डर जाते थे, जिनको स्वयं चाकू से कलम का डङ्क काटते भय लगता है उन्हे सरकार ने "राय बहादुर" बनाया है। जिनकी हुकूमत उनके घर की चारदीवारी से कभी बाहर नहीं निकली है वैसे कितने ही राजा बहादुर और महाराज बहादुर कहलाते हैं जब मारवाड़ का राजा भी राजा है और मोची पाड़े का राजा भी राजाही है तो हीजड़ों के मर्दों में लिखे जाने का कुछ अफसोस नहीं है। जहाँ ग्वालियर का महाराज भी महराजा है और पथरियाघट्टा का महाराज भी महाराज है उस देश के हीजड़ों को सरकार मर्दों में लिखवावे तो शिवशम्भु शर्मा उससे नाराज नहीं। वरञ्च यदि सरकार उनको मर्दों की

सब उपाधियों से भी विभूषित किया करे तो शिवशम्भु को अधिक प्रसन्नता होगी।

अपने इस नोट के साथ भङ्ग प्रसादात मैंने अपने हिस्से की गणना कर डाली है। और कागजों का पुलन्दा उन्हीं साहब के सामने फेंक आया हूँ। साहब मेरे काम में प्रसन्न हुए हैं! मैंने यह भी सुना कि किसी के काम से भी वह अप्रसन्न नहीं हुए! बेगार में अप्रसन्नता ही क्या! जो हो—"जान बची लाखो पाये।"

[सन् १६०१ ई०]

एक दुराशा

नारंगी के रस से जाफरानी बसन्ती बूटी छानकर शिवशम्भु शर्मा खटिया पर पड़े मौजों का आनन्द ले रहे थे। खयाली घोड़े की बागें ढीली कर दी थी। वह मनमानी जकन्दे भर रहा था। हाथ पावो को भी स्वाधीनता दी गई थी! वह खटिया के तूलअरजकी सीमा उल्लंघन करके इधर-उधर निकल गये थे। कुछ देर इसी प्रकार शर्मा जी का शरीर खटिया पर था और खयाल दूसरी दुनियाँ मे।

अचानक एक सुरीली गाने की आवाज ने चौका दिया। कनरसिया शिवशम्भु खटिया पर उठ बैठे। कान लगाकर सुनने लगे। कानो में वह मधुर गीत बार-बार अमृत ढालने लगा—

चलो चलो आज खेले होली कन्हैया घर।

कमरे से निकल कर बरामदे में खड़े हुए। मालुम हुआ पड़ोस मे किसी अमीर के यहाँ गाने-बजाने की महफिल हो रही है। कोई सुरीली लय से उक्त होली गा रहा है। साथ ही देखा, बादल घिरे हुए हैं, बिजली चमक रही है, रिमझिम झड़ी लगी हुई है। बसन्त में सावन देख कर अक्ल जरा चक्कर में पड़ी। बिचारने लगे कि गानेवाले को मलारगाना चाहिए था, न कि होली। साथ ही खयाल आया कि फागुन सुदी है, बसन्त के विकास का समय है, वह होली क्यों न गावे? इसमें तो गाने वाले की नहीं, विधि की भूल है, जिसने बसन्त में सावन बना दिया है। कहाँ तो चाँदनीं छिटकी होती, निर्मल वायु बहती, कोयल की कूक सुनाई

देती, कहीं भादों की-सी अंधियारी है वर्षा की झड़ी लगी हुई है। ओह कैसा ऋतुविपर्यय है।

इस विचार को छोड़कर गीत के अर्थ का विचार जी में आया। होली खिलैया कहते हैं कि चलो आज कन्हैया के घर होली खेलेंगे! कन्हैया कौन! ब्रज के राजकुमार! और खेलने वाले कौन? उनकी प्रजा ग्वालबाल। इस विचार ने शिवशम्भु शर्मा को और भी चौंका दिया कि ऐ क्या भारत मे ऐसा भी समय था जब प्रजा के लोग राजा के घर जाकर होली खेलते थे। और राजा-प्रजा मिलकर आनन्द मनाते थे! क्या इसी भारत में राजा लोग प्रजा के आनन्द को किसी समय अपना आनन्द समझते थे! अच्छा, यदि आज शिवशम्भु शर्मा अपने मित्र वर्ग सहित, अबीर गुलाल की झोलियाँ भरे-रङ्ग की पिचकारियाँ लिये अपने राजा के घर होली खेलने जाये तो कहाँ जाय? राजा दूर सात समुद्र पार है। राजा का केवल नाम सुना है। न राजा को शिवशम्भु ने देखा न राजा ने शिवशम्भु को। खैर राजा नहीं, उसने अपना प्रतिनिधि भारत में भेजा है। कृष्ण द्वारका ही में हैं पर उद्धव को प्रतिनिधि बनाकर ब्रजवासियों को सन्तोष देने के लिये ब्रजमें भेजा है। क्या उस राज प्रतिनिधि के घर जाकर शिवशम्भु होली नही खेल सकता?

ओफ! यह विचार कैसा ही बेतुका है, जैसे अभी वर्षा में होली गाई जाती थी। पर इसमें गाने वाले का क्या दोष है, वह तो समय समझ कर ही गा रहा था। यदि बसन्त में वर्षा की झड़ी लगे, तो गाने वाले को क्या मलार गाना चाहिये? सचमुच बडी कठिन समस्या है। कृष्ण है उद्धव है, पर ब्रजवासी उनके निकट भी नहीं फटकने पाते। राजा है, राजप्रतिनिधि है पर प्रजा की उन तक रसाई नहीं। सूर्य है धूप नहीं। चन्द्र है, चाँदनी नहीं! माइलार्ड! नगर ही में है! पर शिवशम्भु उनके द्वारतक नहीं फटक सकता है, उनके घर चलकर होली खेलना तो विचार ही दूसरा है माई लार्ड के घर तक प्रजा की बात नहीं पहुँच सकती। बात की

हवा नहीं पहुँच सकती। जहाँगीर की भाँति उसने अपने शयनागार तक ऐसा कोई घण्टा नही लगाया जिसकी जजीर बाहर से हिलाकर प्रजा अपनी फरयाद उसे सुना सके ! न आगे को लगाने की आशा है। प्रजा की बोली वह नहीं समझता उसकी बोली प्रजा नही समझती। प्रजा के मन का भाव वह न समझता है, न समझना चाहता है। उनके मनका भाव न प्रजा समझ सकती हैं, न समझनेका कोई उपाय है। उसका दर्शन दुर्लभ है। द्वितीया के चन्द्र को भाँति कभी-कभी बहुत देर तक नजर गड़ाने से उसका चन्द्रानन दिख जाता है, तो दिख जाता है। लोग उंगलियों से इशारे करते हैं कि वह है। किन्तु दूज के चाँद का उदय का भी एक समय है। लोग उसे जान सकते हैं। माई लार्ड के मुखचन्द्र के उदय के लिये कोई समय भी नियत नहीं। अच्छा, जिस प्रकार इस देश का निवासी माइलार्ड का चन्द्रानन देखने को टकटकी लगाये रहता है या जैसे शिव शम्भु शर्मा के जी में अपने देश के माइलार्ड से होली खेलने को आई, इस प्रकार कभी माइलार्ड को भी इस देश के लोगों की सुध आती होगी ? क्यो कभी श्री मान् का जी होता होगा कि अपनी प्रजा में जिसके दण्डमुन्ड के विधाता होकर आये है किसी एक आदमी से मिलकर उसके मन की बातें पूछे या कुछ अमोद प्रमोद की बाते करके उसके मन को टटोले ! माइलार्ड ड्यूटी का ध्यान दिलाना सूर्य को दीपक दिखाना हैं।

वह स्वय श्रीमुख से कह चुके है कि ड्यूटी में बँधा हुआ मै इस देश मे फिर आया। यह देश मुझे बहुत ही प्यारा है ! इसमें ड्यूटी और प्यार की बात श्रीमान् के कथन से ही तय हो जाती है। उसमें किसी प्रकार की हुज्जत उठाने की जरूरत नहीं। तथापि यह प्रश्न आपसे आप जी में उठता है कि इस देश की प्रजा से प्रजा के माइलार्ड का निकट होना और प्रजा के लोगों की बात जानना उस ड्यूटी की सीमा तक पहुँचा है या नहीं ? यदि पहुँचा है, तो क्या श्रीमान् बता सकते है कि अपने छः साल के लम्बे शासन में इस देश की प्रजा को क्या जाना और उससे क्या सम्बन्ध

उत्पन्न किया ? जो पहरेदार सिरपर फैटा बाँधे हाथ मे सगीनदार बन्दूक लिये, काठ के पुतलो की भाँति गवर्नमेंट हाउस के द्वार पर दण्डायमान रहते है या छाया की मूर्ति की भाँति जरा इधर उधर हिलते डुलते दिखाई देते है, कभी उनको भूले भटके आपने पूछा है कि कैसी गुजरती है ? किसी काले प्यादे-चपरासी या खानसामा आदि से कभी अपने पूछा कि कैसे रहते हो ? तुम्हारे देश की क्या चाल ढाल है ? तुम्हारे देश के लोग हमारे राज्य को कैसा समझते है ? क्या इन नीचे दरजे के नौकर चाकरो को भी माइलार्ड के श्री मुख से निकले हुए अमृतरूपी वचनों के सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ या खाली पेड़ो पर बैठी चिड़ियो का शब्द ही उनके कानों तक पहुँच कर रह गया ? क्या कभी सैर तमाशे में टहलने के समय या किसी एकान्त स्थान में इस देश के किसी आदमी से कुछ बातें करने का अवसर मिला ? अथवा इस देश के प्रतिष्ठित बेगरज आदमी को अपने घर पर बुलाकर इस देश के लोगो के सच्चे बिचार जानने की चेष्टा की ? अथवा कभी बिदेश या रियासतो के दौरे में उन लोगो के सिवा जो झुक-झुक कर लम्बी सलामे करने आये हो, किसी सच्चे और बेपरवा आदमी से कुछ पूछने या कहने का कष्ट किया ? सुनते हैं कि कलकत्ते में श्रीमान् ने कोना कोना देख डाला। भारत में क्या भीतर क्या सीमाओ पर कोई जगह देखे बिना नहीं छोड़ी। बहुतो का ऐसाही विचार था। पर कलकत्ता — यूनिवर्सिटी के परीक्षोतीर्ण छात्रों की सभा मे चान्सलर का जामा पहन कर माइलार्ड ने जो अभिज्ञता प्रगट की, उससे स्पष्ट हो गया कि जिन आँखो से श्रीमान् ने देखा, उनमे इस देश की बाते ठीक देखने की शक्ति न थी।

सारे भारत की बात जाय, इस कलकत्ते ही में देखने की इतनी बाते हैं कि केवल उनको भलिभांति देख लेने मे भारतवर्ष की बहुत सी बातो का ज्ञान हो सकता है।

माइलार्ड के शासन के छः साल हालवेल के स्मारक में लाट बनवाने, ब्लैक होल का पता लगाने, आक्टरलोनी की लाट को मैदान से उठवाकर
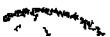
वहाँ विक्टोरिया मेमोरियल हाल बनवाने, गवर्नमेन्ट हाउस के आसपास अच्छी रोशनी, अच्छे फुटपाथ और अच्छी सड़कों का प्रबन्ध कराने मे बीत गये। दूसरा दौरा भी वैसे ही कामों मे बीत रहा है। सम्भव है कि उसमे भी श्रीमान् के दिल पसन्द अंग्रेजी मुहल्लों में कुछ और बड़ी-बड़ी सड़के निकल जाये और गवर्नमेंट हाउस की तरफ के स्वर्ग की सीमा और बढ़ जावे। पर नगर जैसा अंधेरे मे था, वैसा ही रहा क्यो कि उसकी असली दशा देखने के लिये और ही प्रकार की आँखो की जरूरत है। जब तक वह आँख न होगी यह अधेर योंही चला जावेगा। यदि किसी दिन शिवशम्भु शर्मा के साथ माइलार्ड नगर की दशा देखने चलते, तो वह देखते कि इस महानगर की लाखो प्रजा भेडों और सूअरो की भाँति सड़े गन्दे झोपडों में पडी लोटती है! उनके आसपास सड़ी बदबू और मैले सड़े पानी के नाले बहते है। कीचड़ और कूडे के ढेर चारो ओर लगे हुए है उनके शरीरो पर मैले कुचैले फटे चिथड़े लिपटे हुए हैं। उनमे से बहुतों को आजीवन पेटभर अन्न और शरीर ढाकने को कपड़ा नहीं मिलता! जाड़ो मे सर्दी से अकड़ कर रह जाते है और गर्मी में सड़को पर घूमते तथा जहा तहा पड़ते फिरते है। बरसात मे सडेसीले घरो में भींगे पड़े रहते है। साराश यह है कि हरेक ऋतु की तीव्रता मे सबसे आगे मृत्यु क पथ का वही अनुगमन करते है। मौत ही एक है, जो उनकी दशा पर दया करके जल्द उन्हें जीवन रूपी रोग के कष्ट से छुड़ाती है।

परन्तु क्या इनसे भी बढ़कर और दृश्य नहीं है? हाँ, है। पर जरा और स्थिरता से देखने के है बालू मे विखरी हुई चीनी को हाथी अपनी सूड से नही उठा सकता। उसके लिये चिवटी की जिह्वा दरकार है इसी कलकत्ते मे, इसी इमारतो के नगर मे, माइलार्ड का प्रजा में हजारो आदमी ऐसे है जिनको रहने को सड़ा झोपड़ा भी नहीं है। गलियों और सडको पर घूमते घूमते जहाँ जगह देखते है वही पड़े रहते है। बीमार होते हैं, तो सडको ही पर पडे पाँव पीट कर मर जाते हैं। कभी आग

जलाकर खुले मैदान में पड़े रहते हैं कभी कभी हलवाइयों की भट्ठियो से चमट कर रात काट देते हैं। नित्य इनकी दो-चार लाशे जहाँ-तहाँ से पडी हुई पुलिस उठाती है। भला माइलार्ड तक उनकी बात कौन पहुँचावे ! दिल्ली—दरबार में भी, जहाँ सारे भारत का वैभव एकत्र था, सैकड़ो ऐसे लोग दिल्ली की सड़कों पर पड़े दिखाई देते थे, परन्तु उनकी ओर देखने वाला कोई न था। यदि माइलार्ड एक बार इन लोगो को देख पाते, तो पूछने को जगह हो जाती कि वह लोग भी ब्रिटिश राज्य के सिटीजन हैं वा नहीं ? यदि है, तो कृपापूर्वक पता लगाइये कि उनके रहने के स्थान कहाँ है और ब्रिटिश राज्य से उनका क्या नाता है ? क्या कह कर वह अपने राजा और उनके प्रतिनिधि को सम्बोधन करे ? किन शब्दो मे ब्रिटिश राज्य को आसीस दे ? क्या यो कहे कि जिस ब्रिटिश राज्य में हम अपनी जन्मभूमि मे एक उंगल भूमि के अधिकारी नही, जिसमें हमारे शरीर को फटे चिथड़े भी नहीं जुड़े और न कभी पापी पेट को पूरा अन्न मिला, उस राज्य की जय हो। उसका राज प्रतिनिधि हाथियों का जुलूस निकाल कर सबसे बड़े हाथी पर चवर छत्र लगाकर निकले और स्वदेश मे जाकर प्रजाके सुखी होने का डङ्का बजावे ?

इस देश मे करोड़ो प्रजा ऐसी है जिसके लोग जब संध्या—सवेरे किसी स्थान पर एकत्र होते है तो महाराज बिक्रमकी चर्चा करते है और उन राजा-महाराजाओं की गुणावली का वर्णन करते है, जो प्रजा का दुःख मिटाने और उनके अभावो का पता लगाने के लिये रात को वेश बदल कर निकला करते थे। अकबर के प्रजापालन और बीरबल के लोकरञ्जन की कहानियाँ कह कर वह जी बहलाते हैं और समझते हैं कि न्याय और सुख का समय बीत गया ! अब वह राजा संसार में पैदा नहीं होते, जो प्रजा के सुख-दुख की बाते उनके घरो में आकर पूछ जाते थे ! महारानी विक्टोरिया को वह अवश्य जानते हैं कि वह महारानी थी। अब उनके पुत्र उनकी जगह राजा और इस देश के प्रभु हुए है। उनको इस

बात की खबर तक भी नहीं कि उनके प्रभु के कोई प्रतिनिधि है और वही इस देश के शासन के मालिक होते है तथा कभी कभी इस देश की तीस करोड़ प्रजा का शासन करने का घमण्ड भी करते हैं। अथवा मन चाहे तो इस देश के साथ बिना कोई अच्छा वर्ताव किये भी यहाँ के लोगो को झूठा, मक्कार आदि कहकर अपनी बड़ाई करते हैं।

इन सब विचारो ने इतनी बात तो शिवशम्भु के जीमें भी पक्की कर दी कि अब राजा-प्रजा के मिलकर होली खेलने का समय गया। जो बाकी था, वह काश्मीर नरेश महाराज रणबीर सिंह के साथ समाप्त हो गया! इस देश मे उस समय के फिर लौटने की जल्द आशा नहीं। इस देश की प्रजा का अब वह भाग्य नहीं है। साथ ही राजगुरू का भी ऐसा सौभाग्य नही है, जो यहाँ की प्रजा के अकिंचन प्रेम को प्राप्त करने की परवा करे। माईलार्ड अपने शासन कालका सुन्दर से सुन्दर सचित्र इतिहास स्वयं लिखवा सकते हैं, वह प्रजा के प्रेम की क्या परवा करेगे। तो भी इतना संदेश भङ्गड़ शिवशम्भु शर्मा अपने प्रभु तक पहुँचा देना चाहता है कि आप के द्वार पर होली खेलने की आशा करनेवाले एक ब्राह्मण को कुछ नही तो कभी कभी पागल समझ कर ही स्मरण कर लेना। वह आप की गूंगी प्रजा का एक वकील है, जिसके शिक्षित होकर मुंह खोलने तक आप कुछ करना नहीं चाहते।

बमुलाजिमाने लता कै रसानद, ई दुआरा?
कि बशुक्र बादशाही जे नजर मरा गदारा!

[सन् १६०५ ई०]

———

परिहास–प्रथम

दोहाः—बहुत दिनन की आश दी, सो दिन पहुँचा आय।
हंसौ उदर पर हाथ दै, कै रोवहु मुँह वाय ॥

आर्या किस्की (किसकी) भार्य्या।

आर्य्या और उसके चार पुत्र

आर्या—हे भगवान तू क्यों मुझसे रूस रहा है कि पहिले तो मेरी इस देह द्रव्य देहली देहली को मुसलमान मूस मूस कर वैसे ही चूस लिये थे गोरे घूंस तो घुस घुस कर घूस के मिस पूस बना दिया; तो भी तू सन्तुष्ट न हो यह प्रज्वलित अग्नि सा भयानक रूस को भी ठूँस रहा है।

पहिला लड़का (ब्राह्मण, चौवे)—(नाक में एक चुटुका सुंघनी का घुसेड़ कर) अरी मैय्या! ये तू कहा वके। नाम सुनी तुलसीदासकी वा चौपाई कू,

कोउ नृप होय हमैं का हानी।
चेरि छाँड़ि नहि होइव रानी ॥

सो हमैं यासो कहा पड़ी जो रोवैं, रोवै ये पापी अमला उकील (वकील) इनके रोजगार जाइवे को डर है हमारो रोजगार तो सब गयोई है हमैं याते कहा अरे। 'चौवे पढ़े न फारसी रहै न दफ्तर संग! कृपा भई श्री कृष्ण की भर भर लोटे भंग ॥" सो राड़ भांगऊ मै तो मासूल लगाय छोड्यो, पेट भर चूटिऊ छानिवे मैं तो नाय आवै!

हमारे पुरखान ने तो यों कही किः--

"जमना मैय्या तू भागई है क्यौ नाय वही, कि जवई जी चाहतो भरि भरि लोटा पीवते," सो तो कुशल भई कि वानै नाय सुनी, नाय तो ए अंगरेजवा जमुना के पनिऊ मै टिकस लगाय छोड़ते हाय ! तबतो हम चौवे पानिऊ बिना मरते, ए जो मुसलमान वाच्छा हे सो तो काऊ को माफिऊ वाफी देईवो करै, मुसलमान कर भोतसी जागीरऊ देईवे करते ; पर ह्या तो "झूरई शख बजै मेरे हरि के दण्डवतन के ढेर" काऊ को क्रस्तानऊ कर एक बीघा पृथवीमाय देते नाय सुनी, जो काऊ सो प्रसन्नऊ भयौ तो वाय राजा बाबू कर दीनी नाय तो सितारे हिन्द को खताब दै दयो कि जो महीने मै एक खरच करत हो, बीस रूपया महीना होन लगो, सोऊ सब गहात साहवान कू डाली, और चपरासीन को इनाम देइवै मै दिवालो निकल जाय, दान धर्म्म कहूँ रह्योई नाय, चाहे रूस आहे वाको बाबा ह्यां आय कहा लेयगो ? लडुआन के ढेर थोरेई है, लडा चौवेन को है; चाहे ओऊ सारो ढसेक ले जाय और कहा करैगो, (सोच कर) अरे रे रे रे ? बूटी के तार मै ए कहा बक गयो ? कोऊ जाय वासू न कहै, नाय तो प्रानऊ जाय । चल भागू ह्या सों अब ठैरवा ठीक नाय ।। (भागा)

तीसरा लड़का (वैश्य, माड़वारी)—(नाक सकोड़ के)—कोई करू शाब ! हुराडी पुरजेरो काम कौडशी तरिया चलशी, माल तालरो ग्यान लागै कोयना दन दन शरकारी कागजरो भाव घटै छै, मन्दे भाव माय बेचणरों पड़तो परै कीयन; घर माय घाली रकम वचवारी जिठे जुगुत नायं और वातारी काई कहूं ? शुरणूं छू की रूशि यारो शानशारो लूट मार कर वांरो कायदो छै, शो म्हाणे तो देश छोड़वारों शला कियो छै, और काई करशूं । अट्ठे मरवारों शामान छै—अट्ठे ठहरे वारो मामलो ठीक कोयन; (जाता है) ।

आर्य्या (शोकातुल हो)—हे ईश्वर । तुझे क्या करण है लड़कों का यह हाल है, प्रथम तो वे स्वयम् किसी अर्थ के नही, तिस्पर मेरे दुर्भाग्य ने

उन्हे ऐसा प्रतिकूल दृश्य दिखाया कि, वे रहे सहे और भी निकम्मे बन रहे हैं। हाय मेरी रक्षा अब कौन करैगा। मै अवश्य अनाथ हूँ!

दूसरा लड़का (क्षत्री राजकुमार)—माता! आप सोच जिनि करै, आवै देयँ रूसियन कॅ आई कै काऊ कै लेडहीं? हम वो वटचै किहे, मारे तरुआरिनके ठह लगाई देवै; हिन्दुस्तान लेव कुछ खेलवार थोरै है? का जानी केतने यही में गाय बजाय जइहीं, लाखन मेहरारुन कै चूरी फुटिजाये. न दइउ करै कि उदिन आवै; नाही तौ दातन पसीना आय जाये, ईका पञ्ज देह थोरै है। ई भारत है जहां महाभारत मचलै। एक तन कै नदी बहे, तब जवन कुछ लिखा होय, तवन होयः, सहजै नाही बा।

आर्या—अरे पुत्र तू यह क्या वक्ता है, अब वह तलवार के दिन गये, वह युद्ध प्रणाली जिसे तू जानता है गई, यद्यपि उसमें भी नित्य अभ्यास की आवश्यकता है पर अब तो बन्दूक और तोप की लड़ाई है कवायद जानना एवम् वे युद्ध विद्या के नियम जो यूरप देशवासियो ने बरता है सीखने की आवश्यकता है कि जो तुम जानते भी नहीं फिर तुम लोग क्या कर सक्ते हो।

दूसरा ल०—(सिर हिला कर) अरे ई काउ कहत वाटिउ? अबही आजुई कै बात है देखऽ मिसीर में कैसन हमरे लोगउन कै बड़ाई भई? ओऊ तो हमरे देस कै मनई हॅए? फिरि देख; बलवै मँ एनही गोरन कै रामधे दाँतन चला चबवावा है। जब ऊ दिन आइ जाये; तब देख्यऽ की हमही लोग कवन तमासा देखाई थै? भाई दादै कै मान्छुअत वाटी, कि गइे-रियअन की नाही पिता मारिकै रहि जाइ कै होथै? अनी कुछ बनि परत वा? येई एक ठं जोलहये लिलही कुरती पहिर पहिर थान्हेदार होय होय नक दम लगाय दिहेनि,

तहँ को एकठें उनखुन हेरतै रहथे, चमार सारे वर्दी बान्चे घूमत बाटें, हमरे लोगन के हाथ में एकठे सुट्कुनी नाही बचै पावत। बिना कोनिऊँ ओर गडबड्हटि भए हमरे लोगउ कै के पूछै, एहीबिना भीजा सिआर भ

बाटी नाहीं तौ इन्द्री कै तृण बरोबरि नाहि सटि आवत रहे। और जब काम परिजाये तब देख्यः "कि सिर लोटैरे धरती मॅ की सिर माटी गरद मिल जाय" और नही तौ का ? तब ए लाला लूली थोरे देख परिही, जबन बस्ता लिहे कचहरिश्रा मॅ लूटत रहले। और फिर इतौ दिन दसा कै बात है नाही तौ न केव कादर है, न वीर, ओनही गड्डुल कै असवार जब जेका जेस चाहै कै देई, नाही तौ जब एई गोरा आर्यान है केव जातन रहा कि ए बादसाहत कै लेई ही फेरि देखिः इहो कबहूं जानि परत रहा कि यनहूं कै दुसरिहा केव बाय ? लेकिन आजु अगिला हहकारत चला आवत वा की नाहीं। और जवन इ कहकिऊ कि गोला गोली कै मरम तोहरे लोगन के नाहीं जानी बा तौ जब दमका केब सिखावै, तौ हम न जानी। फेर जब काम परेह तब सब जानि लेब, लारिका कॅ दूध पीवै के सिखाब कै ? फेरि येनही क के सिखायसि और हमका तौ एनहा सिखैही।

चौथा लड़का—(शूद्र बंगाली कायस्थ)—ओ बाबा ! एतो शोव शत्तो होय। मोगर ओ इग्रेज लोग तो हमारा एतेबार कोर्त्ता नेई, हम किस मफाक लेरने शोक्ता ? ओ वालेन्टीयर होना हमारा कोबूल कोरता नेई। की कोत्ते पारे बाबा अभी तो गोरीबलोग।

आर्य्या—अच्छा ! एक बेर और जाकर अपने पिता से प्रार्थना करो, कदाचित मान जायं, और मेरी ओर से भी यह निवेदन करो, कि आप इसका कुछ प्रबन्ध नहीं करते है, जब शत्रु मर्मस्थान पर अधिकार कर लेगा, तब ॥

"संदीसे भवनेतु कूप खन्नम्" कैसे ठीक होगा।

दूसरा लड़का (तीसरे से)—ले भाई तू जा, हमतौ जा थई जवन वदा होते तवन होय० कहने को "आवन मै आदर नहीं नैनन नही सनेह। तुलसी तहाँ न जाइए कंञ्चन बरसै मेंह ॥"

हम अब उहा काउ करै जाई जेका आयन विस्वासै नाहीं तव जाई कै का करी।

चौथा लड़का—आछा चोलो। हाम तो एक दाम जाकर उसे बोलेगा फिर उस्का खुशी (दोनो जाते हैं)

(उदास मन चौथे लड़के का पुनः प्रवेश)

आर्य्या (उत्कण्ठा पूर्वक)—कहो पुत्र क्या कहा ?

चौथा ल०—जोननि ! ओ क्या कोहेगा ओतो पोड़ा शूता उठता नेईं, बोहूत बात शुन बोलता क्या होय कि, इश्में नातो लेरने का काम होय। नो बन्दोवस्त कोरवार आवश्यक, किन्तु जोदि तुम नईं मानूता, बाहूत शुगाम बात हम तुमूको बोल्ता, ईस माफ़क कोरने से वो नेईं कुछ शेकेगा। तुम अपना मां शे बालो जे—जोदि उस्को आता जावां, याक टूक कपोहेर पोरदा तेआरी कोर उस्से बोले जे, इधोर ना आओ ना आओ इधोर जानना लोक वाश कोरता है। वाश छुट्टी हुआ। आर बोश ! अब शाला हामको ताकलीफ देकर जगाओ मोत ॥

आर्य्या—हाय ! क्या इन्हें भी मुहम्मदशाह की नीति भा गई ? न जाने मेरे सगही से मनुष्य बल बुद्धि विहीन क्यों हो जाता है धन्य रे दुर्भाग्य !

(शंकित हो) अरे रे रे ! एतो आया, अब क्या करूं ? कहाँ जाऊँ ? प्रिय ! प्राणनाथ। रक्षा कीजिये, रक्षा कीजिये ॥

बगाली (थर थर काँपता हुआ)—ओ बावा ! भागो भागो ! यकी काले शिपुई ना की स्वोयम जमंराज ? यखून वाश कोरा भालो नेईं, आमी तो पलावो। (भागा)

(एक काबुली गदहे का प्रवेश)

गदहा (सिर ऊँचा कर)—ओबेन ओबेन दरोमत। अम अमीरे काबल अमतां तुमरा बाई ऐ ! ओ जो तुमारा शोहार ऐ, उसे बोलाव। यकरीच इदर आता उस्का सवाब अम अपना मुलाक में रेने नईं पाता ए, अमरा दोनों तराफ़ खुशी और रंज का इतनआ बरा बआरी बोजा ऐ, कि कमार टूतना चाहता है ऐ ॥

आर्य्या (पहिचान कर धैर्य पूर्वक)—क्या कहूँ आर्य्य ओतो सोते है। सुनते ही नहीं, किस्से कहूँ ?

गदहा—नई! नई उस्को जगाओ जगाओ।

आर्य्या—जो आज्ञा (जाती है)

गदहा (स्वागत)—अअ—आआ आवा। क्या मजआ अै! क्या मजआ अै! अमको दोनो तराफ से मजा अै! "मुरदा दोजाख मे जाय, या विहिश्त में, अमको अपने अलुआंमारा से काम अै"

(एक रूसी भालू का प्रवेश)

भालू—अमीर अमीर तू अभी यौंही वेहोश खड़ा है! न तूने बीवी हिन्द का कुछ हाल कहा न पैगाम, न कोई वह कार्रवाई जिस्के लिये तू मुतअैयन किया गया था।

गदहा —हजूर! आप गत्राता क्यो अै अम साव तीक किया, बीवी इन्द को तुमको मुफात में देगा, अम लोग मुगाल अै, दगा देकर मारता ए, देको! खल-पिन्दी का दरवार मे गया, दवात खाया, नजर लाया अऊर अंगराज लोगो का मनसा हिमात देका और चल्ता वखात उनको किस माफक दुम्बा का दुम दे दिया।

भालू—अरवे, जगली, वेहूदे, गधे! यह तो कह कि वह माह पारा जादू जमाल कहाँ गई ?

गदहा—ओ तुम गत्राता क्यों अै वो अपना खसाम को लगाने गया अै॥

भालू—तब चल हम लोग भी वँही चले। जरा रंग ढग तो देखै! यहाँ क्या करेगें!

गदहा—अच्छा तो ए! (दोनो जाते है) भालू! देख देख वः जगा रही है वस यहीं चुपकेसे खड़ा होजा!

(अर्य्या एक सिह को जगाती है)

आर्य्या—प्राणनाथ! प्राणवलथ ? सिंहराज, महाराज॥ उठो। उठो यह क्या नींद है। और कैसा सोना है। अरे अब तो सचेत हो हाय हाय

क्या ही घोर निद्रा ने ग्रसा है लाख भाँति जगाने पर भी नहीं सगमगाते !

७४ (गान राग कलिंगरा ता० खिमटा)

जागो अबतो कसर रही थोरी रे ।। टेक

थकी जगाय नही जागत यह कैसी भई गति तोरी रे ।
कान पूंछ नहि नेक डुलावत सुनत कहीं नहिं मोरी रे ।।
रूसहूस मनहूँस चढ़त आवत न लखत तोहि ओरी रे ।
काल सरिस रिपु सो न करत भय ऐसी भई मति भोरी रे ।।
वैरी लेन चहत अब तो मोहि धर कर जोरा जोरी रे ।
तौहूँ नहि उठि धाय हाय लरि लेत न तासो छोरी रे ।।३ ।।
कहाँ गई वह गठरी विद्या कहां अकिल की झोरी रे ।
कहाँ गई वह कला कुशलता कहा वीरता वोरी रे ।। ४ ।।
लरिऔ उठि नाहि चलि है वह गीदड़ भभकी कोरी रे ।
कसहु कमर हित समर नहीं यह नीकी अब जिद्द थोरी रे ।
मैं तो वीर बधू हूँ कादर पिय की जात न खोरी रे ।
सुभट जानि तोहि अवहि लौ तोरी न प्रेम की डोरी रे ।। ६ ।।
आदर नहि हित को न चहत वैरिन की नाक मरोरी रे ।
सूझत नाहि कछू विधिने जनु तेरी आखॅन फोरी रे ।। ७ ।।
तेरो तो यह हाल सकल रिपु खेलत हौनिन होरी रे ।
कैसी करू' कहाँ जांउ हाय मैं दैय्या अबला गोरी रे ।।८।।

(आर्य्या जगाती है और सिंह कुछ चैतन्य हो पुनः निद्रित हो जाता है)

गदहा (भालू से)—वालो ओ । अमको मे अमारा इनाम लावो ।

भालू—अबे चुप भी रह चोट्टे जरा सुन्ने भी तो दे ।

आर्य्या—अरे फिर तुम सो चले । हाय क्या होनहार है । अरे उठकर उचित कर्तव्य का विचार करो, इन छलियो से ऐसे कैसे बचोगे,

भालू (आगे बढ़ कर)—ऐ इश्के क़मर-परी पैकर । क्या तू ने नहीं सुना है कि "सोते हुये फितने को जगाना नहीं अच्छा" उसे क्यों तू नाहक़ बेदार किया चाहती है ? आ चुपके से मिल भी जाय, उस कमबख़्त को यूहीं पड़ा रहने दे । वह तो अब जिन्दः दरगोर है ।

(आर्या नहीं सुनती है)

गदहा०—लाओ । ओ अमारा इनाम लाव ! और वैसा जागा, अम उपार से दिखलाना को उस्का तराफ जायगा ।

भालू (आर्य्या से)—अरी क्यूं नाज़नीने जोहारा जवीन ! तू मेरी बात क्यूं नहीं सुनती, हाय ! तू अपनी चश्मे नरगिसी से मुझ वेकरार आशिकेजार को क्यूं नही देखती ? अरे ! तू क्या अब भी इन शीरी लाले लबों का बोसा मुझे नहीं देना चाहती ? लिल्लाह जल्दी आकर गले से लग जा, वर्नः तेरे बिमारे मुहब्बत का आसार बुरा हुआ जाता है ॥ गो मै अल्लाह तआला की दरगाह में उस्के इसी करम का शुक्रअदा करता हूँ कि जिस नेमतेगैर मुतरक़बा के हुसूल की हसरत में मेरी कई पुश्तै मर मिटीं, और नसीब न हुई । परवर दिगार ने मुझ पर मेहबानी करके आज अता किया । मगर मै भी तेरे शर्बते दीदार का प्यासा मुद्दतो से इसी फ़िराक में चूर रहा और क्या क्या हैरानिया व जांफिशानिया उठा कर बारे अब जो मेरे एकबाल का सितारा चमका तो खुदा खुदा कर यह दीदारे फ़रहत आसार नज़र आया । पस अब क्यूं मुझे सताती हो लिल्लाह एक बोसा तो दे दो ?

आर्य्या (मूं फेर कर)—अरे मूर्ख दुष्ट । पामर पशु ! क्या बक रहा है अलक्षेन्द्र (सिकन्दर) जिस्के नाम से तेरे पूर्व पुरूषों ने अपने को पुकार कर अपने मान का हेतु माना है, वही बिचारा मेरे लिये सिर पटक

पटक कर मर गया और मैं हाथ न आई, तो तेरी भला कौन गिन्ती है असख्य सम्राट् और राज राजेश्वरों को मेरे प्रेम ने मार डाला, तेरे भी कई पुरखे मर मिटे, अब क्या तेरी भी मृत्यु कलकला रही है ! कि काल विवश कहनी अनकही बातैं बक रहा है ।

चल दूर हो दुत, दुत ॥

भालु०—ऐ हूर श्यामल । यह तू क्या कह रही है अरे !—(गाता है) ।

है जब मुद्दतो हमने दिल को जलाया ।
तब ऐ जाने मन् अब तुझे हमने पाया ॥१॥
तेरे सिर्फ मिलने हीं की जुस्तजू में ।
जहा को है अगियार हमने बनाया ॥२॥
खोदा ने किया आज है मेह हम पर ।
रकीबो को फिटकार हमने बताया ॥३॥
फंसा बस लिया शेर को मिस्ले बकरी ।
वः आलम में है जाल हमने बिछाया ॥४॥
तेरा आज तक लब रकीबो ने चूसा ।
हमारी भी बारी अब आई जो आया ॥५।
उठा ऐ भला आँख अग्रेजों अफ़गा ।
यः कैसा तेरे दिल मे जानी समाया ॥६॥
सिखाते थे जो अक्ल दुनियाँ को एक दिन ।
उन्हे आज बे अक्ल हमने बनाया ॥७॥
कमीशन को कैसा दिखाया करिश्मा ।
छका कर लमिसडन के छक्के छुड़ाया ॥८॥
उडाया निशां मर्व पर पञ्जदेह में !
जो गोला बजाया तो मोला बनाया ॥६॥

हिरात अब लिया आज कलमें फिर आगे।
बढ़ा कर कदम घरके तुझको दबाया ॥१०॥
समझ खत्म बस यार अपने को तू अब।
जो है तेज शमशीर हमने उठाया ॥११॥
अवस मत सती हो तू अब साथ इस्के।
खोदा ने जो हमसे तुझे है मिलाया ॥१२॥
अब आ पास मेरे न कर देर प्यारी।
तुझे बेच कर जान है हमने पाया ॥१३॥

गदहा—वाऊ वाऊ वाऊ वाऊ क्या बआत है। सुबहान् अल्ला:।

आर्य्या (स्वगत)—अरे यह तो धीरे धीरे रंग बे रंग झलकता चला आता है। यह अमीर भी कुछ उधर ही मिलासा जान पड़ता है। हाय! क्या मेरी भी दशा महाराणी श्री जानकी जी के तुल्य हुआ चाहती है। निश्चय यह अमीर कनक मृग सा मारीच है, और यह विचित्र भालू जो ऊपर से साधु बना है यति के वेश मे दशानन और जनरल कोमाराफ़ यवम् अलीखानाफ़ खर और दूषण और कोन जाने कि इरानाधिपति यह तृशिरा है, हाय! अब मेरे बचने की आशा नहीं।

भालू—अरे क्यूं जानी महबूबे लासानी! इस नूरानी चिहरे के दिखाने मे भी परहेज! यह बे रूखी! यह बे एतनाई? हाय गजब, यह सितम गारी। खैर जरा इधर तो आइए, फिर तो हर्चे बादा बाद (आर्य्या की ओर दौड़ता है)

आर्य्या (डरकर सिंह पर गिर कर ,—आर्य पुत्र, प्राणनाथ-रक्षा करो।

सिंह (चौंक कर)—वेल! ए क्या हुई। वाटलाव।

आर्य्या (काँपती और सिंह से लिपटी) क्या है। देखते नहीं? यह

मुझे घसीटे लिये जाया चाहता है और तुम्हें कुछ इस्का ध्यान ही नहीं ॥

[सिंह भालू को देख कर गाता है]

गजल भैरवीः—

इडर न आओ टुम अइ मीरवां सुनो टो सई । करूँ मै आल कुच कुच अपना वियां सुनो टो सई ॥१॥

मजा नई औ कुच अब इण्ड मे ज़रा बाकी । मुजेई डेडो मेरी जाने जा सुनो टो सई ॥ २ ॥

वऊटै मुल्क जेआ में टुमारा लेने को । जो एक च र हो क्या औ जिआ सुनो टो सई ॥ ३ ॥

जो पजडे को लिया टुमने टो अपने विडिया । मगर न आगे वराओ निशा सुनो टो सई ॥ ४ ॥

अलीखानफ़ो को माराफ़ को करो मौकूफ । अजीब औ ए वशर वड गुमा सुनो टो सई ॥ ५ ॥

मरूचक और किला मोर वी चए ले लो । दऔ हेराट में मेरा मकां सुनो टो सई ॥ ६ ॥

ये आं टलक वी अगर आओगे टो अरज नई । वरे जो आगे टो बसऔं जिआ सुनो टो सई ॥ ७ ॥

लराई इण्ड से जो आंक लराई ओगी । येई से खटम औसे डास्टा सुनो टो सई ॥ ८ ॥

नडी लऊ की वएगी टमाम डुनियाँ में । मिटेगा आप का नामों निशां सुनो टो सई ॥ ९ ॥

भालू—(मोछों पर ताव देकर) अजी हरत । यः डींगबाज़िया छोड़िए । और इस दिलरुबासे दूर हूजिए, नहीं तो वल्लाह तमाचे बाज़िय होगी, यः लल्लो-चप्पो जाने दो ॥

सिंह—वेल अमीर वेल अमीर।

गदहा—ओ क्या अै ओ क्या अै ?

सिंह—वेल। डेको। रोको। रोको। इस्को टुम किस वास्ते आनेडिया।

गदहा—ओ अम क्या करेगा तुम तो अमारा बात माना नईं, तुम पैलासे न तो रूपिया दिया न सामाने जङ्ग दिया, अमीर अपना सर पोरेगा। किस माफ़िक रोके, ओ अमारा काबू का नई अै टुम रोको टो रोको !

भालू—अरे यः क्या दीवानो को सी बातें करता है, वह मेरे यहाँ का नमक खारे कदीम बन्दए परवर्दः है,। फिर उस्की मजाल क्या जो इधर ताके तो सही, आखैं निकाल लूं कसम इस दिलरूबा के पापीसे शरीफ की। अब तुझे जो कुछ करना हो सो कर॥

सिह—वेल। अमटो तुम से लेरना नेईं चाटा। पर टुम ए बटाव, कि ओ कौन सा टर्कीब हुई जिस्मे लराई बण्ड हो, अल्वाट तुम जेगरडेस्टी लरेगा, टो लरेगा, वट अगर कोई वी शकूल लराई बचने का हो टो बटाओ ?

भालू—वेशक मुमकिन है कि लड़ाई न हो ? मगर शर्त यही है कि चटपट अपनी तशरीफ शरीफ को यहाँ से उठाइये, और इस माहे तमाम महबूबे गुलन्दाम से काम न रखिये॥

सिंह-(स्वगत) बलाए किस ठौर होने सेक्ता ? यः टिजारट के बहाने से लाशुमार डौलट का रोज-रोज आना, मालगुजारी, टैकूस और हरेक ठौर पे किटना रूपियः इण्डिया से आटा कि डरने को जगा नई मिल्टा, इटना बरा हुकूमट, फिर इसी का बलउलट ये शेनशाई का डावा हुई, अउर को टक कए, इसी का बउउलट अम लोग आडमी और डउलटमण्ड बना फिर किस माफक इस्को डेने शेक्ता। (प्रकाश)—ओ नई। नई। नई कबी नई होने शक्ता। टुम जिटना रूपी मागे हम अलबट देने सेक्ता, जो कुच वेइजूटी करेगा कबूल करने शेक्ता। पञ्जडे दिया, हिण्ट डेएगा अलबटा कुल अफगानिस्टान टक डे डेगा, पर नई। कबी नई इण्डिया॥

भालू—चेखुश। वाह। देखो तो लन्त रानियाँ। अरवे पजदे: तू क्या देवेगा, वोः तो हमने ले लिया, फौरन अब यहाँ से ये सुफेद मूं वाले शैतानों को भगाओ नहीं तो वल्लाह कहे देता हूँ कि चपतगाह कहाने लगेगा। और अफगानिस्तान तो गोया आप के बाबाजान का है कि जो आप दे देवैगे; बस! छोड दूर हो नही तो ले अभी देता हूँ,

(आगे बढ़ता है)

सिंह—ठैरो! ए जनानखाने मे मट ? सो, डूर से बाट करो। और ए कओ कि अमारा टुमारा फैसला किस माफ़क होगा॥

भालू—बचा मजा तो सब तुमने लेई लिया, लब चूसने के बहाने कलेजे का खून तक तो इस बिचारी का पी गया, ऐसी ऐसी तकलीफ़ दी कि वायद व शायद खाने को भी न दिया, वल्के उलटा गोश्त तक इस्का काट काट कर तू मलऊन खा गया, अब इस्की दो मुश्त सूखी हड्डियां भी हमें नही दिया चाहता है। और फैसला इस्का यही है कि आकर सामने डट जा, दो दो हाथ हमारे तेरे हो जिसे खोदा देगा वह लेगा।

सिंह [उठकर आतंक भाव से]- वेल अच्छा कुछ परवा नेई, लेकिन टुमारा सिर शामट आया हम जान्हा, नानसेन्स। रास्किल। डेको अम टुम को किस माफ़िक मजा डिकलाटा।

[दोनो रङ्ग भूमि में जाते हैं]

कजली:—

घिरी घटा सी फौज रूस मनहूस चढ़ी क्या आवै (रामा) हरि हरि खेलो कजली मिलि गोरा औ काला रे हरी टे० ॥

साफ़ करो बन्दूकै टोटा टोओ ढाल सुधारो रामा-हरि हरि धरो सान तलवार ले कर भाला रे हरी ॥१॥

ढील ढाल कपड़ा तजिकै सब पहिनो फ़ौजी कुरती रामा। हरि हरि
डीयर वा लेन्हीअर सजो रिसाला रे हरी ॥२॥

ठुनमुनिया सी खेल कवाइद करि जिय कसक मिटाओ रामा। हरि हरि
कजली लौ गाओ अब करखा आला रे हरी ॥३॥

मार मार हुंकार सोर सुर साचे अब ललकारो रामा। हरि हरि
सत्रुन के सिर उपर दै सम ताला रे हरी ॥४॥

बहुत दिनन पर ई दिन आवा देव ताव मोंछन पर रामा। हरि हरि
सुभट समर सावनवा बीतल जाला रे हरी ॥५॥

उठो उठो धाओ धरि मारो वेगि न ब्रिलम लगाओ रामा। हरि हरि
पड़ा कठिन कट्टर से अब तो पाला रे हरी ॥६॥

उठै धूम के स्याम सघन घन गरजै तोप अवाजैं रामा। हरि हरि
गिरै वज्र सम गोला बम्ब निराला रे हरी ॥७॥

झरी बूंद सी बरसाओ गोली बन्दूकन सो रामा। हरि हरि
चमकाओ चपला सी कर करवाला रे हरी ॥८॥

कहरै मोर सरिस दादुर लो विलविलायँ गिर घायल रामा। हरि हरि
विना मोल मनइनकै मूंड़ विचाला रे हरी ॥९॥

करो महाभारत भारत मैं मिलि सब भारतवासी रामा। हरि हरि
महारानी का होय बोल औ बाला रे हरी ॥१०॥

परिहास द्वितीय

[पंडित, मुन्शी और महाजन]

पं०—क्या साहुजी। बहुत दिन से कुछ दिया लिया नहीं, भला ऐसी कृपणता किस जीवन के अर्थ कर रहे हो! आजकल होलीकोत्सव में एक दिन दुधिया बूटी तो छनाओ और अच्छा भोजन तो कराओ, नहीं तो जब मुंह बाय कर मर जावगे तब यह माल जो मार-मार कर सञ्चय कर रक्खे हो सो यह बेईमानी का धन बस योंही "गजभुक्त कपित्थवत्" अनायास नाश हो जायगा कुछ धर्म भी तो चेतो।

म०—अरे महराज। पेट भर लरकन के खाये भर के तो मिलबै नाही करत, धर्म्मं करावै के सब जने कुकुर ऐसा मुंह बाये ठाढ़ रहथ्यो, और तेह पर कहथ्यो कि बेईमानी का धन और माल मार मार कर रखथ्यो, भला अपना लहना पावना तो मिलबै नाहीं करता ज्यादे केऊ का देहै, और अब जो कभू ऐसी बेकायदे बात बोलबो तो बन न पड़िए! ई बात समुझ रख्यो!

पं०—अरे क्या तुम बाव्ले बैल से बड़बड़ाने लगे? क्या बन न पड़ेगी? बन न पड़ेगी! क्या तुमसे बन पड़ी, और क्या बन पड़ेगी? परन्तु यह जाने रहना कि धर्मदण्ड, राजदण्ड और चोर, अग्नि, जल इत्यादि के मिस ईश्वरीय दण्ड है; सो पूर्व के न होने से पर कथित तो होते ही हैं। अभी तो एक पैसा देते कष्ट होता है। परन्तु एक नाव डूब

जाय वा एक गोदाम जल जाय, वा दिवाले में रकम मारी जाय, तो नाक सिकोड के सह लेवगे; नही कोई घर का प्राणी ही ढुलक जायगा तो भी थैली खुलबै करैगी, साहब कलक्टर घर डाटैगे तो गच्च से आगे रख देवगे परन्तु हमारा कहना थोड़ै मानोगे।

म०—ई तोह से के पूछथै जवन बोलथ्यो ? हम नाहीं देते, तोरे दादा का इजारा है।

पं०—हाँ। हाँ। हम जाने हैं कि जब तक न मरोगे तुम्हारे घर हमारे पैर पर पानी नही पड़ैगा, हाँ। तुम सेल्हो तो तेरही में ठीक लगै तो लगै॥

मुं० —अजी परनाम अर्ज है जी पडत जी॥

पं०—अरे क्या कहै कोरमकोर आशीर्वाद देते देते तो जिह्वा घिस गयी भला बिना चित्त प्रसन्न भये कहीं आशीष भी निकलता है इस्मे ल्यावो अब शाप ही दै चलै॥

मुं०—अरे क्यों म राज क्या कुसूर हुआ ? क्यो यह नाराज़गी है, फर्माइये तो सही !

पं०—अरे क्या व्यर्थ पूछते हो लाला ! ल्याए हो कुछ कि आशीर्वाद ही लेने आए हो, कचहरी में तो बिना हाथ गरम करवाए किसी से बोलते भी नही होगे और हम से संसार भर की व्याख्या लेव, और न लेना एक न देना दो। इतना वडा होली धा त्यौहार बीत गया, मद्य पिया, मास खाया, नाच देखा, हर तरह रूपया लुटाया परन्तु हम को साङ्ग धोंधी से प्रयोग नहीं।

मु०—अर्ज महराज ! वह जमाना आया है कि कौड़ियो के लाले पड़ रहे है। आप को नाच तमाशे की सूझी है भाई परमेश्वर की कसम। अब सरकारी नौकरी में भी कुछ मजा न रहा। क्या कहूं निहायत परीशान हूं।

[सं० १६४२ वि०]

रेलवे स्तोत्र !

हे रेल ! तेरी जय हो, जय हो और गाड़ी, इक्का, नौका, डोंगी, सब की लय हो क्षय हो ! एवंच हिंदुस्तानी राजाओ को अपने राज्य में तुम्हारे जाने से भय हो भय हो, और हमारे दुःखों का तुम्हारे कोमल पहियों की अमूल धूल सिर पर पड़ने से लय हो लय हो।

हे गरूड़ सहोदरे ! तुम भगवान की मन से भी अधिक गमन करने वाली गमन शक्ति हो, और अति सत्वरगामी काल की भी काकी हो, अतएव तुम्हें कोटि कोटि सष्टाङ्ग ।

हे धूम वाहिनी ! तुम्हारे विषय अग्नि साक्षात रुप से, वरुण जल रूप से, वायु धोंकनी रुप से, विष्णु व्यापक रूप से, लक्ष्मी खजाना स्वरूप से, इन्द्र खिड़की रुपी हजारों नेत्रों से, सूर्य सुर्ख लालटेन रुप से, चंद्रमा श्वेत लालटैन रुपसे, यमराज गार्ड रुप से, यमदूत चपरासी रुप से और भगवान सदाशिव मृत्यु को साथ लेकर गाड़ी लड़ने के समय काल रुप से निवास करते हैं, अतएव हे सर्व देवानाम्प्रिये ! हे सर्वतोभद्र चक्रे । तुम स्वर्ग, वैकुंठ, कैलास, नर्क सब की आधार हो ।

हे विश्वमोहनी ! हे मायामये ! जिस देश को तुमने अपने पतितपावन चरणारविंदों से पवित्र नहीं किया, वहाँ के लोग तुम्हारे दर्शनो के लिये देवी देव मानते, सकीर के द्वार पर धन्ना देते, हजारों रुपयो का चंदा सही करते, तब तुम्हें अपने देश में पधराय कर सफल जन्मा होते हैं । पर जब तुम वहाँ के बैपार की नफा अपनी किरणों से हर लेती, तब वहाँ के लोग तुम्हारा नाम "रेड़" रखते और "रलयो ईलयोश्चैव" इस कारिका को चरितार्थ करते अतएव तुम्हारे आदि अंत दोनों में दुःख ही दुःख है ।

हे यूरोप कलाकलानिधे ! हे मानवी कारीगरी की चरम भूते, तुम सर्ग नहीं हो, क्योंकि ब्रह्मा से तुम्हारी उत्पत्ति नही, और न रघुवंश । माघ की कोई प्रकर्ण ही हो, रहा विसर्ग सो वह भी नहीं कि क्योंकि मरीचि कश्यप आदिने तुम्हारे दर्शन भी नही किये, और द्विविन्दु (:) ऐसा आकार है, अतएव सर्ग विसर्ग रहित सच्चिदानंद स्वरूप हो ।

हे ब्रह्मादि देव दुर्लभे ! ब्रह्मा और विश्वकर्म्मा दोनों तुम्हारी अपूर्व रचना देखकर मोहित हो जाते है, और तुम्हारी कलो के कारखाने को देख अपनी कारीगरी का अभिमान छोड़ देते हैं वरंच कईबार ब्रह्मलोक में तुम्हें बनाया, पर तुम नहीं बनी, क्योकि तुम भक्त वत्सल हो इसी से कभी कभी क्रोध में आकर देवता लोग तुम्हारी लाइन के पुल पनाले बिगाड़ देते है पर तुम फिर ज्यों की त्यों, अतएव हे देव दर्प दलनी ! तुम्हारी महिमा अकथ है ।

हे सुरासुर पूजिते ! तुम असुर बंश की स्वामिनी हो, तुम्हारा सिर हवड़े मे है, तुम्हारे दोनो चरण दिल्ली आर कराची में है तुम्हारे दोनों हाथ अवध रूहेलखड रेलवे और राजपूताना रेलवे हैं तुम्हारी पुच्छ ग्रेट-इडिया पेनेन्शुला रेलवे है, और बाकी रेलावली सब तुम्हारी रोमावली है ।

तुम समग्र भारतवर्ष को दाब कर पड़ी हो, जिस दिन तुम्हें रुपये का पिण्ड न मिला कि तुमने गयासुर की तरह उठ कर हिन्दुस्तान का भक्षण किया ।

हे कटि भृकुटि रहित नकटि ! तुम्हारे आगे पीछे कहीं नाक नहीं है अतएव शूर्पणखा हो, और पूत (पवित्र) नहीं हो अतएव पूतना हो !

हे विराट रूपे ! तुम विष्णु की विराट वा विभ्राट रूप हो क्योंकि आप की तद्रूप ही लम्बी चौड़ी मूर्ति है । तुम स्वामिकार्तिक हो, क्योंकि अनेक पर्वतों वीच मे से विदारण किया है, तुम गणेश हो, क्योंकि प्रत्येक स्टेशन पर शुंडा दण्ड से जलपान करती हो, और तुम उनचास मरूत हो क्योंकि उनके समान आपकी उनचास से भी अधिक गाड़ियां एक संग गमनक रती है ।

हे अनेक रूपरूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे ; तुम सहस्त्र शीर्षा सहस्त्राक्ष और सहस्त्रपाद हो ! तुम मत्स्य हो, क्योंकि मत्स्य देश मे विद्यमान हो, तुम कच्छप हो क्योंकि तुम्हारी सड़क के नीचे सैकड़ों लोहे के कच्छप पडे हुये हैं । तुम बाराह हो क्योंकि सदैव राह के साथ चलती हो । तुम नर-सिह हो, क्योंकि तुम्हारे भीतर बैठकर नरसिह हो जाता है । तुम वामन हो क्योंकि पहिले कलकत्ते से रानीगंज तक तीन पाव बढ़ाकर अब सारे भारतवर्ष में व्याप्त हो गई ! तुम परशुराम हो, क्योंकि क्षत्रियो को निःक्षत्र कर दिया । तुम राम हो, क्योंकि सिन्धु का सेतु बाँधा । तुम कृष्ण हो क्यों कि तुम्हारी वंशी सुन कर यात्री लोग गोपियो के समान बेचैन हो जाते है । तुम बुद्ध हो, क्योकि वैदिक धर्म का नाश करने वाली हो । कल्की हो, क्योंकि कोलाहल करती हो, दूसरे कलकी हो अतएव दशाकृति कृते कृष्णाय तुभ्यनमः ।

हे माया मयि ! तुम वेग की भी जननी हो, और उद्वेग की भी जननी हो, क्योकि तुम्हारी ही कृपा से घर घर में वेग और मनीवेग दीखने लगे और तुम्हारे प्रताप से जन जन मे उद्वेग होने लगे, क्योकि तुम्हारे आने मे उद्वेग, तुम्हारे जाने में उद्वेग, टिकट लेने में उद्वेग, टिकट देने में उद्वेग उतरते उद्वेग, अतएव तुम वेगवती और उद्वेग वती को नमस्कार है ।

हे दुर्गे ! दुर्गति हरणीः ! तुम्हारे वहुत से देहाती भक्त तुम्हें दुर्गा का अवतार मानकर प्रणाम करते, अतएव "या देवी सर्वदेशेषु रेलरूपेण संथिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।

हे यूरोप कुल कमल दिवाकरे ! तुम इञ्जन सम्भूत हो अतएव स्वजातीय पक्षपात से परिपूर्ण हो, एक ही गाड़ी, एक ही समय में अंग्रेजों को स्वर्ग और हिन्दुस्तानियों को नरक है । अतएव "अत्रैव नरकः स्वर्गः" यह नास्तिकों का वाक्य है आज तुम्हारे विषय में ही चरितार्थ हुआ ।

(सन् १८८३ ई०)

वैद्यराज स्तवराज

हे वैद्यराज अथवा बैलराज ! आप को नमस्कार। खाली नमस्कार ही नहीं, एक रुपया पुरस्कार भी। फिर पुरस्कार ही नहीं, तिरस्कार भी ? क्योंकि वैद्यराज ! नमस्तेऽस्तु यमराज सहोदरः। यमस्तुहरते प्राणाम् वैद्यः प्राणाश्चनानिचः !"

हे भिषक चक्रचूड़ामणि ! आप हम से वक्र न हो ! शक्र ने एक बार आप का भाग बन्द कर दिया था, आप ने उसके हस्त का स्तम्भन कर दिया। अतएव हमे डर लगता है कि कही आप हमारी वाणी का भी स्तम्भन न कर दे। क्योकि "मूकं करोतिवाचाल प ंगु लंघयते गिरीम् यत् कृपातमहम्वन्दे वैद्यराज म्महाखलम्।"

हे चिकित्सा शास्त्र चतुर ! आप से सुर कहे वा असुर ! सर इसलिये कि आप के आचार्य अश्विनी कुमार है। असर इसलिये कि आपने हजारो मनुष्य मार कर यह पद पाया। प्रमाण "शतमारी भवेद् वैद्य : सहस्रमारी चिकित्सकः। लक्षमारी भिषक्ज्ञेयः कोटि मारी तु वैद्यराट !"

हे कविराज महाराज ! आप की कहां तक स्तुति करें ? कविता मे आप को काला अक्षर भैंस बराबर, अलङ्कार में आप का विचार मूढ, लक्षणा व्यञ्जना आप ने स्वप्न में भी नहीं सुनीं, पर आप कविराज ! जैसे सिंह जबर्दस्ती वनराज ! मेरी बुद्धि मे आप के इस नाम में लेख दोष हुआ, वस्तुतः आप का नाम कपिराज वा कलिराज है। क्यों कि तुलसीदास

जी ने कहा है "कवीश्वर कपीश्वरौ।" हे सर्व रोगापहा॰ी ! हमारी कलम विचारी आप के गुणगान में हारी क्या झखमारी ? वेद, पुराण, रामायण, महाभारत, श्रुति स्मृति सब आप की स्तुति से भरे है। वेद में आप का आयुर्वेद जागरूक है। पुराणो में इन्द्र के साथ अश्विनी कुमार की धूर्तता बारम्बार विदित ! रामायण में सुषेण वैद्य की कथा प्रसिद्ध, भारत में आप का नाम लिखित, श्रुति में सुश्रुत, स्मृति में आप श्राद्ध से वर्जित, अतएव हम उच्चैः स्वर से पुकार कर कहते है कि "औषधिर्जान्हवी तोयम् वैद्योनारायणो हरिः"

हे धन्वन्तरि सम्प्रदाय प्रवर्त्तक ! आप की गोवर गणेशता आदि से ही वर्णित है। क्योकि जिस समय धन्वन्तरि समुद्र से अमृत लेकर निकले उस समय असुरो ने आप से जबर्दस्ती अमृत छीन लिया। और आप को सफ़ा कठमुंहरा बना दिया। ऐसे ही इस समय भी बहुत से धूर्त आप से औषधि लेकर दाम के नाम तिलाञ्जलि देते है। तब आप औषधि के बदले अपने नाम से काम लेते हैं। जैसा कहा है, "धन्वन्तरिश्च भगवा-नवतीर्य्य लोके नाम्ना नृणा पुरू रुजां रुज आशुहन्ति।"

हे अश्विनी कुमार कुमार ! जगत् के सब अश्व आप के भाई बन्द है पर खेद कि वह कैसा कष्ट पाते, और आप कैसा मजा उड़ाते। आप उनसे सहानुभूति तक प्रकाश नही करते। इसी से आप की पूँछ नहीं रही। तथापि (बिनापूँछ भी) आप उन मे गिने जाते है, क्योंकि "नहि भिन्नपुच्छोऽश्वगद्दभो भवति।"

हे दिवोदासोपहास ! जिस समय दिवोदास ने पृथ्वी पर राज्य किया था, उस समय बड़ा काल पड़ा ! ईश्वर ने बड़ी कृपा की कि इस समय कोई वैद्यराज नहीं, यदि होता, तो अब भी काल पड़ता क्योंकि "यत्रवैद्यस्त अकालः इत्यनुमानात्।"

हे लोलिम्बराज युवरा॰ ! लोलिम्बराज आप भी बड़े रसिक थे, और उनकी वैद्यरानी भी बड़ी रसिका थीं। जो उन्होंने औषधि के साथ कोक-

शास्त्र भी उन्हें पढ़ा दिया, ऐसा कभी कभी आप भी किसी रण्डी मुण्डी की दवा करते उसे कोकशास्त्र का क्वाथ पिला देते, पर उतनी रसिकता और काव्यप्रियता आपके दल में नही। इसी से लोलिम्बराज का यह श्लोक सत्य है कि—

"येषान्न चेतो ललनासुलग्नम्मग्न न्न साहित्य सुधा समुद्रे शास्यन्ति किन्ते मम हा प्रयासानन्वाः यथा वारवधू विलासन्।"

हे चरक सुश्रुत वाग्भट्ट भाव मिश्रादि गद्दी नशीन! आपके पूर्वाचार्य्य जो कुछ लिख गये थे, वह सब आप लोगो ने नाश कर दिया वरञ्च उनका नाम ले लेकर अपनी मूर्खता से उन्हें दोष दिलाते है। अतएव कृपा करें तो बड़ा अच्छा हो, उनके सब ग्रन्थ गंगा जी मे डाल दीजिये। क्योंकि ग्रंन्थों के पढ़ने और पढ़ाने की तो आप लोगो ने शपथ खा ली है। हा! ऐसा उत्तम शास्त्र और उसकी ऐसी अधम दशा! हा—

"स्वरस्वती ज्ञान खले यथा सती" "अपात्रे निष्फला विद्या" "किन्नारिकेलिफलमाप्य कपिः करोति।"

हे आयुर्वेद वर्द्धक! आपको वेद के सब अगो मे अभ्यास रखना उचित था पर आपको 'क ख ग घ' के सिवाय आगे क़सम है। शिक्षा आपके भयसे गली गली भिक्षा मागती है, कल्प का आपने काया कल्प कर दिया।

निरूक्त को बन्धन से मुक्त कर दिया, छन्द आपके आगे स्वच्छन्द है, ज्योतिष को विष दे दिया, और व्याकरण को तो आपने हाथ पैर तोड, मुंह मरोड, लज्जा छोड, ऐसी दुर्गति से मारा कि जैसे यज्ञ के पशु को मारते हैं। अतएव वैयाकरण भी आपसे बदला लेते हैं कि अशुद्ध शब्दों के कबूतरों के यूथ के यूथ आपके मुंह में भर देते। कहा भी है—

"नटभट गणक चिकित्सकानाम्मुख विवराणि यदि नस्युः।
वैयाकरण किराता दुच्छिन्ना शुद्ध शब्द मृगाः कयान्ति?"

हे स्वार्थ परायण ! आप समझते है कि वैद्य विद्या सर्वोत्तम है, पर शास्त्र कहता है इसके बराबर कोई अधम नही यथा "उत्तमा वैदिकी विद्या, काव्य विद्या तु मध्यमा। अधमा ज्यौतिषी विद्या, वैद्य विद्याधमाधमा।"

हे सर्व सुलभ विद्यानिधान ! आपके बराबर कोई भाग्यवान् नहीं आपकी दूकान आठ आने के अमृतसागर और चार आने की दवाओं में चलती है। इसीसे किसी कवि ने कहा है—

"यस्य च वा मूलं येन केन च वा सह।
यस्मै कस्मै प्रदातव्यं यद्वातद्वा भविष्यति ॥"

हे सर्वौषधि, महौषधि, वनौषधि, गृहौषधि, दिव्यौषधि सागर ! आपकी जिह्वा में, हस्त में, चरण में, कटि में, कर्ण में, बटुए मे, बक्स मे, आलमारी में सब रोगो की सब समय, सब औषधि विद्यमान रहती है। जो चाहे सो ले लीजिए। यदि कुछ भी आपके पास न हो, शरीर का मैल ही छुटा कर दे देने से रोगी का मनोर्थ सिद्ध हो जाय इसी से लिखा है—

"गुरोरधीताखिल वैद्य विद्यः पीयूषपाणिः कुशल क्रियासु।
गत स्पृहो धैर्य्यधरः कृपालुः शुद्धोधिकारीभिषगीदृशः स्यात्।"

हे भूत, भविष्य, वर्त्तमान त्रिकालज्ञ ! आप रोगी के तीनों कालों के ज्ञाता है। चाहें घोड़े का जीन खाया ही क्यों न बतला दें। पर रोगी और उसके घर के लोग आप की वाणी सत्यात् सत्य वेद तुल्य मानते हैं। अतएव जो आप की बात को नहीं विश्वास करता, "स साधुभिर्वहिष्कार्यो नास्तिको वैद्यनिन्दकः।"

हे विश्वकर्मा ! अच्छे भले को ज्वर बतलाना, ज्वर को जीर्ण ज्वर बतलाना, जीर्ण ज्वर को सन्निपात बतलाना, सन्निपात को मृत्यु बतलाना, दो कौड़ी की पीपल सोंठ की गोली को दो रुपये का रामबाण बतलाना, घिसी पिसी सेतखड़ी हिरमिच को चन्द्रोदय, मकरध्वज बतलाना, प्रारब्ध से अच्छे हुए को अपनी कीर्ति बतलाना इत्यादि आप के अनेक कर्म्म है। उनकी कहाँ तक गणना करें, "लीला दुर्ललिताद्भुत व्यसनिने कृष्णायतुभ्यन्नमः।"

हे वज्र हृदय ! आप आर्त्त, महार्त्त, गदात, क्षुधार्त्त, लोकार्त्त, सब से अपनी धर्माधर्म दक्षिणा वसूल कर लेते है तब उनकी औषधि करते है, अतएव आप का मूलमंत्र है कि—

"टका हर्त्ता टका कर्त्ता, टका मोक्ष प्रदायकाः
टकाः सर्वत्र पूज्यन्ते बिन टका टकटकायते।"

हे प्रारब्ध भोग ! आप मनुष्य का मरे पीछे भी सग नहीं छोड़ते ! दवा के दाम, दाम, दाम, छदाम तक ले लेते। चिता तक मे रोगी का पीछा नहीं छोडते उक्तंश्चः—

"चिताम्प्रज्वलितान्दृष्ट्वा वैद्यो विस्मय मागतः।
नाहंगतो न में भ्राता कस्येद हस्तलाघवम्।"

हे विषम परिणाम ! यदिच आप का आदि अच्छा है, पर अत आपका बहुत बुरा है। क्योंकि—

"आदौ तु पितृवद्ज्ञेयो मध्यकाले तु भ्रातृवत्।
शेषकाले मित्रवत् स्यात् स्नानकाले तु शत्रुवत्।"

हे बहुरूप धारी ! कभी आप वैद्य, कभी डाक्टर; कभी हकीम, कभी होमियोपैथिक, कभी सथिया कभी श्याना, कभी ज्योतिषी, कभी सिद्ध, कभी पंण्डित, कभी धूर्त, आप अवसरपर सब कुछ बन जाते हो। इसी से आपका यथार्थ तत्व नही मालूम पडता कि आप कौन हैं जो हो हम तो आप को भय का पिता, भानुमती का भाई, और बाजीगर का बाप जानते है आप से क्या माया करे ?

"उपाध्याये नटे बैद्ये कुट्टिन्यामथ लम्पटे।
माया तत्र न कर्त्तव्या मायातैरेव निर्मिता।"

हे भाग्यशाली ! जब कभी देश में बिमारी पड़ती है तब सर्वत्र शोक पर आपके घर उन दिनों ही गुलछर्रें उड़ाते हैं इसी से आप यमराज के एजेन्ट है। "यमः स्वभार म्विन्यस्य त्वयि शेते महासुखी।"

हे भारत भूमि भाग्योदय ! जैसे भारत के नाश करने को और अनेक उपाय भगवान् ने रचे हैं उनमें एक आपभी हैं आप का चक्र हजारों मनुष्य नित्य मारता है अतएव आप "मृत्युधावति पञ्चमः।"

हे सर्व दण्ड विमुक्त ! लेजिस्लेटिव् कौंसिल, सब के लिये [illegible] पास करती है पर आपसे वह भी डरती है, अतएव हम तो [illegible] है, एक गोली में तड़ाका । [illegible] कहा [illegible]

परिशिष्ट—१

पं० राधाचरण गोस्वामी

आप का जन्म वृन्दावन में ता० २५ फरवरी सन् १८५६ को हुआ था। आप के पिता का शुभ नाम गोस्वामी गल्लू जी उपनाम गुणमंजरी-दास था। ये स्वय विद्वान् कवि थे। बाल्यकाल में ही पं०राधाचरण की माता का देहान्त हो गया। उस समय आप संस्कृत का अध्ययन कर रहे थे। कुछ समय में अंग्रेजी भाषा के भी अच्छे जानकार हो गये। आप ने ' कविकुल कौमुदी" नाम की एक सभा खोली। भारतेन्दु के विचारों से प्रभावित हो कर तथा देशोद्धार की भावना लेकर "भारतेन्दु पत्रिका" सं० १९३७ के लगभग निकाली। गद्य पद्य की अनेक कृतिया तैय्यार किया। कई बग भाषा की पुस्तक का हिन्दी मे अनुवाद किया। आप की रच-नाएँ हैः—१ श्रीदामा नाटक, २ सती चन्द्रावली, ३ अमर सिह राठौर नाटक, ४ तन-मन-धन गोसाईं जी के अर्पण नामक प्रहसन।

गोस्वामी जी के तीन उपन्यास जावित्री, विधवा विपत्ति और सौदामिनी है।

राधारमणी वैष्णव संप्रदाय पर लिखी पुस्तके जैसेः—"पतित पावन श्रीगौराग" छोटी सी जीवनी, "शिक्षामृत", "श्री वैष्णव बोधिनी" इत्यादि हैं।

मेघदूत की तरह "दामिनी-दूतिका", तथा अन्य पुस्तक "विदेशयात्रा-बिचार और विधवा-विवाह-विरण" इत्यादि ग्रन्थ लिखा। आपका देहान्त दिसम्बर सन् १९२५ ई० में हुआ।

———

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र

बाबू हरिश्चन्द्र का जन्म संवत् १६०७ भाद्रपद शुक्ल ५ को काशी के प्रतिष्ठित अग्रवाल कुल में हुआ था। आप के पिता बाबू गोपालदास जी ब्रजभाषा के अच्छे कवि थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र बचपन से ही साहित्य की ओर अग्रसर हुए। आपने केवल पैंतीस वर्ष की अल्प अवस्था में ही ईश्वर-प्रदत्त बहुमुखी प्रतिभा के कारण हिन्दी साहित्य को विविध विषयों से सपन्न बनाया। आप के समय में साहित्य की बहुमुखी उन्नति हुई। सत्रह वर्ष की अवस्था में "कवि-वचन-सुधा" [१८६८ ई०] नामक पत्रिका निकाल। कुछ समय बाद १८७३ई० मे काशी से "हरिश्चन्द्र मैगज़ीन" निकाली जिसका नाम कुछ काल बाद परिवर्तित कर "हरिश्चन्द्र चन्द्रिका" रख दिया। भारतेन्दु ने स्त्री शिक्षा के लिये "बाला बोधनी" पत्रिका संवत् १६३१ में निकाली।

प्रतिभाशाली रचनाकार भारतेन्दु ने अपने काव्य ग्रंथो में अनूठापन भर दिया। घायल घनानन्द के विरहकी झलक, सूर, पद्माकर, सेनापति, केशव मतिराम, ठाकुर इत्यादि के कविताओ की छाप इनके काव्य ग्रन्थों पर पड़ी। आशु कवि ने हजारा समस्यापूर्ति की। इनके निबन्धों मे रुचि, विचार, भाव और व्यक्तित्व की झलक हर स्थान पर दृष्टिगोचर होती है। कुछ निबन्ध शुद्ध अनुरञ्जन के लिये लिखे गये, जिनके बीच बीच में व्यंग, हास का सुन्दर पुट पाया जाता है।

भारतेन्दु ने प्रकृति का यथा तथ्य वर्णन किया। भारतेन्दु की रचनाओं का संग्रह "भारतेन्दु ग्रन्थावली" नामक पुस्तक में हुआ जो तीन खण्डों में नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हुई है।

पं० बालकृष्ण भट्ट

आप का जन्म सं० १६०१ वि० मे प्रयाग के प्रतिष्ठित मालवीय कुल में हुआ था। पं० बालकृष्ण भट्ट भारतेन्दु के समकालीन थे। इनके निबन्ध "कविवचन सुधा" मे समय समय पर निकलते रहे। आपने सं० १६३३ में "हिन्दी प्रदीप" पत्र निकाला।

भट्ट जी संस्कृत साहित्य के अच्छे ज्ञाता थे। अतः आप का मासिकपत्र प्राचीन धार्मिक पुस्तकों का समालोचना, ऐतिहासिक और भूगोल सम्बन्धी जानकारी, साहित्यिक निबन्ध, कविता, नाटक, प्रहसन और उपन्यास इत्यादि से परिपूर्ण रहता था। इसमे अधिकतर भट्ट जी के ही निबन्ध होते थे। आपने विषम परिस्थियों का सामना करते हुये, कठिन परिश्रम से हजारों निबन्ध लिखा। आप अपने युग के प्रगतिशील विचारवान लेखक थे। आपने मध्यम मार्ग का अनुसरण किया जैसे बाल विवाह का विरोध किया पर विधवा विवाह नहा चाहते थे। उस युग के लेखको में समाज सुधार की भावना भरी थी। भट्टजी ने मिथ्या चरण और बाह्य ढकोसलों का कड़ा विरोध किया। आप के साहित्यिक निबन्ध प्रचुरमात्रा मे हैं। दर्जनों निबन्ध मनोविकारों से सम्बन्ध रखते है।

भट्ट जी ने "संयोगिता स्वयंवर' नाटक का समालाचना की, अन्य पुस्तकें लिखी जैसे रेल का विकट खेल, बाल विवाह नाटक, सौ अजान एक सुजान, नूतन ब्रह्मचारी, कलिराज की सभा तथा चन्द्रसेन नाटक इत्यादि इत्यादि।

आप के निबन्धों का सग्रह "साहित्य सुमन" तथा भट्ट जी के भावात्मक निबन्ध "भट्ट निबन्ध-माला" नाम से प्रकाशित हुए है। आपका स्वर्गवास स० १६७१ वि० में हुआ।

पं० प्रतापनारायण मिश्र

आप कानपुर के निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। आप का जन्म सं० १९१३ वि० हुआ था। ये मनमौजी जीव थे। आपने बिना विषय के निबन्ध भी लिख डाले हैं कोई प्रसङ्ग न भी रहने पर बाल की खाल निकालते तथा उदाहरण दे कर किसी बात को हास्य और विनोद से भर देते थे। मिश्र जी किसी वस्तु को लिखने में तनिक भी संकोच नहीं करते थे। इनके निबन्धो में अनेक विचार भरे हैं। और उस युग के अनुसार मिश्र जी का नाम प्रगतिशील लेखकोमें है। स्वदेशचिन्ता, गोरक्षा इत्यादि विषयों पर इनके निबन्ध अपनी अटपटी भाषा के साथ "ब्राह्मण' पत्रिका में दिखलाई पड़ते हैं जिसका संम्पादन पंडित जी अपने व्यक्तित्व के सहारे करते रहे। आप का फक्कड़पन, निर्भीकता और आत्मीयता व्यक्त करने वाली शैली सर्वत्र रचनाओ मे दिखलाई पड़ती है। प्रतापनारायण मिश्र ने कुछ बाबू बंकिमचन्द्र के उपन्यास हिन्दी में अनुवादित किया जैसे "इन्दिरा" "राजसिह" "राधारानी"। मिश्र जी ने कुछ नाटक और प्रहसन भी लिखे जिनमे कलि कौतुक [रूपक], भारत-दुर्दशा, हठी हम्मीर गोसकट कलिप्रभाव [नाटक] जुआरी-खुआरी (प्रहसन) प्रमुख हैं।

शैव सर्वस्व (धार्मिक), प्रेम पुष्पावली, मन की लहर, प्रताप सग्रह, मानस विनोद इत्यादि अनेक पुस्तके भी लिखीं।

मिश्र जी में आत्मश्लाघा अधिक थी। एक बार भारतेन्दु जी ने इनकी रचना को देख सुन्दर समालोचना की, तब से भारतेन्दु के आप अनन्य भक्त हो गये। भारतेन्दु के निधन हो जाने के बाद मिश्र जी की एक शोकपूर्ण कविता पत्रिका में प्रकाशित हुई थी।

बुढ़ापा, गोरक्षा, हिन्दी की हिमायत, हरगङ्गा, तृप्यंताम् इत्यादि कविताएँ आप की प्रसिद्ध है। कानपुर के "रसिक समाज" में बैठ कर सुन्दर समस्यापूर्तियों और श्रृङ्गारिक कविताओं को सुनाया करते थे। आप एक अच्छे लावनीबाज़ भी थे। आपके आनन्दवादी व्यक्तित्व को हिन्दी साहित्य के प्रेमी कभी भूल नही सकते। आपकी मृत्यु सं० १६५१ वि० में हुई।

बाबू बालमुकुंद गुप्त

आप का जन्म पंजाब के रोहतक जिले के गुरमानी ग्राम में सं० १९२२ मे हुआ था। पहले आप बहुत दिनो त० उर्दू में ही लिखते रहे। इसके बाद हिन्दी जगत में आकर योग्य सम्पादक कहलाये। कलकत्ते में आप "बंगवासी" और "भारतमित्र" के सम्पादक थे। अपने सम्पादन काल मे अनेक अच्छे-अच्छे निबध लिखे जिसका संग्रह "गुप्त निबन्धा-वली" नाम से हो गया है। आपने अनेक विषयो पर सुन्दर आलोचना की। भारत की दयनीय दशा तथा राजनीतिक द्वन्दो को देख कर अनेक सुन्दर व्यग पूर्ण प्रबंध लिखे। आप सब विषयो पर हास्य का सुन्दर आवरण चढ़ा देते थे। व्यंग और विनोद की लपेट मे सब कुछ कह जाते थे। आप के प्रसिद्ध मनोरंजक प्रबन्ध "शिवशंभु का चिट्ठा" मे से एक उद्धरण दिया जाता है जो कि व्यंगात्मक शैली से परिपूर्ण है।

"भंग छान कर महाराज जी ने खटिया पर लम्बी तानी और कुछ काल सुषुप्ति के आनंद मे निमग्न रहे × × × हाथ पाँव सुख में पर विचार के घोड़ों को विश्राम न था। वह ओलों की चोट से बाजुओं को बचाता हुआ परियो की तरह इधर-उधर उड़ रहा था।

गुलाबी नशे में विचारों का तार बँधा कि बड़े लाट फुरती से अपने कोठी में घुस गए होंगे। और दूसरे अमीर भी अपने-अपने घरों में चले गए होंगे। पर वह चील कहाँ गई होगी? × × × × हाँ! शिवशंभु को इन पक्षियों की चिंता है पर वह यह नही जानता कि इन अभ्रस्पर्शी अट्टालिकाओं से परिपूरित महानगर में सहस्रों अभागे रात बिताने को झोपडी भी नहीं रखते।"

आपकी मृत्यु सं० १९६४ में हुई।

—×—

श्रीबद्रीनारायण चौधरी "प्रेमघन"

प्रेमघन जी का जन्म दत्तापुर (मिर्जापुर) में भाद्रपद कृष्ण ६ सं० १६१२ बि० में हुआ था। आप के पिता पं० गुरूचरण लाल जी उपाध्याय संस्कृत साहित्य के अच्छे विद्वान् थे! प्रेमघन जी को अंग्रेजी, फारसी, संस्कृत की शिक्षा मिली! बाल्यकाल से ही आप का अनुराग संगीत और साहित्य की ओर रहा! आप की कवितायें पहिले "कविबचन-सुधा" मे प्रकाशित होती रही। बाद में आप ने स्वतः सं० १६३८ मे "आनन्द कादंबिनी" पत्रिका मिर्जापुर से निकाला। अपनी पत्रिका को प्रेमघन जी अधिकतर अपने ही विचारो और भावो से रंग देते थे! अपनी सुन्दर लेखनी की नोक से उन्होंने कलात्मक ढंग से अपने निबंधो की रचना की। साधारण से साधारण बात को वे इस प्रकार सुन्दर ढग और अलंकारो से चमत्कृत हो जाते थे! आपके निबधो मे कही भी उतावलापन नही दिखलाई पड़ता। वे अत्यन्त परिपक्व और परिमाजित होते थे। अन्त मे उनका एक साप्ताहिक पत्र "नागरी-नीरद" सं० १६४६ में निकलना आरंभ हुआ।

आप की पद्यात्मक रचनाएँ "प्रेमघन-सर्वस्व" प्रथम भाग मे छप चुकी है।

इन्होंने चार रूपक भी लिखे! १—भारत सौभाग्य (अधूरा) २—प्रयाग रामागमन, ३—वृद्धविलाप, ४-वारागना रहस्य (अधूरा)! चौधुरी जी ने हिन्दी में सर्वप्रथम बाबू गदाधर सिह की "बंगविजेता" अनुवादित ग्रन्थ तथा लाला श्री निवास के "संयोगिता स्वयंबर" की कटु समालोचना लिखी। आप की बहुत सी रचनाएं अभी तक पुस्तक रूप मे हिन्दी पाठकों के समक्ष नहीं आई! आप का देहावसान सं० १६७६ वि० मे हुआ।

—x—

परिशिष्ट—२

क्रम	निबन्ध	प्रकाशनतिथि	पत्र या ग्रंथ
१	मूषक स्तोत्र	२२ नवम्बर १८८५ ई०	भारतेन्दु मासिक पत्र
२	नापित स्तोत्र	आषाढ़ सं० १६३६ वि०	क्षत्रिय पत्रिका
३	कङ्कड स्तोत्र	सन् १८८२ ई०	स्तोत्रपंचरत्न (खड्ग विलास) प्रेस पटना
४	मिस्टर बूट	सन् १८८४ ई०	भारतेन्दु पत्रिका
५	अथमदिरास्तवराज	सन् १८८२ ई०	स्तोत्र पञ्चरत्न
६	स्त्री सेवा पद्धति	सन् १८८२ ई०	स्तोत्र पञ्चरत्न
७	अगरेजस्तोत्र लिख्यते	सन् १८८२ ई०	स्तोत्र पञ्चरत्न
८	पाँचवे पैगम्बर	१५ दिसम्बर १८७३ ई०	हरिश्चन्द्र मैगज़ीन
९	सबैजात गोपाल की	६ नवम्बर १८७३ ई०	हरिश्चन्द्र मैगज़ीन
१०	बधूस्तवराज	जून १९०६ ई०	हिंदी प्रदीप तथा भट्ट-निबन्धावली (ना. प्र. स०)
११	पत्नीस्तव	मार्च १९०४ ई०	,, ,,
१२	कौआपरी और आशिकतन	अप्रैल १८६८ ई०	,, ,,
१३	मेला ठेला	२८ जून १८८५ ई०	भारतेन्दु पत्रिका
१४	प्रेरित पत्र	सन् १९०४ ई०	हिंदी प्रदीप
१५	पञ्च महाराज	सन् १९०३ ई०	हिन्दी प्रदीप
१६	रङ्गीला दृश्य	सन् १९०१ ई०	हिन्दी प्रदीप
१७	दो चण्घड़ों की बातचीत	अक्टूबर १९०५ ई०	हिन्दी प्रदीप
१८	वाजिद अलीशाह		ब्राह्मण पत्रिका तथा प्रताप निकुंज

१६ कलिकोष		ब्राह्मण पत्रिका तथा प्रताप निकुंज
२० होली है		ब्राह्मण पत्रिका तथा प्रताप निकुंज
२१ मेले का ऊँट	१२ जून १६०१ ई०	शिवशम्भू का चिट्ठा, भारत मित्र
२२ मनुष्य गणना	६ मार्च १६०१ ई०	भारत मित्र
२३ एक दुराशा	१८ मार्च १६०५ ई०	भारत मित्र
२४ परिहास-प्रथम	श्रावण सं० १६४२ वि०	आनन्दकादम्बिनी
२५ परिहास-द्वितीय	फाल्गुन-चैत १६४२ वि०	,,
२६ रेलवे स्तोत्र	१८ अगस्त १८८२ ई०	भारतेन्दु पत्रिका
२८ वैद्यराज स्तवराज	२३ अक्टूबर १८८५ ई०	भारतेन्दु पत्रिका